सकारात्मक स्पंदन - पुष्टि – जीवन



"VIBRANT PUSHTI "

कितनी प्रकार की जातियां

कितनी प्रकार की मान्यता

कितनी प्रकार की वैचारिकता

कितनी प्रकार की कार्यदक्षता

कितनी प्रकार की स्वीकृतियां

कितनी प्रकार की शैलियां

कितनी प्रकार की विविधता

कितनी प्रकार की भिन्नता

कितनी प्रकार की अपनायीता

कितनी प्रकार की ज्ञानता

कितनी प्रकार की अज्ञानता

कितनी प्रकार की मार्गदर्शनता

कितनी प्रकार की वैविध्यता

कितनी प्रकार की अनित्यता

कितनी प्रकार की नितीयां

कितनी प्रकार की निधियां

कितनी प्रकार की व्याख्या

कितनी प्रकार की अर्थता

कितनी प्रकार की आद्रता

कितनी प्रकार की विश्वनीयता

कितनी प्रकार की कहानियां

कितनी प्रकार की सार्थकता

कितनी प्रकार की यथार्थता

कितनी प्रकार की सफलता

कितनी प्रकार की शिक्षता

कितनी प्रकार की साक्षरता

कितनी प्रकार की दर्शता

कितनी प्रकार की मानवता

कितनी प्रकार की दक्षता

कितनी प्रकार की धर्मता

ओहह! ऐसे कितनी प्रकार की नियंता

बस जब तक सांस है तब तक सहराना

बस जब तक जीवन है तब तक निभाना

चल बसना नही ठहरना

यूं ही सब छोड के कहीं

प्रकार प्रकार प्रकार की जाल

बिखर जाना कहीं ओर कहीं ओर

है ऐसे कहीं संस्कार

है ऐसे कहीं सिद्धांत

है ऐसे कहीं निश्चय

है ऐसे कहीं मार्ग

जिससे न उठे प्रकार

केवल जागे एकाकार

जागे एक रणकार

जागे एक अवतार

जो जीवन आनंद भरे

जो जीवन विश्वास भरे

जो जीवन धर्म धरे

जो जीवन यथार्थ करे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कान्हा तेरी तरस है

कान्हा तेरी तडप है

जहां जहां देखुं लीला तेरी

जहां जहां निहालु मुखडा तोरी

कैसे मिटाऊं प्यास मोरी

तु ही नदियां

तु ही सागर

तु ही बादल

तु ही बरसात

कैसे स्पर्शु प्रेम धारा तोरी

तु ही अग्नि

तु ही सूरज

तु ही चंद्र

तु ही विरहाग्नि

कैसे छूऐ प्रेम ज्योत तोरी

तरस तरस से जनम जनम तरसी

तडप तडप से जीवन जीवन तडपी

एक ही मार्ग जो तुने जगाई

तु ही स्पर्श ले यह आत्म तोरी

तु ही बस ले यह मन प्रीत धारी

तु ही रंग दे यह काया संग तोरी

मिट जाये हर प्यास मोरी

हे कान्हा!🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नूतन वर्ष

नूतन सूरज

नूतन प्रकृति

नूतन दिन

नूतन आगमन

नूतन उर्जा

नूतन संचार

नूतन संकेत

नूतन सांसें

नूतन तत्व

नूतन संकल्प

नूतन आश

नूतन जीवन

नूतन रक्षण

नूतन शैली

नूतन धर्म

नूतन कर्म

नूतन पुरुषार्थ

नूतन प्रेम

नूतन तनुनवत्व

नूतन एकात्म

नूतन परमात्मा

हे प्रभु! हमें सदा नूतन प्रदान हो ऐसी प्रार्थना🌷🙏🌷

हिंदु नूतन वर्ष का अभिनंदन 🌷🙏🌷👍

हिंदु नूतन वर्ष की आरोग्य सुखाकरं अभ्यर्थना 🌷🙏🌷

हिंदु नूतन वर्ष की शुभकामनाएं🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चैत्र नवरात्रि "

हम समझते है माताजी की आराधना पूजा और हवन अध्ययन करना है, गहराई से और वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से समझा जाय तो यह दिन और रात्री हर जीव के लिए अति औषधि युक्त और आध्यात्मिक शिक्षात्मक और शुद्ध धर्म रक्षक है।

सूर्य को उगते ही हमें अलग सा अनुभव होता है - अर्थात सूर्य के किरणों से स्पर्शती उर्जा हमें नवपल्लवती करती है।

दिन के हर प्रहर हमें आध्यात्मिक प्रवृत्ति की ओर आकर्षता है - नयन, मन, तन और काल का चक्र हमें एकांत, योग्य विचार धारा में खिंचते है।

जहां भी नजर पहुंचे सकारात्मकता ही उठती है

मन जहां जहां पहुंचे नकारात्मकता के लिए घिन्नता अनुभवता है

तन सेवा पूजा यज्ञ के पुरुषार्थ के लिए लालायित होता है

काल अपनी गति में समांतरता भरता हुआ हर जीव का हित जगाता है

रात्रि - निरवता, निर्विघ्नता और हर प्रहर में शांतता, मौनता, पवित्रता और एकाग्रता से ब्रह्म मुहूर्त तक हर जीव को आनंदमय करने टहलती रहती है।

कितनी मधुर है यह नवरात्रि 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



आपने हमें कहा

आपने मुझे कहा

संभल जाओ

सुधर जाओ

जाग जाओ

समझ पाओ

हमने आपको कहा

मैंने आपको कहा

संभलो

सुधरो

जागो

समझो

अपनाओ

हर हर एक को कहे और कहते रहे

समय अनुसार

परिस्थिति अनुसार

कार्य शैली अनुसार

विचार धारा अनुसार

स्वभाव अनुसार

फल अनुसार

प्रमाण अनुसार

संरक्षण अनुसार

समन्वय अनुसार

संबंध अनुसार

कहते कहते काल गुजर गए

संभलते संभलते शतक बित गए

सुधरते सुधरते युग बित गए

जागते जागते काल बह गए

समझते समझते जीवन जी गए

सच! हम कहां है?

सच! हम कैसे है?

सच! हम क्या है?

सच! हम कौन है?

जनम जनम जीवन जीवन लोक लोक

मनुष्य जन्म जीवन से ही मैं अपने आप को

संभल सकता हूं

सुधर सकता हूं

जाग सकता हूं

समझ सकता हूं

अपना सकता हूं

पा सकता हूं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



मैं चल रहा था

निश्चित मार्ग निश्चित राह और निश्चित मंजिल की ओर

एक डग भरा

माता पिता ने कहा - यह मार्ग - यह राह तुम्हें कठिन होगा

भाई बहन ने कहा - अरे यह मार्ग से ही हम लौट आए - तुम्हें झझुमना पडेगा

दोस्तो ने कहा - अरे मित्र! कैसा रास्ता चुना? ऐसे रास्ते पर कोई चल सकता है! जो तुम चलने तैयार हो गए!

समाज ने कहा - हमने कहींओ को समझा समझा कर ऐसे रास्ते से वापस लौटाए है - किसीके बस की बात नही है - जो ऐसे रास्ते पकडे।

पूरा मानव समुदाय में ऐसी ही रीत - ऐसी ही मान्यता - ऐसी ही जीवन पद्धति।

हम ऐसे - हम भी ऐसे - हमारे सी भी ऐसे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

अब कैसे चलू?

न रहा निश्चित मार्ग - राह और मंजिल

भटकता रहा भटकता हूं भटकता रहूँगा

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

ऐसा जीने से अच्छा है

मैं अडग और अचल सैद्धांतिक मार्ग अपनाऊं - जिससे मैं निश्चित - मेरा जीवन निश्चित - मेरा पुरुषार्थ निश्चित 🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" भूलना "

" भूल जाना "

क्या भूले?

नही नही कभी न भूल सकते

भूलना - भूल जाना

याद करते जाये करते जाये करते जाये

गहराई में डूबते जाये डूबते जाये डूबते जाये

क्या जानते है हम भूलना

क्या समझते है भूल जाना

नही नही कोई भी जीव नही भूलता नही भूलता नही भूलता

जो भूले समझे

जो भूले जाने

वह धर्म नही धरते

वह कर्म नही करते

वह पुरुषार्थ नही डगते

वह करुणा नही अर्पते

वह प्रेम नही पाते

वह धूर्त है

वह कपटी है

वह दुष्ट है

वह भ्रष्ट है

वह निर्लज्ज है

आत्मीय जीव नही भूल सकता

तत्वीय जीव नही भूल पाता

वैज्ञानिक सिद्धांत है

आध्यात्मिक सिद्धांत है

आत्मीय सिद्धांत है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सुखी कौन?

जो आकाश से जुडे

सुखी कौन?

जो धरती से जुडे

सुखी कौन?

जो सागर से जुडे

सुखी कौन?

जो वायु से जुडे

सुखी कौन?

जो सूर्य से जुडे

सुखी कौन?

जो चंद्र से जुडे

सुखी कौन?

जो नदी से जुडे

सुखी कौन?

जो वनस्पति से जुडे

सुखी कौन?

जो पर्वत से जुडे

सुखी कौन?

जो प्रकृति से जूडे

सुखी कौन?

जो संस्कृति से जुडे

सुखी कौन?

जो रंग से जुडे

सुखी कौन?

जो धर्म से जुडे

सुखी कौन?

जो वर्ण से जुडे

सुखी कौन?

जो ज्ञान से जुडे

सुखी कौन?

जो भक्ति से जुडे

सुखी कौन?

जो संस्कार से जुडे

सुखी कौन?

जो सिद्धांत से जुडे

सुखी कौन?

जो दासत्व से जुडे

सुखी कौन?

जो प्रेमत्व से जुडे

सुखी कौन?

जो आत्म से जुडे

सुखी कौन?

जो स्व से जुडे

गहराई से सोचते हुए एक सूची बनाये

मैं खुद किससे जुडा हूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण" 🌷🙏🌷



दिन रैनमिलते है

रैन दिन मिलते है

नदी सागर मिलते है

भंवरा फूल मिलते है

सूर संगीत मिलते है

स्वर राग मिलते है

सांस धडकन मिलते है

आत्म आत्म मिलते है

प्रेम प्रकट होता है

प्रेम प्रेम मिलते है

परमानंद दिल एकात्मता है

दिन रुक जाता है

रैन थम जाती है

नदी ठहर जाती है

सागर थंभ जाता है

भंवरा निस्थभ्ता है

फूल अवृद्धता है

सूर शांतता है

संगीत अचलता है

स्वर थमती है

राग स्थिरता है

सांस थंभती है

धडकन ठहरती है

आत्म विस्फुलिंगती है

प्रेम उदभवता है

परमानंद प्रकटता है

प्रियतम प्रिये की अलौकिक पराकाष्ठा 🌷

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे!

ऑय!

ह:!

🎵!

मधुर सी गूंज

मधुर सी रणकार

मधुर सी कहूंक

मधुर सी टहूंक

मधुर सी नजर

मधुर सी महक

मधुर सी चुभन

मधुर सी लहर

मधुर सी तरंग

मधुर सी सांस

मधुर सी प्यास

मधुर सी आश

मधुर सी याद

मधुर सी मुस्कान

मधुर सी पुकार

मधुर सी भेंट

मधुर सा सूर

मधुर सा स्पर्श

मधुर सा स्वर

मघुर सा रंग

मधुर सा इशारा

मधुर सा बिखरना

मधुर सा लहराना

मधुर सा आभास

मधुर सा टकराव

मधुर सा दर्द

मधुर सा चुभन

मधुर सा एहसास

मधुर सा एकरार

एक सूक्ष्म सी - नन्ही सी - छोटी सी गूँज - सूर - रणकार हमें क्या कर देती है!

आत्म का आहवान

रुह की पुकार

धडकन की थनथनाट

अधर की थरथराहट

नयन की तीव्रता

नयन की व्याकुलता

मन की विरहता

सांस की अगनता

तन की तडपता

हममें क्या कर देती है

जो हम तरसते - भटकते - थडकते - धडकते दौडते रहते है

गोपि🌷

ओहह कान्हा!

ओ श्याम!

हे गोविंद!

हे गोपाल!

ऑय राधा!

ह: प्रिये!

🎵🎶🎼🎵🎶 छेडे बंसी की धून

अतूट परिवर्तन

अखंड तरसना

अचल ठहरना

आमूल तडपना

रुहानी गूँज - आत्मीय गूँज

मधुर मधुर मधुर मधुर

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🎶🌷

" यमुना मैया "
यमुना मैया यमुना मैया यमुना मैया
है ऐसी धात्री मेरी
नित नित तनु नवत्व जगाय
है ऐसी यात्री मेरी
घडी धडी स्फूर रेणु उत्कटाय
है ऐसी गौत्री मेरी
स्मरपित पुष्टि जन्म उज्जवलाय
है ऐसी मात्री मेरी
परब्रह्म पुरुषोत्तम पहुंचाय
है ऐसी जात्री मेरी
कुल कुल सर्वोत्तम सोहाय
है ऐसी आर्ति मेरी
सेव्य यथार्थे कृष्ण प्रियाय:
है ऐसी जयति मेरी
अनंतगुणसंश्रिते मम मन सुरक्षिते
है ऐसी प्रकृति मेरी
प्रियो भवति गोपिका सदाय:
है ऐसी विभ्रती मेरी
क्षण क्षण जनम पुष्टिस्थितै:
है ऐसी शास्त्री मेरी
सकल सिद्धि सदा निज मम:
है ऐसी चारित्री मेरी
न जातु यमयातना पावत पुष्टि पय:
है ऐसी स्तुति मेरी
मुदा भवति हरेर्यदनुसेवया
है ऐसी सन्तुष्यति मेरी
स्वभाव भवद्वदति वल्लभ: श्रीहरे:
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
अदभुत अलौकिक अविस्मर्णीय अद्वैत
हे मेरी यमुना मैया
सदा शरण तुम्हारी
सदा चरण बुहारी
सदा करण सुधारी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह स्वरूप क्यूँ नही जान पाते है?

यह मनुष्य जन्म जीवन ही स्वरूप का पहचान करवा सकता है

हम मनुष्य हो कर भी हम स्व स्वरुप - परम स्वरूप नही जान पाते है - क्यूँ?

क्यूंकि हम अपने आप को जानना नही चाहते

हम स्वभाव से ही

हम तन मात्राओं से ही

हम प्रकृति

हम तत्व

हम कर्म

हम पुरुषार्थ

हम अपने देह को ही जानना नही चाहते

हम अपने पंच महाभूत तत्वों को नही जानते है

तो हममें और हमारी आसपास की ओरा को नही जानते है

प्राथमिक यही शिक्षा ही हमें जानने की आवश्यकता है

जो हमें जीते जीते सांस से - द्रष्टि से - कार्य से - स्पर्श से - अनुभव से - प्रकृति से - पुरुषार्थ से और आत्मीयता से ही जान सकते है।

इसके लिए

न तो वैज्ञानिक होना है

न तो चिकित्सक होना है

न तो स्नातक होना है

न तो शास्त्री होना है

न तो वैरागी होना है

न तो अनुयायी होना है

भक्त होना है

भक्त ही स्वरूप जान सकता है 🌷🙏🌷

स्व अहंकार में हम स्व को तो मारते है पर साथ साथ साथीओं और अनेकों को मारते है।

यही ही अहंकार से कुटुंब बरबाद - समाज बरबाद - वर्तमान बरबाद - भविष्य बरबाद।

किस किसको क्या कहे?

जो खुद की नही सुनते वह औरों को भी क्या समझे

मेरे दोस्त! हर कोई ऐसी रीति नीति में जीते है तो कौन किसे तारेगा

कहते रहते है - नसीब से आया - नसीब से भुगते - नही तो और कोई भुगतेगा

अररर - न तो नसीब है - न भाग्य है

यह तो कर्म की ऐसी निधि है जो अच्छा भुगते उन्हें जगाने - देखा ऐसे कर्म से ऐसा पाते है

जो गलत स्वीकारा चाहे औरों की नजरों में अति सुखी

पर वही तन मन से अति दु:खी

कर्म सिद्धांत किसीको न छोडे

अपनी नजर से तवंगर है

प्रभु की नजर से क्या है? प्रभु जाने

जो घडी घडी का हिसाब करें

कैसे करुं औरों का हिसाब

जो खुद का हिसाब न समझ सकूं

हर गति, हर कृति, हर प्रकृति हिसाब से चले

चाहे अपेक्षा कोई ही करें

जो सिद्धांत से

जो शिस्तसा से

जो सत्यता से

जो कुशलता से

जो कृतज्ञता से

जो जीये

सदा करुणा पाय

सदा करुणा ध्याय

सदा करुणा बिखराय

सदा करुणा लुटाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण ने राधा से प्रेम किया

मीरा ने कृष्ण से प्रेम किया

गोपि ने कृष्ण से प्रेम किया

व्रज ने राधा से प्रेम किया

कृष्ण ने व्रज से प्रेम किया

यमुना ने कृष्ण से प्रेम किया

अष्टसखा ने कृष्ण से प्रेम किया

सखियों ने राधा से प्रेम किया

कृष्ण ने गैयाँ से प्रेम किया

भक्तों ने कृष्ण से प्रेम किया

प्रेम की लीला है न्यारी

प्रेम प्रेम से परमात्मा पहचानी

प्रेम प्रेम से प्रियतमा पा नी

राधाकृष्ण राधे राधे 🌷🙏🌷

राधेश्याम राधे राधे 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" राम राम राम राम "

" राम राम "

" जय श्री राम "

" जय राम जी "

" हे राम! "

हमारी संस्कृति कितनी अनोखी और अभेद्य है की शब्द को आत्मीय रुप - आध्यात्मिक रुप और परम आग्नेय रुप से हमारी परम ज्योत आत्मा से एकरुप करके सदा उपासित करके मंत्र, ऋचा और श्रुति में परिवर्तन करके परमात्मा में विलीन करते है।🌷🙏🌷

राम
राम राम
हे राम!
मन से पुकारें
मुख से पुकारें
अधर से पुकारें
होठों से पुकारें
नैनों से पुकारें
मस्तक से पुकारें
सदा उर्जावान
सदा उर्मिल
सदा विशुद्ध
सदा मधुर
सदा सत्य
सदा पवित्र
सदा विश्वास
सदा संस्कार
सदा सकारात्मक
सदा आनंदित
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हम भाग्यवान है - हमने यह संस्कृति में जन्म धरा

जो " राम " से जन्मता है

जो " राम " से जीवनता है

जो " राम " से मोक्षता है

" राम राम " " राम राम "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

हमारी उत्पत्ति अर्थात हमारा गौत्र वैदिक धर्म कर्म पुरुषार्थ संस्कृति से है - तो.हममें न तो कोई रोग, भोग और प्रयोग आ सकते है, क्यूंकि हमारी वीर्यता ही ऐसे संस्कारों से सिंचाई है - विशेष प्रकार के योगो से शिक्षित है - हम न तो दु:खी, अशक्त, कायर और लाचार हो सकते है।

हम हिन्दु धर्म पारायणी है - जो मंत्र, संकल्प, उपवास का प्रबल अनुष्ठान करके कोई भी आध्यात्मिक औषधि स्व से ही बनाकर रोग प्रतिरोधक, दु:ख प्रतिनाशक, अशक्ति, कायरता, लाचारी, दूरित का क्षय अर्थात नष्ट कर सकते है।

कोई एक मंत्र का अजपोजाप - अतूट स्मरण

श्री कृष्ण शरणं मम:

स्व का नामकरण संस्कार - यह स्व नाम भी एक मंत्र है

हमारा कुल देव नाम जाप्यं

हमारा पूज्य आध्यात्मिक गुरु नाम

हमारा इष्ट देव नाम जाप्यं

हमारा आराध्य देव नाम जाप्यं

हमारा गौत्राचार्य प्रदोत्पिर्त धर्म मंत्र

या

राम

कृष्ण

शिव

हमें अवश्य संरक्षण प्रदान करेंगे

हमें अवश्य सुरक्षित रखेंगे

हमें अवश्य सलामत बनायेंगे

हममें अवश्य हिम्मत, शक्ति और आश किरण जगायेंगे

हम कहीं बार कहते रहते है

" भगवान रखें ऐसो रहते है "

यह भी अनोखा और सकुशल वर्धक मंत्र है

अगर हम यह सब न भूले - न बिसरे तो

' कॉरोना '

' मधुप्रमेह ' डायबिटीज

' चिंता ' ब्लड प्रेशर

' नाहक डर '

' मृत्यु भय '

दूर ही होगा - रहेगा - भागेगा - छूटेगा

हम सदा निर्भय - निरोगी - स्वस्थ - कुशल ही होंगे🌷🙏🌷

हम श्रद्धावान है

हम धैर्यवान है

हम धर्म परायण है

हम कर्मिष्ठ है

हम पुरुषार्थी है

जपीले ह्रदय स्मरण मंत्र पाये सुसंस्कृत जीवन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वैसे तो हम समझदार है
वैसे तो हम माहितगार है
वैसे तो हम होशियार है
वैसे तो हम चालाक है
वैसे तो हम बुद्धिमान है
वैसे तो हम सही है
वैसे तो हम ख्यालेदार है
वैसे तो हमसे भगवान निकट है
वैसे तो हम सलाहकार है
वैसे तो हम आज्ञाकारी है
वैसे तो हम योग्य है
वैसे तो हम ज्ञानी है
वैसे तो हम विश्वासु है
वैसे तो हम साथी है
वैसे तो हम दयालु है
वैसे तो हम प्रमाणिक है
वैसे तो हम उपयोगी है
वैसे तो हम श्रद्धालु है
वैसे तो हम सुखी है
वैसे तो हम तटस्थ है
वैसे तो हम न्यायी है
वैसे तो हम दानी है
वैसे तो हम निष्पक्ष है
वैसे तो हम निष्कपट है
वैसे तो हम स्वभिमानी है
वैसे तो हम मददगार है
वैसे तो हम वफादार है
वैसे तो हम निस्वार्थी है
वैसे तो हम साक्षी है
वैसे तो हम निष्पापी है
वैसे तो हम निराग्रही है
वैसे तो हम स्वमानी है
वैसे तो हम निर्दोष है
वैसे तो हम स्वयंभू है
वैसे तो हम सेवक है
वैसे तो हम परोपकारी है
वैसे तो हम कर्मयोगी है
वैसे तो हम सत्यवादी है
पर
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मत्वा कर्माणि सिद्धते "
अदभुत! अदभुत! अदभुत!
मन - मानव - मनुष्य
यही कर्म से
देव - मानव - दानव
हर कोई मन से ही स्व को देव - स्व को मानव और स्व को दानव सिद्धते है।
मत्वा कर्माणि सिद्धते
हर कोई जीव स्व को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व मन को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व जीवन को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व ज्ञान को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व भाव को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व कर्म को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व पुरुषार्थ को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व अहंकार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व संस्कार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व चारित्र्य को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व विचार को सिद्धते है
हर कोई जीव स्व संकल्प को सिद्धते है
जब से हम स्व कर्म को समझने लगे बस यही क्षण से एक उर्जा - एक शक्ति हममें जागृत हुई - जो धीरे धीरे प्रचंड ज्वाला हो जाती है।
आज हम कहीं भी जीये, कहीं भी मिले, कहीं भी निहाले, कहीं भी विस्तरे हर तरफ हर कोई अपने को सिद्ध करता रहता है - चाहे कोई भी क्षेत्र हो।
मत्वा कर्माणि सिद्धते 🌷🙏🌷
यह हमारा मूल है
यह हमारा ब्रह्म है
यह हमारा धर्म है
बस इनमें ही जुडना जुडाना, चलना चलाना, निभना निभाना, मानना मनाना, सीखना सीखाना, योगना योगाना, स्वीकारना स्वीकाराना, शास्त्र शास्त्राना, अपनाना अपवाना।
चारों ओर
हर व्यवहार
हर विस्तार
हर विचार
" मत्वा कर्माणि सिद्धते "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राधा प्रिये!

धानी चुनरी पहनाऊँ

मेधधनुष मांग पुराऊँ

झुल्फें फूलों बंधाऊँ

नैन काजल रंगाऊँ

कर्ण कुंडल जडाऊँ

नथ नासिका नथाऊँ

कंठ वैज्यंती गुथाऊँ

हस्त चुडियाँ खनखनाऊँ

बाजुएं बाजुबंध गंठाऊँ

कमरबंध कमर लचकाऊँ

चरण पैजनिया सोहाऊँ

प्रीत रस प्रियतम पीलाऊँ

आनंद स्पंदन अंग बरसाऊँ

अधर चुंबन मधुराऊँ

सांस उच्छवास महकाऊँ

स्पर्श अगन तडपाऊँ

प्रेम ज्योत प्रकटाऊँ

आत्म परम आत्म ऐकैयाऊँ

नित नित अमृत निहारुँ

हे राधा! मैं तुम्हारे ही दासा

विरह प्रेमाश्रु चरण पखालुँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

कैसा है यह काल है

सारा संसार बेहाल है

कोई न कोई भाल पूछे

जनाब! हाल क्या है?

सांस भरना हाल नही

हर तरह प्राणवायु सवाल है

घर घर काम काज बवाल है

न खाना न दवा हर कोई कंगाल है

हर तरह की धमाल है

कौन अपना पराया निहाल है

कॉने कॉने कॉरोना भूचाल है

गरीब तवंगर मलाल है

जगह जगह यम जलाल है

न तवंगर का मवाल है

पैसा पहचान की कमाल है

चिकित्सक मालामाल है

कोई नही बिना घायल

कौन न खुद को संभाल

कब कौन छोड चले मंजिल

बिनती है हे जगत के लाले

तु है दीन दुःखी के रखवाले

दया याचे प्रभु दीनदयाले

करदे कोई चमत्कार गोपाले

बस! तेरे ही सहारे है संवारले

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ऐसा तो मुझमें क्या है जो मुझे कॉरोना डसा

क्या क्या ऐसा किया मैंने जो यह काल में फसा

न साथी कोई न ज्ञाति कोई बस अकेला झझुमता

न चिकित्सक कोई न औषध प्राणवायु व्यवस्था

अकेले आया अकेले भूगतना अकेले चल बसना

घर में रहूं न भोजन नास्ता न चाय पानी

बाहर भटकूं न पानीपुरी न वडापाव बिरयानी

कैसी हालत कैसी मिलावट घट घट करें जानी

टिफिन मंगाये पाउंच बंधाये आरोगे झंख भानी

यह सोचू वह सोचू यह करलूं वह करलूं सांस घवायो

जीवन की गहरी समय धारा असमंजस में लपटायो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



न गभराओ हे हिन्दुस्थानी
यह कॉरोना यह अस्पतालों यह चिकित्सको यह नेताओं
जो भी खेल खेलते है हर एक का फल मिलता है
नेता सेवक - चिकित्सक सेवक - परिचारिको सेवक
सेवक सेवा जन सेवा प्रभु सेवा
जो ज्ञान भूले जो भान भूले जो स्व जीवन भूले
सच कहे
हमारी प्रमाणिकता का कर्म
हमारे विश्वास का धर्म
हमारी संस्कारो का पुरुषार्थ
न कोई लूट सकेंगे न कोई पा सकेंगे
हर व्यवस्था में साथ दे
हर व्यवहार में साथ निभाये
हर नियमों में आज्ञा जुडाये
न कोई समझो हमें हमारा कर्मो का फल मिलता है
यह तो एक ऐसा मौका है
जो जगत नियंता ने हर एक को दिया है
जाग जाओ - संभल जाओ
ब्रह्मांड सृष्टि के सिद्धांतों का पालन करो
नही तो न कोई रहा है न कोई रहेगा
चाहे जगत के अधिक धनवान हो
आत्मा की उर्जा का ऐसा काल चक्र चलता है
जो समय समय में हर एक को संकेत करता है
अन्जानो को जान जान कर न सताओ
सूर्य हर रोज किसीका उगता है
एक सूर्य ऐसे अन्जानो के लिए उग गया
खुद ही ऐसे तडपोगे खुद ही ऐसे तरसोगे
हम तो हर हिसाब चुकाते है
भाई भाई की भावना जगाओ
सेवक सेवा का दीपक प्रकटाओ
यही समय है
मानव मानवता पहचानने का
मानव मानव साथ निभाने का
प्रेम का सत्य पाने का
सही अमीरी लुटाने का
आओ मिलके हम एक वचन करे
हम एक है - एक रहना है - साथ साथ निभाना है 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
कोई भूल हो तो माफ करना

आत्मीय संवेदना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हम धर्म धरणी
हम कर्म करणी
हम स्व मार्गी
हम पर उपकारी
हम कृतज्ञा मयी
हम करुणा करी
हम इमान दारी
हम विद्या दानी
हम निष्ठा थानी
हम सेवा धारी
हम शिष्ठा चारी
हम है हिन्दुस्थानी
यह वायरस आया
हमें क्यूँ डरना
यह रोग आया
हमें क्यूँ व्याकुलना
यह मान्यता आई
हमें क्यूँ स्वीकारना
यह धृष्टता छाई
हमें क्यूँ अपनाना
हमारी धरोहर - हमारी संस्कृति - हमारे संस्कार
हमारा आध्यात्म - हमारा योग - हमारी वैदिकता
ही ऐसा सार्थक है
यह कॉरोना तो क्या कोई भी धर्म धारणा ऐसे दूराचार को - ऐसी महामारी को क्षण भर में नष्ट कर सकते है।
हम ऐसे तपस्वी है
हम ऐसे भक्त है
हम ऐसे सशक्त है
हम ऐसे वीर्यवान है
हम ऐसे वैदिक है
हम ऐसे सेवक है
जाग जाओ - जग जगाओ
अपना मूल टटोलो
अपना सत्य स्वीकारो
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज के युग का बलिदान 🌷🙏🌷

नागपुर से ८५ वर्षीय श्री नारायण डाभडकर दादा जिसने आज एक ऐसी मिशाल कायम की है - जिससे चिकित्सक, नेता और परिचारिको के लिए ' सेवक " और सेवा क्या है? उसका अदभुत सिमा चिन्ह है।

उन्हें कॉविड हुआ था - उनकी पुत्री उन्हें इन्दिरा गांधी होस्पिटल ले कर आई थी - उनका ऑक्सीजन लेवल बहोत ही कम था। ऐडमिशन के लिए जो रजिस्ट्रेशन कराना था, वह पुत्री डॉक्टर को बुलाने गई। तब एक स्त्री बहोत रो रही थी - उनका पति की को कॉविड हुआ था और उनकी उम्र ४० साल की थी।

जैसे डॉक्टर आये नारायण दादाने वह डॉक्टर को उनकी जगह वह ४० वर्षीय व्यक्ति को दाखल करवाया और ट्रिटमेंट करवायी और वह घर पहुंचे - तीन दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई।

सच! कितना श्रेष्ठ बलिदान 🌷🙏🌷

आज हर चिकित्सक और नेता को समझना है - सच्चा सेवक कौन?

आज हर व्यक्ति को विनंती करते है - अपने बेटे बेटी जो चिकित्सक हो - नेता हो तो ऐसी सेवकता करे - करवाये और समाज के लिए मिशाल हो। 🌷🙏🌷

अवश्य आशा करते है - हम हमारी आत्मा को जगाएंगे 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कौनसी भाषा समज सके हम?

कौन कौनसी भाषा हम जताये जायेंगे!

सच! युगों से जीते है, युगों से स्व भाषा जगाते है - समझाते है - अपनाते है - खो देते है - तिरस्कृत करते है - छोड देते है।

और हमने जो जगायी वह नयी भाषा, स्वतंत्र भाषा, स्वछंद भाषा, स्व भाषा जो खुद ही जगाये - खुद ही तिरस्कृते - खुद ही पछताये। न संस्कार, न विश्वास, न स्वमान, न प्रमाण, न सत्य, न पवित्रता, न व्याकरण, न संस्करण इसमें। स्वार्थ, असमंजस, अयोग्यता, असभ्यता, अविद्यता, अराजकता, अल्पता, अभद्रता, ऋक्षता, भ्रष्टता, भ्रमता इनमें - कौन कौन समझे - स्वीकारे - अपनाये?

हर एक की हर एक भाषा

हर एक की हर एक मान्यता

हर एक का हर एक अर्थ

हर एक का हर एक सत्य

हर एक का हर एक अनुभव

हर एक की हर एक सभ्यता

हर एक की हर एक द्रष्टि

हर एक की हर एक कक्षा

हर एक की हर एक शिक्षा

हर एक की हर एक जिज्ञासा

ओहहह! हर एक की............

कौन कौन किसे पहचाने

जो हर एक से बहे वो गंगा, यमुना, सरस्वती

हे वल्लभ! आप अपनी भाषा में पुष्ट

हम हमारी सामायिक कालीय भाषा में मस्त

हर कोई गाये - हम तो जाते अपने गांव

सबको राम राम राम राम

हर एक को श्याम श्याम श्याम!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे दोस्तों!

हमने कितनी तकलीफें झेली

हमने कितनी मुसिबतें सही

हमने कितनी मुश्किलें ढहाई

हमने कितने दर्द डूबोयें

हमने कितने तूफान झझूमे

हमने कितने दुःख सहे

सदा अडग रहे साथ साथ

हम निडर रहे बार बार

हम डटे रहे धार धार

समझ सकते है इसमें जिस पर विश्वास है वोही खेलता है

समझ सकते है इसमें जिस पर श्रद्धा है वोही लूट रहे है

पर एक रहस्य हम भूल गए

पर एक सत्य हम छूट गए

पर एक सिद्धांत हम तोड गए

यह रहस्य है

अपना स्व आत्मा का जो परमात्मा ने अपना अंश प्रमाणित किया है

तो हम यह विश्वास क्यूँ भूल गये?

यह सत्य है

हमारी आध्यात्मिक संस्कृति है जो केवल सत्य को ही पहचानता है और अपनाता है

तो हम यह सत्य कैसे छोड दिये की हमारी नैया तो हमारे कर्म और पुरुषार्थ आधारित है, हम कर्म और पुरुषार्थ ही ऐसा करे की न कोई हमें हताश करें?

यह सिद्धांत है

हमारी धर्म धरोहर सिद्धांतों से अनुभूत है की हम जो भी है वह हमारी तन मात्राओं और पुरुषार्थ आधारित है, जो भी किया वह निश्चिंत उसकी योग्यता हम अवश्य पायेंगे ही, तो हमारा जीवन ही सिद्धांतों से साक्षात किया है की हम सलामत ही रहे।

हे मित्रों! उठो - जागो और अभयता से मुकाबला करे और अन्यायी को ऐसा पाठ पढाये जो सदा साथ साथ - सदा योग्यता पूर्वक अपना जीवन सफल बनाये 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मानव

मनुष्य

Man

मन

जिसके पास मन है वह निरंतर है

जिसके पास मन है वह नित्य है

जिसके पास मन है वह चलता ही रहता है

जिसके पास मन है वह दौडता ही रहता है

जैसे सूरज

जैसे धरती

जैसे आकाश

जैसे वायु

जैसे सागर

हममें कितनी विराटता है

हम कोई भी क्षण अग्नि प्रकट कर सकते है

हम कोई भी क्षण प्रकृति उत्स कर सकते है

हम कोई भी क्षण सर्वस्व में अनंत कर सकते है

हम कोई भी क्षण स्व रुप वहन कर सकते है

हम कोई भी क्षण आद्रता जगा कर बिखर सकते है

यही मानव - मनुष्य - Man - मन करता है, अर्थात कितनी व्यापकता और विराटता हममें है।

हर एक को अवश्य अनुभव हुआ ही होगा जब कितनी भी विपरीत परिस्थिति उठती है तब कोई न कोई आधार अपने पास आ कर हमें पवित्र आधार हिम्मत देती है।

क्यूँ?

क्यूंकि हम अवश्य आत्मीय मन अंश है जो हर विपरीतता को सरलता और योग्यता में परिवर्तन कर सकते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" परीक्षित "

यह शब्द - यह नाम - यह कर्मयोगी से हर कोई परिचित है।

परीक्षित - गहराई से सोचे

परीक्षित - गहराई से अर्थ करे

परीक्षित - गहराई से व्याकरार्थ करे

अदभुत शब्द है

अदभुत नाम है

अदभुत कर्मयोगी है

हमारे मूल आचार्य श्री वेद व्यासजी ने बिलकुल योग्यता पूर्वक यह शब्द - नाम और कर्मयोगी का उपयोग किया है।

प्राथमिकता से दिशा सूचक कर परमात्मा से एकात्मक तक यह गूढार्थ का उपयोग किया है।

गहराई से अध्ययन करने से

गहराई से चिंतन करने से

हर वैदिकता से शास्त्रार्थ करने से

आत्मीय यज्ञ पुरुषार्थ करने से

यह शब्द - यह नाम - यह कर्मयोगी हमारा प्रतीक तो नही!

यह नाम - यह कर्मयोगी हमारा स्वरुप तो नही!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा ही देता रहे!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा में ही जीवन जीये!

जो जीवात्मा सर्वथा परीक्षा से ही सर्वत्र का उद्धार करे

हम गहराई से सोचे तो ऐसी अनुभूति होती है - यह हमारे जीवन जीने का मूल स्त्रोत्र है।

अति अनोखा और आवश्यक चरित्र 🌷🙏🌷

हम ही यह चरित्र के गुण अपनाये तो सदा सलामत रह सकते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मधुर मधुर सी बहती हवा

मधुर मधुर सा स्पर्श करती

अंग अंग को छूती

मन को मधुर तन को मधुर

सांसों को मधुर आत्म को मधुर

विचार को मधुर द्रष्टि को मधुर

अक्षर को मधुर शब्दों को मधुर

ऐसे उडते है ऐसे बिखरते है

गूंज सुनकर आकाश रंग रंगाये

रंग बिरंगे पंखी मधुर गीत गाये

झुलती पत्त वेली फूल उडाये

मधुर मधुर महक महकाये

कितनी मधुर सुबह!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

मन सोचे कान्हा को पुकारूं

तन सोचे कान्हा को निहारुँ

सांस सोचे कान्हा को न्योछावरु

आत्म सोचे कान्हा को लिपटाऊँ

द्रष्टि सोचे कान्हा को दर्शनाऊँ

अक्षर सोचे कान्हा को सजाऊँ

अंग सोचे कान्हा के शरणाऊँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सहमी सहमी शाम
धरती से अगन अगन वायु उभारे
आकाश से अगन अगन बरसाये
पंखीओ की टोलियां तरस टटोले
मेरी अखियां जलन जलन मिचोले
सांस बास्प बास्प दाह स्पर्शाये
आत्म ज्योत सुलग सुलग प्यासे
कब प्रेम तरंग तान बंसी की छूटे
कब गौधूली मेरी अखिंयन में दिशे
थकी यह सांसे थंभी यह पलके
कब मेरा आत्म तरंग प्रीत धून सुने
कब मेरे नैन कदम रज डगरी निहाले
हे प्रिये! ढलता सूरज करे इशारे
मैं डूबा चक्कर चक्कर काटके
तुम भी डूबो प्रेम विरह रस बहाके
हे सूरज! तुम ढलते रहो डूबते रहो
न मैं ढलुंगी न मैं डूबूंगी
सारी सारी निशा जाग कर
प्रीत की हर दिशा जगा कर
मैं पुकारुंगी प्रिय प्रियतम
अवश्य पाऊँगी यही शाम ढलन पर
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

मैं यह सोच कर जगत दर से जन्म धरा था
कि परमात्मा तक पहुंच कर एकात्म होगा

धर्म का लहराता अपनाया था आँचल
की सिद्धांतों पर चलके साथ निभायेंगे मेरा

कदम ऐसे अंदाज से उठा रहा था
की सदाचार राह पर चलाऐंगी मुझको

मगर समाज ने टोका
मान्यता ने घुमाया
धर्म छुडवाया
सिद्धांतों भूलाया
संसार भटकाया
न मुझको सुधारा
न आवाज ही दी
न वापस जगाया

मैं आहिस्ता आहिस्ता डूबता ही गया
यहां तक के उससे जुदा हो गया मैं
यहां तक के उससे बिछड गया मैं
बिखर गया मैं
भटक गया मैं
डूब गया मैं

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह रचना "हकीकत" सिनेमा की प्रेरणा से है

मैंने जो तबदीले किए है वह समाज की मान्यता आधारित है

जो "कराऔके" दरिए यह रचना गा सकते है

अगर कोई अक्षर या शब्द में राग और संगीत आधारित बदलाव कर यह संवेदना व्यक्त कर सकते है
मैं अवश्य आशा रखता हूँ की आप अपने आत्मीय स्वर से अचूक मुझे सुनायेंगे 🌷🙏🌷

Pankaj Shah: 🌷🙏🌷

श्री प्रभु सबको संमति देना

जो अपनी तंदुरुस्ती बना रखे

न घर में परेशान हो

न बाहर हैरान हो

खुद जागे खुदाई जगाये

हर हर में जागे भलाई

न मैं किसीको कष्टाऊँ

न कोई मुझे दुभाये

सबका आशरा तुम ही हो

तो काहे ओर कोई डूबोयें

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम सदा क्या सोचते है भगवान पाना है
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
श्रेष्ठ!
हम बार बार दर्शन करते है
हय बार बार कीर्तन करते है
हम बार बार सेवा करते है
हम बार बार सत्संग करते है
हम बार बार उनकी धून में रहते है
हम बार बार उनके धर्म शास्त्रार्थी है
हम बार बार उन्हीं के ख्याल में रहते है
हम बार बार उनके ही गुणगान गाते है
हम बार बार सदा येनकेन प्रकार उनके रहने और होने की क्रीया में डूबोयें रहते है
हमारी द्रष्टि तो उनके ही रस में
हमारी सृष्टि तो उनके ही संग में
हमारी प्रकृति तो उनके रंग में
हमारी कृति तो उनकी सेवा में
सच! जहां जहां वह तीत तीत मैं
सच! कितने भाग्यवान
सच! कितने ज्ञानवान
सच! कितने निष्ठावान
सच! कितने सेवाभावी
सच! कितने सर्वोच्च
सच! कितने सर्वोत्तम
अदभुत! 🌷🙏🌷🌷🙏🌷
जहां जहां हो वहां वहां हम जैसे
अपने आपके साथ आप सभीको प्रणाम करता हूं 🌷🙏🌷
ऐसे ही डूबोयें संसार
ऐसे ही खोयें जीवन
ऐसे ही श्रद्धे जन्म
ऐसे ही कर्मे शिक्षण
अपने आपके साथ आप सभीको वंदन करता हूं 🌷🙏🌷
आज्ञा चाहूँ यही समाज से
मुझे क्षमा करो ऐसे हे परम श्रेष्ठी प्रभु वत्सल 🌷🙏🌷
मुझे अपना संसार जीने दो
मुझे अपना जीवन सिंचने दो
मुझे अपना विश्वास उत्साने दो
मुझे अपना धर्म धरने दो
मुझे अपना कर्म करने दो
मुझे अपना ऋण निभाने दो
मुझे अपना पुरुषार्थ जगाने दो
मेरी विनंती हे जगत नियंता🌷🙏🌷
मुझे आप ही सभी सृष्टि से जगने दो
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हसना हसाना😄

प्यार बाटना😄

नाच नचाना😄

झूम झूमाना😄

रंग रंगाना😄

महक महकाना😄

साथ निभाना😄

हाथ देना😄

कदम चलना😄

गाये तराना😄

है हमारा काम😄

हर कोई खुश😄

हर कोई सुख😄

हर हर दीवाना😄

तरह तरह मुस्कुराना😄

उमंग उम्मीद लहराना😄

न कुछ मेरा😄

न कुछ तेरा😄

हर एक का जमाना😄

तु भी जी ले हर खुशी से😄

मैं भी जी लु हर खुशी से😄

तो😄

हे तु हस दे😄

तो😄

हे मैं हस दु😄

😄😄😄😄😄

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

👍👍👍👍👍👍👍👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खुशी बरसे🌷
सुख बरसे🌷
आनंद बरसे🌷
मस्ती बरसे🌷
नखरे बरसे🌷
सौगात बरसे🌷
मनगमत बरसे🌷
संगीत बरसे🌷
शीतलता बरसे🌷
सुगंध बरसे🌷
रंग बरसे🌷
तरंग बरसे🌷
वात्सल्य बरसे🌷
स्नेह बरसे🌷
व्रजरज बरसे🌷
महकता बरसे🌷
मचलता बरसे🌷
तरलता बरसे🌷
मादकता बरसे🌷
मधुरता बरसे🌷
वैविध्यता बरसे🌷
प्रेम बरसे🌷
नैनरंगत दरसे🌷
तनस्पंदन स्पर्शे🌷
धडकने दिल थडके🌷
दैवीय आशीर्वाद बरसे🌷
सच! यही बरस - दरस - स्पर्श - धडक
हम हो ऐसे काबिल💐
हम हो ऐसे भाग्यवान💐
हम हो ऐसे कर्मिष्ठ💐
हम हो ऐसे पुरुषार्थी💐
हम हो ऐसे प्रियतम💐
हम हो ऐसे दर्पण💐
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हे प्रारंभ करें
हे हर कोई को जीते🌺
हे हर कोई को सुखोये🌺
हे हर कोई को आनंदे🌺
😄😄😄😄😄😄😄😄😄😄😄
👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहह कितना अनोखा समय है

जो न किसीका फोन न किसीका संदेश

कुछ हर कोई के लिए कुछ खुद के लिए करने का समय पाया

हिसाब लगाया अबतक के जीवन काल का

अच्छा पढा अच्छी कक्षा पायी अच्छा कमाया धर्म जगाया

गाडी लाया मकान बनवाया इज्जत पायी सामाजिक स्थान पाया

वाह! वाह! वाह!

अब स्व को पढे स्व को कक्षे स्व को कमाये स्व को जगाये

ओहह! कितना अनुभव! खुद का अनुभव कुटुंब का अनुभव

आसपास का अनुभव समाज का अनुभव मित्रो का अनुभव

चित्रकार बनना था गायक बनना था संगीतकार बनना था

क्रिकेटर बनना था साहसवीर बनना था कलाकार बनना था

यही समय है - यही समय है ऐसा कुछ करने का - यही समय है

आंतर उर्जा जगाने का आंतर महेच्छा पूर्ण करने का

किताब पढे नये उजास की

शास्त्र अध्ययने धर्म चारित्र्य की

संस्कृति चिंतने स्व निर्माण की

संस्कार सिंचे वैज्ञानिक सिद्धांत की

वाह! वाह! वाह!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

कृष्ण की तस्वीर हर कोई ने दर्शन किये है

कृष्ण के विग्रह हर कोई ने निहाले है

कृष्ण की मूर्ति को हर कोई ने स्पर्श किये है

कृष्ण के चित्रजी को हर कोई ने नमन किये है

पढे हो अनपढ हो हर कोई ने कृष्ण को प्रणाम किया है

किसीने किसी रुप में कृष्ण से नैन छूआये है

ऐसे दर्शन - ऐसे निहालना - ऐसे स्पर्शना - ऐसे नमन करना - ऐसे प्रणाम करना - ऐसे नैन छूआना अर्थात अवश्य कोई अनुभव भी हुए ही होंगे।

यही अनुभूति जब अपने स्वजन, जब अपने निकटतम, जब अपने साथी, जब अपने मित्र, जब अपने आसपास रहते पडोसि, प्राणी, पौधे, नदी, पक्षी को देखकर होता ही होगा।

अगर नही हुआ होता है तो अब देखना हमें उनमें कृष्ण की झांकी अवश्य होगी ही।

ऐसा क्यूँ होता है और होगा?

हम पहले कोई भी अनुभव अपने मन से स्वीकार ले।

शेष कल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण "

कृष्ण को हमने मन में धरा

कृष्ण को हमने तन में धरा

कृष्ण को हमने धन में धरा

कृष्ण को हमने नैन में धरा

कृष्ण को हमने धर्म में धरा

कृष्ण को हमने कर्म में धरा

कृष्ण को हमने जीवन में धरा

कृष्ण को हमने आचरण में धरा

कृष्ण को हमने आँचल में धरा

कृष्ण को हमने अन्न में धरा

कृष्ण को हमने जल में धरा

कृष्ण को हमने रंग में धरा

कृष्ण को हमने अर्पण में धरा

कृष्ण को हमने तर्पण में धरा

कृष्ण को हमने समर्पण में धरा

कृष्ण को हमने श्रृंगार में धरा

कृष्ण को हमने सेवा में धरा

कृष्ण को हमने शिक्षा में धरा

कृष्ण को हमने विद्या में धरा

कृष्ण को हमने प्रकृति में धरा

कृष्ण को हमने सृष्टि में धरा

कृष्ण को हमने वृत्ति में धरा

कृष्ण को हमने कृति में धरा

कृष्ण को हमने व्यवहार में धरा

कृष्ण को हमने त्योहार में धरा

कृष्ण को हमने संकल्प में धरा

कृष्ण को हमने आचार में धरा

कृष्ण को हमने विचार में धरा

कृष्ण को हमने उत्स में धरा

कृष्ण को हमने जन्म में धरा

कृष्ण को हमने मृत्यु में धरा

कृष्ण को हमने सांसों में धरा

कृष्ण को हमने धडकन में धरा

कृष्ण को हमने अक्षर में धरा

कृष्ण को हमने स्वर में धरा

कृष्ण को हमने मिलन में धरा

कृष्ण को हमने विरह में धरा

कृष्ण को हमने भक्ति में धरा

कृष्ण को हमने शक्ति में धरा

कृष्ण को हमने ज्ञान में धरा

कृष्ण को हमने शास्त्रों में धरा

कृष्ण को हमने आनंद में धरा

कृष्ण को हमने परमानंद में धरा

कृष्ण को हमने प्रेम में धरा

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य प्राकट्य

मुझे क्या कह रहा है?

मुझे क्या जगा रहा है?

मुझे क्यूँ?

यही जिज्ञासाओं से कल उगते सूरज के साथ हममें बसे श्री आचार्य वल्लभ को यह उपर लिखे प्रश्नो पूछना।

यही जिज्ञासाओं से कल उगते सूरज के साथ हमारे पुष्टि कुल आचार्य से पूछना।

जो उत्तर पाये

यही उत्तर का विश्लेषण हमें अवश्य श्री वल्लभ की ओर ले जायेगा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



हे वल्लभ!

आपका प्राकट्य हमें नूतन पुष्टि चेतना प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें तनु नवत्व प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें नूतन ब्रह्म संबंध से जोडे

आपका प्राकट्य हमें पुष्टि मोक्ष प्रवर्त करे

आपके प्राकट्य हमें गोपीमन्त्राभिमन्त्रित करे

आपका प्राकट्य हमें सर्व सिद्धांत बोधक सिंचित करे

आपका प्राकट्य हमें सकल गात्रों का समन्वय करे

आपका प्राकट्य हमारी अहंताममतानाशे सर्वथा निरहंकृते करे

आपका प्राकट्य हमें सिद्धे योगे कृतार्थ करे

आपका प्राकट्य हमें तदीयत्वे तदाश्रयः नियतार्थ प्रदान करे

आपका प्राकट्य हमें कृष्ण सेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता करे

आपको दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

आपका स्वागत है यह मनुष्य अंश रुपी जगत में - आप सदा हमारा कल्याण करे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अवतारितभक्तांश: कीलकं परिकीर्तितम् "

" बिजं भक्तप्रिय: शक्ति: सत्यवागुच्यते हरि: "

" भक्तोद्वारप्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय "

" भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालक "

" कलिनिग्रहकर्ता च धर्मादीनां च पोषक: "

" सर्वध्येयो योगगम्यो भक्त्या ग्राह्य: सुरप्रिय: "

" जन्मादिदसार्थककृतिर्लीलाकर्ता पति: सताम् "

" अनेककल्पकर्ता च सर्वदोषविवर्जित: "

" तीर्थशुद्धैकनिलय: स्वमार्गपरिपोषक: "

" तीर्थकीर्तिर्भक्तगम्यो भक्तानुशयकार्यकृत् "

" भक्ततुल्य: सर्वतुल्य: स्वेच्छासर्वप्रवर्तक: "

हे वल्लभ! आपके प्राकट्य से हर भक्त - हर सेवक, हर जन प्रफुल्लित - आनंदित और पुष्टिमय हो रहे है 🙏

पधारो श्री वल्लभ हमारे हृदयद्वार 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण""जय श्री वल्लभ"🌷🙏🌷

" भक्तोद्धरणयत्नस्तु "

भक्तोद्धरण यत्नस्तु

भक्त उद्धारण यत्न स्तु

हे वल्लभ! आप कितने कर्मनिष्ठ हो की जो जीव साधारण हो, उन्हें आपकी शिक्षा और विद्या सिंचित हो, जिससे वह मानव से मनुष्य - मनुष्य से व्यक्ति - व्यक्ति से भक्त - भक्त से वैष्णव - वैष्णव से भगवदीय - भगवदीय से भागवत।

आपका हर यत्न मनुष्य सुधारक

आपका हर प्रयत्न भक्त उद्धारक

आपका हर ज्ञान पुष्टि प्रवर्तक

आपकी हर रचना वैष्णव प्रदायक

आपका हर सिद्धांत भगवदीय परिपालक

आपका हर कार्य भागवत गुणसृष्टिप्रवर्तक

आप कितने कृपालु और पुरुषार्थेषु हो की हर घडी भक्तिवर्धनम्।

दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहोहो! कितने जीव! कैसा कैसा जीवन!

कोई भी लोक हो

जीवन मधुर करना होता है

जीवन आनंदमय करना होता है

हम शायद चार पेढीयां तक को निहाल सकते है, जान सकते है, समझ सकते है, बाकी सब मान्यता, धारणा और स्वीकारना।

जो चार पेढीयां तक जानते समझते - जितनी सदीयां बिती, यही समय और काल में कितनी झंझावातें, कितना श्रम, कितना झझुमना, कितना बेबाकना, कितने मजबूर, कितने सहमें, कितने भिक्षुक, कितने गरीब, कितने खुशामत, कितने अन्यायी, कितने असहिष्णु, कितने असहाय, कितने जलील, कितने लाचार, कितने गुमसुम, कितने चुमाये, कितने घृणित।

इमान के लिए

स्वमान के लिए

खुद्दारी के लिए

भविष्य के लिए

वंशजों के लिए

रक्षा के लिए

अपनो के सुख के लिए

अपनो के भविष्य के लिए

आज हम जो है उन्हीं के वारसाई से

आज हम जो है उन्हीं के पुरुषार्थ से

आज हम जो है उन्हीं के आशाओं से

आज हम जो है उन्हीं के सपनों से

आज हम जो है उन्हीं के विश्वास से

आज हम जो है उन्हीं के द्रूड विश्वास से

आज हम जो है उन्हीं की आकांक्षा से

आज हम जो है उन्हीं के दीर्घदृष्टि से

हा! हम कितने भाग्यशाली है

गहरी सच्ची और चिंतनीय विचारधारा है।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टिमय सेवा का तात्पर्य केवल " वात्सल्य " है

" Mother's Day "

कोई बात नही की एक दिन मनाया

पर

हम तो हररोज जीते है

हे मैया! मुझे केवल तेरा ही सहारा है 🌷🙏🌷

यही हमारा संस्कार है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



अपने से अपनो का बिछडना
हर एक को दु:ख होता है
यह न बिछडना और न दु:खी होना
के लिए हमनें कही बार बांधछोड किया
यह बांधछोड नही करने के लिए
हमें अपनी आत्मीय उर्जा प्रजवल्लित करनी होगी
यही उर्जा से हम हर कोई दुरस्ती का नाश कर सकते है

शिस्त में रहना
सही नियमों में बंधना
जो शपथ लिए हर शपथ को निभाना
नियम घडे वह नियम का पालन करना
जो वचन जागृतता से किये है उन्हें संपूर्णता से पूरा करना
विश्वास में जीना
पवित्रता महकाना
शुद्ध व्यवहार करना
महेनत से काम करेंगे
तो अवश्य हम न रोगी भोगी और वियोगी बनेंगे

हमारे संस्कार हम अवश्य निभाये
जो न निभाये वोही मरता है मार खाता है

ऐसा अवश्य होगा ही जो हम स्व को योग्य बनाये

सब सब में शब का रुपांतर न हो
यही तो हमारी मनुष्यता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कभी जो कह न पाये बात
होठों पर अब आयी "

हम तो चल दिये साथी
करेगा कौन जगाई

" कॉरोना "

कब कौन उठे - कब कौन बैठे
हर तरफ है ऐसी दुहाई

समझना है हे साथी!
न करे बुराई न करे ठगाई
न करे जूठाई न करे बेवफाई

यहां ऐसा न्याय है
जो सूक्ष्मता से भी धूर्तता करे
न उन्हें कोई ठहराई न उन्हें कोई रखाई

यही न्याय है यह धरती का
यही कर्मफल है यह जगत का
यही निर्णय है यह धर्म का

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वक्त कहा रुकता है
हम तुम्हें कैसे रुकवाये
है जीवन की धारा ऐसी
जो न किसीको ठहराये
साथ कदम निभाते चले
प्रेम सागर में बहते चले
तो तुम धरती मैं आसमां
तुम उर्जा तो मैं सूरज
तो तुम ज्योत तो मैं पतंग
तुम फूल तो मैं भंवरा
तो तुम नदी मैं सागर
तुम हवा तो मैं पर्वत
प्रेम प्रीत की यही रीत
तुम आत्मा मैं आत्मा
एक होते है परमात्मा
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



प्रार्थना

याचना

विनंती

गुहार

आर्त

दुहाई

जुहार

करते रहे करते ही रहे

चाहे हम रहे या न रहे

चाहे हम मिटे या न मिटे

पर न तुझे छोडेंगे न तुझ हमसे छुडायेंगे

हम तुटे तो तुटे हम तडपे तो तडपे

पर न तुझसे बिछडेंगे न तुझसे बिखरेंगे

हम है तुझसे तु भी हमसे ही है

कॉरोना आये या कोई वायरस आये

लडेंगे डटेंगे ऐसे दुश्मन से

नाथेंगे कालीय नाग जैसे

मारेंगे हरायेंगे झुकायेंगे मिटायेंगे

हे प्रभु!

जता तेरी लीला

जगा तेरी अग्नेयता

बता तेरी नियंता

हे काल का महाकाल

हे राक्षस का संहारक

हे तारणहार! तु ही एक जगत उद्धार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न तुम हारे न हम हारे
कोई कैसे हार सकता है?
कोई कैसे हरा सकता है?

हर कोई अपनी ओर से विद्वान
हर कोई अपनी ओर से ज्ञानी
हर कोई अपनी ओर से बुद्धिमान
हर कोई अपनी ओर से तर्कशास्त्री
हर कोई अपनी ओर से शक्तिशाली
मैं कैसे हार सकता हूं!
नही हरा सकते.है कोई भी तरह।

सच! हारा
स्व हारा
अवश्य हारा
अचूक हारा
हर तरह हारा
हर रीत से हारा

हाँ! मुझे समझना है
न तुम हारे न हम हारे
तो ही दुनिया जीत सकता हूं
तो ही मान्यता हरा सकता हूं
तो ही ऋढिचुस्तता जीत सकता हूं
तो ही अहंकार तोड सकता हूं
न तुम हारे न हम हारे 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! हमने आपको आचार्य रुप में स्वीकार किया है।

आप चाहे आज एक आत्मीय रुप में हमारी साथ हो

आप चाहे आज हमारी साथ छबिजी या मूर्त रुप में हमारी समक्ष हो

आप चाहे आज हमारी समक्ष शास्त्र प्रमाणित हो।

हम आपका ध्यान धरे

हम आपकी सेवा अर्चन करे

हम आपका अध्ययन करे

हम आपको स्मरण करे

हम आपको हमारी अंदर जीवंत करे

हम मार्गदर्शन पाये

हम प्रेरणा पाये

हम सुख अनुभवे

हम सैद्धांतिक जीवन अपनाये

हम हमारी स्व की जागृतता जगाये

हम सांसारिकता परिवर्ते

हम हमारी आध्यात्मिकता प्रवर्ते

हमारा जन्म जीवन सफल करे

हम स्वदेह मधुदेश सानिध्ये

आप कितने मधुर है

आप कितने करुणानिधि है

आप कितने उद्धारक है

आप कितने पुष्टिपति है

आप कितने परमपुरुषार्थी है

आप कितने गुणसृष्टिप्रवर्तक है

हे वल्लभ! आप हमारा स्वीकार करके हमें भी आपके साथ सदा रहे - चाहे आप तृतीय लोक हो - मधुलोक हो।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धरती को माता समझते है
नदी को धात्री समझते है
पर्वत को रक्षक समझते
प्रकृति को औषधि समझते है
आकाश को आँचल समझते है
वायु को प्राण समझते है
सूरज को देवता समझते है
सागर को पिता समझते है
सृष्टि को जीवन समझते है

तो हम कितने शक्तिशाली है
तो हम कितने सुरक्षित है
तो हम कितने अभय है
तो हम कितने सुखी है
तो हम कितने निरोगी है
तो हम कितने अजोड है
तो हम कितने पुरुषार्थी है
तो हम कितने सैद्धांतिक है
तो हम कितने समयसूचक है
तो हम कितने नियमित है
तो हम कितने धर्मी है

अगर हमने कोई एक को अपवित्र किया
अगर हमने कोई एक को अशुद्ध किया
अगर हमने कोई एक को गंदा किया
अगर हमने कोई एक को अभद्र किया
अगर हमने कोई एक को घिनौना किया

तो हम अवश्य दुष्ट रहेंगे
तो हम अवश्य धूर्त रहेंगे
तो हम अवश्य दुःखी रहेंगे
तो हम अवश्य भोगी रहेंगे
तो हम अवश्य रोगी रहेंगे
तो हम अवश्य अज्ञानी रहेंगे
तो हम अवश्य अधर्मी रहेंगे
तो हम अवश्य लाचार रहेंगे
तो हम अवश्य परतंत्र रहेंगे

सोच कर नक्की करले हमें क्या होना है?

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न देखना सामने वाला कुछ नही करते है हमारी मुसीबत में

यही देखना सामने वाला कोई मुसीबत में है दौड के जाना बिना समय घंवाये

न देखना पडोसि कुछ नही करते हमारी आफतों में

यही देखना पडोसि हो कोई आफत में त्वरित जाना बिना बहसे

न देखना सगा सबंधी मदद नही करते हमारी तकलीफों में

यही देखना सगा सबंधी है कोई तकलीफ में समय पर पहुंचना बिना संकोचे

न देखना कोई नही ठहरता है आकस्मिकता में

यही देखना हम ही है सेवक यह आकस्मिकता के सहारा

न देखना जात पात दु:ख के पहाड में

यही देखना हम ही नदी है सांत्वना की जो पहाड को रिश्ता कर दे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कितनों के द्रष्टांत ले
कितनों के मसवहरा ले
कितनों की सलाह ले
कितनों से अपनी कहें
कितनों की अपनी सुने
कितनी बार सुना अनसुना करे

हाँ! कितना विश्वास औरौं पर
जो कहे वह करे
कोई अपना कहे तो?

सच! कैसा है जगत
सच! कैसा है जमाना

न करे तो मुसिबत
करे तो मुसिबत
सुने तो मुसिबत
कहे तो मुसिबत
न बोले तो मुसिबत
मुसिबत मुसिबत मुसिबत
ओहह! कितना विश्वास
अपनो पर अविश्वास
स्व पर अविश्वास
ओ हमने कैसे लगाई इती देर
हम क्यूँ करते है इती देर
ओह! हमसे क्यूँ हो गई इती देर
तो भी मैं होशियार
तो भी मैं ही होशियार
तो भी हर कोई में मैं होशियार
क्यूँ टलवले?
क्यूँ अटकले?
क्यूँ थरथरे?
क्यूँ अधूरे?
है कुछ जीवन में ऐसा
है कुछ संस्कार में ऐसा
है कुछ आचार में ऐसा
है कुछ आकार में ऐसा
है कुछ विचार में ऐसा
है कुछ व्यवहार में ऐसा
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

नन्हा नन्हा छोटा छोटा माता पितांबर पहनाये
केडे केडियु सर पर मुकुट पहनाये
हाथ में गजरा झुल्फों में मयूरपंख सोहावे
अधर पर बंसरी पांवों में पायल सजावे
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

बारह बरस नटखट किशोर गली में धूम मचावे
छोटे बडे का वात्सल्य लुट गौचारण लीला जगावे
बंसरी की मधुर तान छेडत हर कोई नाचत गावत
घर घर आनंद लुटावत जन जन कान्हा कान्हा पुकारत
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

छोरा छोरी मंडली गठन ज्ञान भक्ति धजा लहरावत
होलि खेलत फाग उडावत प्रेम रंग अंग अंग भीजावत
आनंद उत्सव दीप प्रज्वलत गोवर्धन लीला सजावत
रास रचावत प्रेम जगावत जीव जीव गोपि भाव जगावत
मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

मैं कान्हा हो भया ऑ मैं कान्हा हो भया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज तो उगता है हर दम
मिटाता है कल के हर कदम
नया रुप नया सपना नया जोम
कितना अजोड सिद्धांत
कुछ भी किया कुछ भी रख्खा
वो कल हो गया भूत हो गया
नया दिन नये किरण नये रंग
ये किया था ये करना था से
ये करना है ये होना है
कल की बात वोही जाने
जो आज से बिछडना है
जो खुद को खुद से मरना है
जिंदा वोही है जो आज है
पाता वोही है जो आज है
ढल गया आज पूर्ण हो गया
नया सवेरा नया रंग उमंग
नये विचार नइ उर्जा नये संकेत
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ऐसा हुआ

वैसा हुआ

ऐसे देखना

वैसे देखना

ऐसे संभलना

वैसे संभलना

यहां ऐसा

वहा वैसा

वह ऐसा

वह वैसा

तु तेरा देख

मैं मेरा देखूं

उनका उन्हें देखने दो

मुझे मेरा देखने दो

उनका कर्म का फल

मेरा कर्म का फल

ऐसा ही होगा

वैसा ही होगा

ओहहह! कैसे कैसे उच्चारण भरे सूर

हम ऐसे वातावरण के व्यक्ति है?

हम ऐसे विचारसरणी के व्यक्ति है?

हम ऐसे ख्यालों वाले व्यक्ति है?

हम ऐसे संस्कार सिंचे व्यक्ति है?

हम ऐसे कार्य करने वाले व्यक्ति है?

हम ऐसे बोलने वाले के साथी है?

हम ऐसे सुनने के आदी है?

हम ऐसे समझने वाले व्यक्ति है?

नही नही नही नही

तो ऐसे वाक्यों का शोर क्यूँ?

तो ऐसे वाक्यों का कोलाहल क्यूँ?

तो ऐसे वाक्यों का उत्पात क्यूँ?

हमारे हर अज्ञान को मारना है!

हमारी हर मुसिबतों को हराना है!

हमारी हर तकलीफों को मिटाना है!

हमारी हर उलझनों को सुलझाना है।

तो ऐकता

तो ऐकांत

तो धैर्यता

तो निडरता

तो वीरता

तो अडगता

तो श्रेष्ठता

तो निपुणता

तो पवित्रता

तो द्रुडता

तो सज्जनता

तो सत्यता

तो कृतज्ञता

तो विद्वता

तो धर्मता

तो राष्ट्रता

तो विशालता

तो विराटता

तो अभयता

तो नैतिकता

न दुश्मन होगा

न द्वैष होगा

न रोग होगा

न भोग होगा

न क्रूरता होगी

न घृणा होगी

समझलो 🙏

अपनालो 🙏

स्वीकारलो🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने जीया की
मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने दीया की
मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने पिया की
मैया मोरी मैं कासे कहूं अपने किया की

संस्कार समझ्यो न कुछ
कैसे समझू अपने धर्म की प्रार्थना

संस्कृति समझ्यो नाही
कैसे अपनाये आत्म की याचना

प्रेम प्रीत समझ्यो नाही
कैसे लुटाये दिल की विरहना

जीवन सिद्धांत समझ्या नाही
कैसे आनंद पाये कर्म साधना

समझ्यो केवल एक ही भाषा
मैं ही मैं ही हूं मैं ही मैं ही हूं

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

हे प्रभु! हमें ऐकता दे

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सर्वसिद्धांतवागात्मा भक्तिवाक्परिपालक

भक्तकार्यकनिरतो भक्तिरत्नप्रदायक

हमारी संस्कृति ऐसे सिद्धांतों से घडाई है - ऐसे अनुभवो से रचाई है - ऐसे प्रज्ञान से अनुभवाई है - जो अपनाये वह पूर्णता पाये।

हम कहीं प्रकारके विचार विमर्शों में अपने आपको भरे - धकेले - डूबे रहते है - रखते है। इसलिए हम अपने आप को यह दिशा और पथ पर कदम नही उठा सकते है।

दूसरा जो यह जागृतता का माध्यम और मार्गदर्शक न ऐसे माता पिता - न शिक्षक आचार्य या ब्राह्मण या कुलगुरु है। जो सही संस्कार और शिक्षा जगाये।

धन - कैसे भी प्रकार का धन - कैसी भी रीत का धन - किसीका भी धन - कोई भी आचार प्रदान का धन सम्मलित करो। यही ही हमारी यथार्थता और सार्थकता है।

नहीं🙏

जो भक्तकार्यकनिरतो वो सदा भक्तिवाक्परिपालक हो

जिससे वह

सर्वसिद्धांतवागात्मा हो वो भक्तिरत्नप्रदायक हो।

यही तो हमारी मनुष्य जीवन की योग्यता है।

इससे ही हम पूर्णता पा सकते है।🙏

बाकी तो भटकना, अटकना, लटकना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

जीवन की कितनी घडी?
जीवन के कितने पल?
जीवन के कितने घंटे?
जीवन के कितने दिन?
जीवन के कितने सप्ताह?
जीवन के कितने पखवाडिक?
जीवन के कितने मांह?
जीवन के कितने त्रिमांह?
जीवन के कितने छमांह?
जीवन के कितने वर्ष?
जीवन के कितने दशक?
जीवन की कितनी सदी?

सोच लो कितनी घडी?
सोच लो कितनी सदी?

तफावत है कितनी? और कितने?

हम कितने कितने करते है
जो भी करेंगे कितने
हम कभी भी कितनी नही करेंगे
जो कितनी किया वोही जीवन जीत गया
कितनी सूक्ष्म है
कितनी यथार्थी है
कितना शक्तिशाली है
कितनी बलवान है
कितनी श्रेष्ठ है

कितनी को अपनाया संसार जीत लिया
कितनी से जो पाया वह धर्म को धरा
कितनी श्रुति - कितनी ऋचा
कितनी साक्षरता कितनी वैविध्यता
कितनी नम्रता कितनी करुणा
कितनी योग्यता कितनी विराटता
कितनी पुरुषार्थता कितनी सुसंगतता

कितनी सम्मलित करती है
जो सम्मलित है वह विजयी है।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चतुर्थप्रिया "

पुष्टिमार्ग के संस्थापक श्री वल्लभाचार्यजी ने यह उपाधि - यह हृदयता - यह सर्वोच्चता श्री यमुनाजी को प्रदान की है।

क्यूँ और कैसे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कौन कैसा?
कौन कैसे सोचे?
कौन कैसे स्वीकारे?
कौन कैसे कहे?
कौन कैसे सुने?
कौन कैसे देखे?
कौन कैसे अपनाये?
कौन कैसे माने?
कौन कैसे समझे?
कौन कैसे समझाये?
कौन कैसे दे?
कौन कैसे ले?
कौन कैसे रहे?
कौन कैसे जताये?
कौन कैसे बताये?
कौन कैसे लुभाये?
कौन कैसे लुटे?
कौन कैसे ज्ञाने?
कौन कैसे जाने?
कौन कैसे जीये?
कौन कैसे तुटे?
कौन कैस जुडे?
कौन कैसे खोये?
कौन कैसे डूबे?
कौन कैसे भूले?
सच! हम स्व चिंतन करे
यही स्व चिंतन से जो जागा और अपनाया
न रोग
न भोग
न शोक
न वियोग
न दु:ख
न भूख
न भय
न जोग
कितने जन्म गये?
हम कैसे?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नरसिंह - नृसिंह "

नर + सिंह

नर अर्थात पुरुष

सिंह अर्थात श्रेष्ठ + उत्तम

जो नर में श्रेष्ठ - नरश्रेष्ठ

जो नर में उत्तम - नरोत्तम

काल - अनेकों प्रकार के काल नर नारी पर मंडला रहता है और नष्ट करता रहता है। यही अनेक प्रकार के कालों को केवल सिंह ही मार सकता है - यही सिंहता का रुप अपनी अंदर भक्त प्रहलाद की भक्ति जैसी आरुढ करवानी है और धर्म की धैर्यता प्रकटानी है तब ही हममें नरसिंह स्वरूप का प्राकट्य होगा और हर दुश्मन, दुष्ट का नाश होगा।

हर हर में नृसिंह प्रकटे हर हर स्वस्थ और आनंदित रहे यही श्री नरसिंहजी को प्रार्थना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मतिः "

अदभुत! श्री वल्लभाचार्यजी अदभुत!

आपने भव भव के रोग की औषधि बतादी 🙏
आपने जन्म जन्म के फेरे की दुविधा मिटादी🙏
आपने गौलोक धाम के मार्ग की दिशा दोरदी🙏
आपने मनुष्य जीवन के पुरुषार्थ की दिक्षा देदी🙏

हे आचार्य! मेरा साष्टांग दंडवत प्रणाम🙏

स्मरणं भजनं चापि - नित नित अर्थात अतूट - अचल - अजपाजाप भजनं स्मरणं चापि - हम पहचान जायेंगे हम कौन है?

हमारी क्षणभंगुरता ही हमें हराती है - मारती है - लटकाती है - लुटकाती है।
न त्याज्यमिति मे मति - हमने हमारी मति त्याज्य दी
हमने हमारी मति त्याग दी
हमने हमारी मति छोड दी
तो हम कौन?
नही पता
यही तो अपना जन्म का मूल है - जो हमें अवश्य पहचानना है।

हे वल्लभ! हमें सदा जागृत करना हमारी मति को योग्य दिशा मिले🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

माता पिता ही थे संस्कार सिंचने

कुटुंब ही था योग्य घडने

गुरुकुल ही था विद्या पाने

खेती ही थी व्यवसाय करने

वनस्पति ही थी अन्न आरोगने

नदी ही थी जल पीने

जंगल ही थे घर बांधने

प्रकृति ही थी आँचल ओढने

सूर्य ही था प्रथम यज्ञ करने

धरती ही थी स्व स्थान चूनने

वायु ही था सांस लेने

आकाश ही था समय समझने

सागर ही था यात्रा करने

ऐसे जीते जीते वैज्ञानिक भये

ऐसे जीते जीते चिकित्सक बने

ऐसे जीते जीते शिक्षक भये

ऐसे जीते जीते संशोधक बने

ऐसे जीते जीते याज्ञिक भये

ऐसे जीते जीते धार्मिक बने

ऐसे जीते जीते नियामक भये

ऐसे जीते जीते न्यायिक बने

ऐसे जीते जीते तपस्वी भये

ऐसे जीते जीते तकनीकी बने

ऐसे जीते जीते शास्त्री भये

ऐसे जीते जीते खगोली बने

ऐसे जीते जीते खेडूत भये

ऐसे जीते जीते नाविक बने

ऐसे जीते जीते व्यापारी भये

ऐसे जीते जीते जातिय भये

आज ऐसे जीते जीते क्या क्या हो गये

युग युग से युगोत्समी हो गये

काल से कालास्मी हो गये

समय समय से सामायिक हो गये

समझ समझ से सामाजिक हो गये

कोई कहे आध्यात्मिक हुए

कोई कहे आधिदैविक हुए

कोई कहे आदिभौतिक हुए

ऐसे कहते कहते हम वादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम आबादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम गादी हो गये

ऐसे कहते कहते हम बरबादी हो गये

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

हे परमात्मा! जो भये जो बने

तेरे है तेरे ही है तुझसे ही है

अब क्या होंगे जो होंगे पता नही

हाँ! इतना पता है - तु हमारा परमात्मा है

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



हे श्री वल्लभ प्रभु!

हे श्री यमुना प्रिये!

हे श्री व्रज राज धिराज!

गिरिराज परिक्रमा

सप्तम कुंड परिक्रमा

अष्टम वन परिक्रमा

नवम बैठक परिक्रमा

व्रजरज परिक्रमा

मेरे मन बसाये मेरे मन तरसाये

मेरे मन दौडाये तेरे ही शरण

यमुना निकुंज

यमुना निकुंभ

यमुना लीला स्थली

यमुना गोप स्थली

यमुना गोपि स्थली

यमुना तट तट बंसी वट वट

प्रेम रास खेले तेरे ही शरण

हे प्रिये गोपाल!

हे प्रिये गोविंद!

हे प्रिये गोवर्धन!

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राधा!

तुझमें जो स्पर्श है जो मैं पहचानता हूं

तुझमें जो असर है जो मैं अनुभवता हूं

तुझमें जो जागता है जो मैं स्पर्शता हूं

तुझमें जो तडपता है जो मैं सुलगता हूं

तुझमें जो दर्द है जो मैं थरथराता हूं

तुझमें जो आग है जो मैं दहकता हूं

तुझमें जो विरह है जो मैं सिसकता हूं

तुझमें जो अश्रु है जो मैं चुभता हूं

रैना रैना सदा जागती नैना

मंद मंद लहराता पवन अंग अंग जलाता है

शीतल प्रकाशती चांदनी सांस सांस अग्राती है

महक महकती महक याद याद झुरराती है

टिमटिमाते तारें नैनों में तेरी तस्वीर निहारती है

तु कहे - मैं यहा मथुरा की अटारी पर भटकता लडखडाता सिसकता तेरी यादों में खोया - क्या हूं?

💦💦💦💦💦💦💦💦💦💦💦

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷



" भैया गोकुल कब चलोगे? "
प्रश्न है - भैया गोकुल कब चलोगे?
कौन प्रश्न करता है - किसे करता है?
प्रश्न वह करता है जिन्हें गोकुल जाना है
उन्हें प्रश्न करता है जिन्हें गोकुल ले जाना है या जाने के लिए संकेत करते है।
प्रश्न करता है - जो तैयारी के साथ खडा है गोकुल जाने की
जिन्हें प्रश्न करता है वह तैयार नही है गोकुल जाने के लिए
अर्थात
एक द्रुडता से गोकुल जाने के लिए तैयार है
दूजा जिन्हें तैयार होना है गोकुल जाने
हमारा मन सदा यही परिस्थिति बार बार खडी करता है
जाना है - सोचते है
बस यही हमारी स्वस्थता - अवस्था
और हम पूरा जीवन जी ले पर न गोकुल जायेंगे
बार बार - यूं - ऐसा - हाँ कल - नही ऐसा - तय करते है - चलेंगे
और आखिर
अब पछताने से क्या जब चिडिया चूक गई खेत
ऐसे जीते जीते तो नही जीते है
ऐसे जीते जीते तो मरते रहते है
ऐसे जीते जीते तो डूबते रहते है
और आखिर
रह जाता है केवल
भैया गोकुल कब चलेंगे?
आज का जीना?
आज का जीया?
आज का जीवन?
आज का मन?
आज का अर्थोपार्जन?
आज का व्यवसाय?
आज का व्यापार?
आज का व्यवहार?
गोकुल पहूंचे तो भी मन गोकुल में नही
कब कैसे कितने जन्मों से गोकुल नही पहूंचे?
भटक भटक - लटक लटक
हे गोकुलवासी! ख्याल हमारा रखना 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कॉरोना तु ना जइयो किसीके द्वार
ना जइयो किसीके द्वार ना जइयो किसीके द्वार

अधैर्य मन हम प्राणी धरती के
अनघड अधूरभण ज्ञान विज्ञान के
कैसे जीये एकदूजे तोल ना जइयो किसीके द्वार

मंदिर मस्जिद गुरु द्वारे बंध से
कामकाज रोजगार व्यापार ठप के
कैसे जीये बिना कारोबार ना जइयो किसीके द्वार

उबाल मसाला गर्म गलोला पी के
जल औषध हाथ मुखडा धोय के
कैसे करे जीवन व्यवहार ना जईयो किसीके द्वार

हे तारणहार प्रभु!
लीला कर कोई ऐसी अपरंपार
तेरे सहारे तेरे आधारे आश लगा के
ऐसी करे गुजार प्रभु! ना पहुंचे कॉरोना किसीके द्वार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



जीत गया जीत गया
कॉरोना को जीत गया
बिना पैसा बिना इलाज
बिना मान्यता बिना सलाह
जीत गया जीत गया
कॉरोना को जीत गया

कहींओ को देखा ऐसा किया
कहींओ को सुना ऐसा किया
कहींओ ने बताया ऐसा करो
कहींओ ने जताया ऐसा करो
नही दवा खाई नही औषधि पीया
नही चिकित्सक बताया नही बैध दिखाया
घर में ही रहा घर का ही खाया
गृह में पाया इलाजों का दीया
प्रकृति से हम प्रकृति से सफाया
कोई कहें हम जानते थे
कोई कहें हम करते थे
कोई कहें हम समझे थे
कोई कहें हम संभलें थे
योग किया उकाला पीया
चूर्ण खाया मसाला खाया
मास्क पहना दूरी रख्खी
न बाहर खाया न बाहर का खाया
कडी कडी सलामती धरी
कमरे में बैठा दिन गीन गीन के
डरता रहा हर सांस स्पर्श से
मंत्र जपता अनुष्ठान स्थाप्ता
जाप गुनगुनाता बिनती करता

आज पाया कॉरोना हराना
नही चाहिए कोई सलाहकार
नही चाहिए कोई चिकित्सक
नही चाहिए कोई अंधश्रद्धा
नही चाहिए कोई मान्यता
मुझमें है मैं ही लडूंगा
मुझमें है मैं ही हराऊंगा
सलामत रहे सलामत रखेगा
सोलह संस्कारों से खुद बंधाना
गीता ज्ञान से शक्ति सिंचना
शिस्त सिद्धांतों से खुद संवरना
हर हितैषी सेवा पूजा आदरना
हर धर्म मूल संस्कृति जगाना
रोम रोम पवित्रता लुटाना
बिना स्वार्थ हर पुरुषार्थ निभाना
गृह अग्नि से हर अवैध जलाना
गृह जल से स्व में अमृत धरना
गृह भूमि से अनित्य मारना
गृह वायु से धृष्टता धिक्कारना
गृह आकाश से विश्वास बाटना
गृह बंधारण से धर्म अपनाना

शायद तब भी आये दुष्टता
यही शिष्टाचार से कदम मिलाना
अपना हाथ ही है जगन्नाथ
अपना साथ ही है श्री नाथ
दौड कर आयेंगे हे सत्य नाथ
नाथेंगे कॉरोना के हर क्रूर प्रहार

कहीं जीये कहीं जीते है
जो अपनाये न कष्ट भराये
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



खुद को खुदा कर दे तो ये सूरज झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये आसमान झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये धरती झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये सागर झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये चंद्र झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये प्रकृति झुके
खुद को खुदा कर दे तो ये परमात्मा झुके
एक ही है ऐसा झुकाने वाले
जो है मेरा प्रिये
जो है मेरे प्रियतम
जो है मेरे प्रेमी
जो है मेरे अंतरयामी
जो शृंगार सजे वनस्पतियों के
जो खेल खेले रज रज से
जो लीला करे जल धारा से
जो मुहं में रखे गोरस मिसरी
जो अधर धरे संगीत सरगम
जो मस्तिष्क बांधे मयूर पंख
जो अंग अंग धरे प्रेमाग्नि
जो सांस सांस भरे भक्त महक
जो कदम कदम संहारे अधर्मासुर
जो तिरछी नजर इशारे प्रेमामृत
जो टेडे चरण खडे राधिका दूत
वाह मेरे गोविंद
वाह मेरे गिरिधर
वाह मेरे गोपाल
वाह मेरे गौरक्षक
वाह मेरे गौधूले
वाह मेरे गूंजाधर
वाह मेरे गौरस
वाह मेरे गोवर्धन
वाह मेरे गिरिराज
वाह मेरे गीताकार
वाह मेरे गौरीवर
प्रणाम🙏 प्रणाम🙏 प्रणाम🙏 प्रणाम🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आत्मा " हर हर मैं है।
" आत्मा " हर हर के है।
" आत्मा " हर कोई है।
" आत्मा " हर ही है।

कहीं वेद अध्ययन किये
कहीं शास्त्र पढें
कहीं आध्यात्मिक चिंतन धरे
कहीं एकांत तपस्या आदरें
कहीं मंत्र अनुष्ठान आयोजे
कहीं चारित्र्य कथा विवेचने
कहीं स्थली परिक्रमा घूमें
कहीं कुंभ स्नान न्हाये
कहीं पर्वत दर्शन प्रणामे
कहीं धर्म सभा शिबिरे
कहीं कर्मकांड पूजें
कहीं परम चैतन्य आराधे

हर हर आत्मा से ही प्रजवले

यह " आत्मा " जो हर हर जाने
है मुझमें अंश कोई जो मुझे जीआये
है मुझमें ज्योत कोई जो मुझे प्रजवलाये
है मुझमें चिनगारी कोई जो मुझे जगाये
है मुझमें तिनका कोई जो मुझे अग्नाये

जाने अवश्य पर मनाये मन
भूले कभी कभी न भूले मन
मन ही सबकुछ नही आत्मा कुछ
मन ही मान्यता नही आत्मा सबकुछ
मन स्वीकारे तो है आत्मा
मन अहवेले तो पता नही आत्मा
मन है तो ही आत्मा है
मन से ही है आत्मा
यही हमारा अज्ञान
हे आत्मा कैसे हो कल्याण?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चंद्र पहुंचे मंगल पहुंचे
पहुंचे सागर नदी पर्वत
धरती पहुंचे वायु पहुंचे
पहुंचे पशु पंखी वनस्पति
भौतिकता के स्व में पहुंचे
दैविकता के दैवत्व पहुंचे
पहुंचे मन मन की मुमुक्षा
यहां पहुंचे जहां पहुंचे
प्रकृति के डग डग पहुंचे

हे पृथ्वीवीर!
तु ज्ञानी तु वैज्ञानि
तु पुरुषार्थी तु जिज्ञासी
कदम कदम तु विद्यार्थी
जीते चले जीये चले
ब्रह्मांड रचना समझते चले

अभिनंदन 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पहचान है

मेरा बेटा है

मेरी बेटी है

मेरा जमाई है

मेरा भाई है

मेरी बहन है

मेरे जीजाजी है

मेरे बहनोई है

मेरे काका है

मेरी काकी है

मेरे मामा है

मेरी मामी है

मेरे दोस्त है

मेरे सगा वहाले है

मेरे पडोसि है

मेरे निकट के है

हाँ! मेरे रिश्तेदार है

हाँ हाँ! मेरे निकट के है

हाँ हाँ! अवश्य साथ निभायेंगे

कोई नही चिंता करो

हम है न!

कितने व्याक्य!

कितने आश्वासन!

कितना सहारा!

कितनी निकटता!

कितना रिश्ता!

कितना स्नेह!

कितना साथ!

सच! चारों ओर से विश्वासों की झडी

और

हम स्वस्थ

हम खुश

हम आनंदित

हम निश्चिंत

हम अभय

हम सामाजिक

हम सहायक

हम बलवान

हम उर्जावान

हम घनवान

हम सुरक्षित

यही ही हमारी सही पहचान है 🌷🙏🌷

भगावो हर दुश्मन को साथ साथ जुड के

नाथो हर रोग को मानवता जगा के

कौन क्या है?

यही ही मौका है सेवा समझना

सेवा समझते भक्त होना

भक्त हो कर भगवान पाना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ प्रभु! हे विठ्ठल प्रभु!

आपको दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

सांसों की माला ऐसी रची है

जैसे पौधे पर उगते फूल

कर्मो की कर्मिष्ठा ऐसी घडी है

जैसे पर्वत से बहती धारा

मन की झडीयां ऐसी उदभवी है

जैसे उठती रैत में मृग जल

नैन की द्रष्टि ऐसी तृष्टि है

जैसे क्रियाओं की प्रमाणीता

अधर की मौनता ऐसी बंधी है

जैसे पशुओं की प्रतिबद्धता

कर्णो की सजागता ऐसी गूंजती है

जैसे मंदिर की घंटारवता

तन की स्पंदनता ऐसी भूनी है

जैसे अचरज रोगों की माया

सच! वल्लभ 🙏 सच! विठ्ठल 🙏

तुमने कैसे घटी पुष्टिमार्ग गाथा?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सोचता रहता हूं
सोचता रहता हूं
जन्म अकेला धरना
साथ साथ जीवन जीना
मृत्यु अकेले पाना
साथ साथी का छोडना

न मन साथ
न तन साथ
एक आत्म और पुरुषार्थ का सिद्धांत
साथ साथ और साथ
पता नही कहां जाना
पता नहीं कहां पहुंचना
पर जाना अवश्य
कहीं मान्यता से माने
यह पायेंगे वहां पहुंचेंगे
पर न कोई बता पाया
कहां क्या क्या है

हम चल पडे
हम ठहर पडे
हम हम हम और हम

हाँ! होती है माता मेरी
बस बाकी हर कोई माता आधारित

है ही ऐसा
तो क्यूँ हम भी रख्खे किसीका
यह मेरा यह मेरी
जब जन्मता हूं तो माता मेरी
जब मृत्युता हूं तो मैं अकेला
चला जाता हूं चला जाता हूं चला जाता हूं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खेल

हम किस किस को खेल कहते है?

हम कुछ सोचते है कुछ करने

हम कुछ आयोजन करते है कुछ करने

हम कुछ बातचीत करते है कुछ करने

हम कुछ कहते है कुछ करने

हम लिखते है कुछ करने

गहराई से समझे तो खेल है

हमने कहीं शास्त्रीओं से सुना खेल खेलने यह जीवन खेला रचा है परम खेलाडी ने

कब कैसे कौनसा खेल खेले कोई नही जानता

बस हम जीते जीते समझते जाते है

परम खेलाडी खेल खेलते खेलते हमें उनके जैसा बनाने की कोशिश करता जाता है

अपने सिद्धांतों और कर्म फल आधारित सबको खेल खिलाता है

जो अपने जैसे होता जाता है उन्हें अपना दास रुप परिवर्तन करते करते अपना रुप में ढालता है

जीवन का रहस्यों से अवगत करता है

अपनी लीला से रसो वैस करता है

यही खेल खेलते रहे खेलाडी हमें अपना बनाते रहे

यही है खेल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य जीव जन्म जीवन पाया है

सटीक सटोसट सार्थक करने

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण की निरस्कृती

जीव होगा जन्म होगा जीवन होगा मनुष्य नही हो सकते तो

जीवन समझे

जन्म समझे

मनुष्य जीव समझे

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण को आत्म स्मृति सिंचते

मनुष्य जीव जागा जन्म जागा जीवन जागा आत्म जागेगा

आत्म जागा

कर्म जागा

पुरुषार्थ जागा

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण को जगाते जगाते

परमार्थ पाया

यथार्थ पाया

कृतार्थ पाया

सूक्ष्म से सूक्ष्म क्षण से आनंद को समझा

अखंडानंद को समझा

परमानंद को समझा

स्वराटानंद को समझा

यही ही मनुष्य जीव जन्म जीवन की महत्वता - योग्यता - विशिष्टता

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे परम मित्र!
आपको दंडवत प्रणाम 🙏
आप मेरे परम क्यूँ हो?
हर क्षण आप मेरा कितना ख्याल रखते हो।
हर क्षण आप मुझे कितने दिशा निर्देशक हो।
हर क्षण आप मुझ पर कितने कृपार्थी हो।
हर क्षण आप मुझे कितना सांकेतिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने दार्शनिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सूचनिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने मार्गदर्शिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने हितेषी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने जागतिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने ऋणी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने उतकृष्टि हो।
हर क्षण आप मेरे कितने वशिष्ठ हो।
हर क्षण आप मेरे कितने कृतज्ञि हो।
हर क्षण आप मेरे कितने वैश्विक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने उर्जित हो।
हर क्षण आप मेरे कितने लाक्षणिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सात्विक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने पारदर्शक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सहध्यायी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने साक्षी हो।
हर क्षण आप मेरे कितने माध्यम हो।
हर क्षण आप मेरे कितने मधुर हो।
हर क्षण आप मेरे कितने विशेष हो।
हर क्षण आप मेरे कितने विश्वनीय हो।
हर क्षण आप मेरे कितने आदरणीय हो।
हर क्षण आप मेरे कितने निश्चित हो।
हर क्षण आप मेरे कितने धार्मिक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने क्षमाशील हो।
हर क्षण आप मेरे कितने रक्षक हो।
हर क्षण आप मेरे कितने सकारात्मिक हो।
आपको वंदन🙏
आपको नमन🙏
आपका सेवक🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज रज "

रज पर्वतों की चट्टानों से तुट तुट कर उबड खाबड मार्गो से टकरा कर

नदियों की धारा से पिघलते पिघलते जल बूंदों से टकराते

हवाओं के बवंडर में उडते कहींओ से टकराते

रेत रेत कण कण और अति सूक्ष्म रज में रुपांतर होती है

यह सूक्ष्म रज जब गौ के चरण से टकराते, दबाते गौधूली हो तो

यही सूक्ष्म रज जब गौचारण के वक्त प्रेम वत्सल कन्हैया के चरणों के स्पर्श से प्रेम रज हो तो

यही सूक्ष्म रज जब अनेकों अनेक विरह वेदांता भक्त स्मरणांजल श्रम से भटकते, लडखडाते, तडपते पैरों से कुचलते व्याकुल रज हो तो

यही सूक्ष्म रज बाललीलाओं से खेले गई श्री यमुना निकुंज की मिलन धारा से बहते बहते प्रेमोत्मक उत्कृष्टता के स्पर्श से चिपके धरती, प्रकृति पर स्थिर हो तो

वह स्थली - वह मार्ग, वह धूली, वह कण, वह रज

जो सांस भरते मधुर महक प्रसराय

जो निहालते नैन रोमांच अनुभवे

जो डग भरते आनंद स्पंदन जगाये

जो मन अपने आप स्थिर हो जाय

जो तन अपने आप लिपटाता जाय

जो अंग अपने आप सुलगने लगे

जो आत्म अपने आप हिलोरे झुमने लगे

जो अधर अपने आप प्रियतम पुकारे

जो हर ओर श्याम रंग ही रंग सोहाय

यही "व्रज रज" है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मानस चरित्र" के नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता किसने घडा?

कहीं युगो और काल की ओर गहरा ध्यान करेंगे तो पूर्वजों पूर्वजों की ओर केन्द्रित होता है - जिन्होंने जीते जीते अनुभव पाते पाते - व्यवस्था करते करते कहीं नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता का गठन और बंधन घडे।

आज हम भी ऐसे ही अविरत घडते जाते है - जीवन जीते जाते है। इसलिए तो विविधता - विभिन्नता - विखवादता - विघटनता - विपरीतता आदि में लपटाते - मान्यता बंधे जीवन जीते जाते है और स्व मूल्यांकन करते जाते है।
यह वडिल इसलिए ऐसा
यह गुरु इसलिए ऐसा
यह विज्ञान इसलिए ऐसा
यह मातापिता इसलिए ऐसा
यह मित्रवर्ग इसलिए ऐसा
यह चारित्र्य इसलिए ऐसा
यह मानसिकता इसलिए ऐसा
यह अनुभव इसलिए ऐसा
यह समाज इसलिए ऐसा

एक उम्र - एक कक्षा हम स्व निर्णायक होते है

बस!

जो स्व को रचा - सोचा - समझा यही हम - यही हमारा जीवन - यही हमारा चरित्र - यही हमारा धर्म - यही ही हमारा नियमन - संस्कार - शिष्टाचार और सभ्यता।

नजर ऐसी
स्वर ऐसे
अन्न ऐसा
व्यवहार ऐसा
समय ऐसा

हमसे ही हमने रचा
वोही इनसे बचा
जो सैद्धांतिक - सत्य आचरण आधारित नियमन - संस्कार - शिष्टाचार - सभ्यता को अपनाये।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बरसती बूंद

स्पर्शते तन

उठता स्पंदन

थनगनता मन

गुनगुनाता अधर

पुकारते सूर

नजरों में प्रितम

नजारों में प्रितम

बहारों में प्रितम

लहरों में प्रितम

घनघोर में प्रितम

गडगडाहट में प्रितम

बिजली में प्रितम

आसमान में प्रितम

मेघो में घनश्याम

श्यामा में श्याम

नैन में घनश्याम

काजल में श्याम

अंग अंग में श्याम

रग रग में श्याम

रंग रंग में श्याम

सांस सांस में श्याम

हे श्याम!

तु ही मेरो घनश्याम

तु ही मेरो प्रियतम

तु ही मेरो प्रेम

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आआआआअअअ
हे राधा
हे गोपि
मुझे मुझे भाये
व्रज परिक्रमा झुमना
झुम के छूए गौचारण गोपाल
गोपाल गोपाल गोपाल
मुझे मुझे भाये
व्रज परिक्रमा झुमना
ओओओओआआआआ
हे यमुना
हे सखी
मुझे मुझे धाये
व्रज लीला स्पर्शना
स्पर्श से रज रज मोहना
मोहन मोहन मोहन
मुझे मुझे धाये
व्रज लीला स्पर्शना
आआआआअअअ
ओओओओआआआआ
हे राधा
हे गोपि
हे यमुना
हे सखी
मुझे मुझे भाये
मुझे मुझे धाये
वृंदावन परिक्रमा
व्रजरज स्पर्शना
ओओओओओओओ
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" निर्जला एकादशी "

निर्जल - कभी सोचा है - हम निर्जल हो सकते है?

कभी सोचा है - यह निर्जला एकादशी क्यूँ?

प्रथम प्रश्न का उत्तर है - कोई भी जीवन निर्जल नही है। जल से ही जीवन जल ही जीवन।

अखंड ब्रह्मांड जल जल जल - रसो-वै-स

रस - जल से

जीव - जल से

जीवन - जल से

तो यह निर्जला एकादशी हमारी संस्कृति में क्यूँ?

शास्त्रों ने विष्णु भगवान से जोडा

शास्त्रों ने भीम पांडव से जोडा

क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" निर्जल " अर्थात बिना जल

" निर्जल " अर्थात शुद्धता - आंतरिक और बाह्य

" निर्जल " अर्थात बिना जल

हमारी आध्यात्मिक - आदिदैविक - आदिभौतिक बंधारण से समझे तो बिना जल अस्तित्व नही है।

वैज्ञानिक समझ - धर्म सिद्धांत समझ बिना जल हमारी प्रकृति - संस्कृति और कृति नही है।

जल है तो जहां है - जल है तो हर हर है

तो यह जल कैसा होना चाहिए हमारे में और हमारे जीवन में और हमारे कर्तव्य में और हमारे पुरुषार्थ में?

हमारे ऋषिमुनियों ने जो " निर्जला एकादशी " का पर्व संस्थापित किया - वह एक दिन का है, पर वह हर घडी के लिए कहीं योग के द्वार खोल देते है।

हर युग के जीवन को यह " निर्जला एकादशी " अनेकों प्रकार के आध्यात्मिक, आदिदैविक, आदिभौतिक और वैज्ञानिक सिद्धांतों श्रेष्ठता के लिए शिक्षित और प्रमाणित करते जाते है।

यह कोई मान्यता या अंधश्रद्धा का पर्व नही है। यह अपने आपको - अपने जीवनको - अपने कर्मको - अपने धर्मको विशुद्ध और पवित्र करता है।

यह कोई वार्ता या पौराणिक कथा आधारित संस्थापना नही है। यह जगत नियमन - प्रकृति नियमन - सृष्टि नियमन और जीव नियमन सैद्धांतिक विज्ञान है।

जो स्वीकारना ही है - अपनाना ही है।

जिसने स्वीकारा और अपनाया वह निर्मोही - निरोगी - निस्संदेह - निस्पृही - निश्चिंत।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जब फूल कोई खिलता है
प्रितम की महक महकाती है

जब बादल कोई बरसता है
प्रितम की चुभन भिगती है

जब कोयल कूहूक गाती है
प्रितम की धून गूंजती है

जब झरना धारा गिरती है
प्रितम की बूंदें बिखरती है

जब मयूर पंख फैलाता है
प्रितम की कलगी बंधती है

जब सूरज किरणें उगाता है
प्रितम की मेघरंग रंगाता है

जब गीत संगीत गुनगुनाते है
प्रितम की पुकार सुनाती है

जब नील रंग आसमाता है
प्रितम की चुनरी संवरती है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छीन कर नैनों से काजल

मिटा कर तन से आँचल

तोड कर पैरों से पायल

छोड कर धडकन से प्रेमल

हटा कर मांग से गुलाल

बुझा कर जीवन से चौल

लुट कर दिल से दोल

चुरा कर मन से मोल

हे कान्हा! कैसा है यह तेरा तोल?

मैं कैसे रहूं तुम बिन सरल?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कैसा मन

कैसा तन

कैसा नैन

कैसा जीवन

जन्म से पाया हो

पर

जब दिल रचाया

हे प्रभु! तु हममें बस गया

चाहे हम कितने भी स्वार्थी हो

चाहे हम कितने भी बेवफा हो

चाहे हम कितने भी विश्वासघाती हो

चाहे हम कितने भी संदेही हो

चाहे हम कितने भी संशयी हो

चाहे हम कितने भी अहंकारी हो

चाहे हम कितने भी दुष्टकर्मी हो

चाहे हम कितने भी अधर्मी हो

हम तेरे

केवल तेरे

सिर्फ तेरे

तेरे ही है

क्यूंकि की दिल से

हम तेरी ओर खिंचाते खिंचाते तुझसे जुडते जाते है

इसलिए तो यह मन में करुणा है

इसलिए तो यह तन में सेवा है

इसलिए तो यह नैन में दया है

इसलिए तो यह जिवन में कर्म है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छूपा छूपी
छूपा छूपी
चांद खेले
छूपा छूपी
कभी बादलों के पीछे
कभी घनघोर के पीछे
कभी पर्वतों के पीछे
कभी जंगलों के पीछे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
गोपि खेले
छूपा छूपी
कभी आँचल के पीछे
कभी घूंघट के पीछे
कभी दुपट्टे के पीछे
कभी हथेली के पीछे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
गोप खेले
छूपा छूपी
नैन छूपे छूपे
मुखडा छूपे छूपे
पलकों छूपे छूपे
परदा छूपे छूपे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
प्रितम खेले
छूपा छूपी
इशारे छूपे
अदाऐं छूपे
नखरें छूपे
नजारे छूपे
छूपा छूपी
छूपा छूपी
प्रिये खेले
छूपा छूपी

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

" बहार के रास्ते पर वह भटक जाते है
जिसके मन की हर राह अंधेरी होती है "

बस। 🌷🙏🌷

यही है 🌷🙏🌷

कौन किसको क्या कहे? 🌷🙏🌷
[07:12, 6/26/2021] Pankaj Shah: न्यारी प्यारी व्रज रज दुलारी
जिसने छूआ हुए प्रेम पुजारी

गोप ने छूआ गोपि ने छूआ
हुए राधा हुए बांकेबिहारी

संत ने छूआ भक्त ने छूआ
हुए हरिवंश हुए प्रेम प्रखारी

मीरा ने छूआ चैतन्य ने छूआ
पायी अखंड प्रेम मिलन समाधि

ऐसी अनोखी ऐसी अनुरागी
जो घट घट प्रेम जगाई

हे मेरी प्रिये राधा। हे मेरे प्रिये कान्हा
तुझ संग मैं रंग रंग लिपटाई

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कमाल का शब्द है

शायद हिन्दुस्तानी का अलभ्य और चहिता शब्द

देखा, पढा, समझा और भेजते ही रहना

जब तक न थके

कोई समझे या न समझे

कोई माने या न माने

कोई कहे या न कहे

कोई रोके या न रोके

कोई टोके या न टोके

जो भेजे वह ऐसा समझ कर भेजे जैसे उन्हीं का रचा, लिखा और गौरवपूर्ण 🌷🙏🌷

कहीं तो मजबूरन ऐसे संदेशों को या चित्रजी को सांस्कृतिक और धार्मिक पाप पुण्य की तोल में घसीटते रहते है।

शायद ऐसे घुमाते घुमाते कितने घुमे कितने घुमाये

शायद ऐसे बार बार देखते, पढते, समझते गौरव अनुभवते अपने आप को सांस्कृतिक सेवक और नायक मानते है।

मैं प्रार्थना और विनंती करता हूं 🌷🙏🌷

ऐसे समझदार और संस्कारी समाज को चिंतन कर के और समझ कर स्व वैचारिकता या अनुभवता रजू करने से हममें जागृतता और शिष्टता संस्कारित होगी 🌷🙏🌷

सत्य समझना सर्वे की आवश्यकता है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलते चलते चलते गये

चलते गये चलते गये

दूर दूर दूर दूर दूर दूर

कहीं रास्ते मिले

कहीं गाँव मिले

कहीं झाडियां मिली

कहीं पर्वत मिले

कहीं आकाश मिले

कहीं पंखी मिले

मिलते मिलते ऐसे खिले

जैसे टिमटिमाते तारें

जैसे बागों में फूल

जैसे पर्वत पर झरनें

जैसे जंगल में पंखी

किसीका इशारा

किसीका मुसुकाना

किसीका शीतलना

किसीका कूहूकना

मुझे मेरा जीना आनंदित कर दिया

मुझे मेरा धर्म हराभरा कर दिया

मुझे मेरा कर्म आर्तकृष्ट कर दिया

मुझे मेरा जन्म सेवकिय कर दिया

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गंभीरता से समझना है

सृष्टि में कितने प्राणी?

देव

मानव

दानव

पशु

पंखी

किटाणु

जंतु

और वनस्पतियां

अति गहराई से सोचे

यही समतोलन सृष्टि में

अगर कोई जीव सृष्टि की मात्रा अपनी वैचारिकता, मान्यता और बुद्धिमत्ता से अधिक बढे

तो

अवश्य कौई जीव सृष्टि की मात्रा घटती जाय

और

जो जीव की मात्रा घटे उसी ही प्रकार वही ही जीव सृष्टि उदभवे🌷🙏🌷

यह सिद्धांत को समझना है

यह समतोलनता हममें और हमारे यहां भी उत्पन्न हो सकता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पथ "

पथ का अर्थ होता है पगदंडी

पथ का अर्थ होता है राह

पथ का अर्थ होता है मार्ग

पगदंडी - राह - मार्ग

जो डग भरते भरते ध्येय पर पहुंचे वह पगदंडी

जो कदम बढते बढते मंझिल पर पहुंचे वह राह

जो संकल्प पुरते पुरते निश्चित पर पहुंचे वह मार्ग

अर्थात दंडी - राही - मार्गी

हम चलते है?

हम डग भरते है?

हम कदम बढाते है?

हम संकल्प पुरते है?

डग भरना - विद्या से

कदम बढाना - विश्वास से

संकल्प पुरना - पुरुषार्थ से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्मसम्बन्धकरणं नाम एतन्मार्गीयाचार्यद्वारा भगवन्निवेदनम् "

श्री वल्लभाचार्य जी के सुपुत्र के सुपुत्र श्री गोकुलनाथजी कहते है की " ब्रह्मस्म्बन्ध अपने संप्रदाय के आचार्य द्वारा भगवानके प्रति करवाया गया देह, इन्द्रिय, प्राण, अन्तःकरण समेत सर्वस्वका समर्पण "

बिलकुल सही और श्रेष्ठ 🌷🙏🌷

पर

आज यह तो सिद्ध करें की आचार्य कौन और कैसा है?

अनुयायी वर्गको इतना भ्रमित किया है की कोई जिज्ञासा पूर्वक भी सत्य और सिद्धांत की खोज या स्पर्श करने की कोशिश करे तो उन्हें बदनाम और तिरस्कार करके धुत्कारते है। 🌷🙏🌷

एक क्या हवेली या बैठकजी ट्रस्ट मंडल द्वारा प्रदान की है वह भी अपनी मालिकी समझ कर हर ट्रस्टी को लडाते रहते है। 🌷🙏🌷

जो अपने कुटुंब और अपनी ही गृहसेवा में कंकास - कलह उद्घघोषित करे वह समाजमें क्या नही कर सकते? 🌷🙏🌷

सिद्धांत आचरण से सन्मान

सिद्धांत सेवा से सन्मान

सिद्धांत प्रवर्तक से सन्मान

सिद्धांत सम्बन्ध से सन्मान

जागृत और योग्य जिज्ञासा करना सर्वे मनुष्य का मूल अधिकार है - हर व्यक्ति का न्यायिक समाधान, संदेह, संशय निवारण करना सामाजिक हर श्रेष्ठी की नैतिक शिष्टता और शिक्षा है।

यह कोई विरोधाभासी और द्वैष पूर्ण वैचारिक धारा नही है। 🌷🙏🌷

हर कोई को अपनी योग्यता सिद्ध करना और समझाना सत्य की ओर प्रकाशित करना है। 🌷🙏🌷

अहवेलना करना, धुत्कारना, तिरस्कार करना तो स्व की अयोग्यता प्रस्थापित करता है। 🌷🙏🌷

क्षमा, माफ करना, योग्य मार्गदर्शन करना, शिष्टता और शिस्तता प्रस्थापित करना ही हमारी हर एक की मूल प्राथमिकता है। 🌷🙏🌷

पुष्टिमार्ग का प्रारंभिक और प्राथमिक शिक्षा यही आज्ञा से है

" ब्रह्मसम्बन्धकरणं नाम एतन्मार्गीयाचार्यद्वारा भगवन्निवेदनम् "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

विनंती है - हर जिज्ञासा का योग्य अर्थ सैद्धांतिक रूप और सहमति से अपनायेंगे 🌷🙏🌷

मैया! ओ मैया!

मैया आज तुमने मुझे जरकसी जामा और रंग भरी बंडी जो पहनाई, इसके उपर यह सर पर पघडी और मयूर पंख बांधे, कपोल पर चंदन तिलक और कानों में कुंडल, गलेमें व्यंजित माला और माघ सा उपरणा, हाथों पर फूलों के गजरे और पैरों में छमछम पैजनिया।

मैया! कितना वात्सल्य भरा शृंगार सजाया है। मैया तु कैसी हे रे!

मुझे कितना व्हाल और प्रेम करती है और हर तरहसे मेरा ख्याल करती हो।

मैया! तु मेरी मैया और मैं तेरा छैया

मैया यह नैनों में काजल लगाया

न मुझे किसीकी नजर न लगे

यह गले में तुलसी माला

न मुझे कोई जादू टोना छूए

यह गाल पर काला टिपका

जो मुझे कोई अपनी ओर खिंच न ले

झुल्फों में बांधती ऐसा मोरपिंछ

कितनी भी भिड में पहचानाता

ओ मेरी मैया! ओ मेरी मैया!

कितनी सर्वोत्तम प्रेमोन्मादता

कितनी सर्वोच्च प्रेमोत्मक पराकाष्ठा

कितनी सर्वाधिक प्रेमोत्जना

कितनी सर्वश्रेष्ठ सेवार्थना

यही है पुष्टिभक्ति

यही है पुष्टिमता

यही है पुष्टिसुधा

यही है पुष्टिवित्तता

जो खुद को लुटाये खुद की तरह

जो खुद को समाये खुद की तरह

जो खुद को जगाये खुद की तरह

जो खुद को तडपाये खुद की तरह

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बृहत्वाद् ब्रह्म पुरुषोत्तम: तत्सम्बन्ध: तस्मिन् देहात्मनो: निवेदनलक्षण: "

अनोखी अनुभूति और आंतर साक्षात्कार करते हुए ऐसे व्याकरणार्थ - भक्तिप्रदायक शब्दों का उदघोष होता है।

श्री वल्लभाचार्य के सुपुत्र के सुपुत्र श्री रघुनाथजी अपने पूज्य पिताश्री के वंदनीय पिताश्री के चरणकमलों से पार्दुभाव होते संस्कार से स्व पुरुषार्थ करते करते ऐसी अनुभूति से ब्रह्म से संबंध करते, सिंचते, अपनाते और बांधते स्व जन्म, जीवन, देह, काल और तनमात्राओं को ऐसे अभिभूत करते है की उनकी आज्ञा से देह, तनमात्राओं, जीव और आत्मा का संबंध केवल परब्रह्म से जुडता है।

आज के ब्रह्म सम्बन्ध निवेदन से

चरण स्पर्शी

जमीन स्पर्शी

जायदाद स्पर्शी

स्त्री स्पर्शी

माया स्पर्शी

धन स्पर्शी

दोलत स्पर्शी

वंशज तो वोही है जो मूल संबंध को अति तेजोमय से प्रजवल्लित करें।🌷🙏🌷

कुल तो वोही है जो मूल संस्कारों को अपना कर अंधकार, अंधश्रद्धा, अज्ञान, और असैद्धातिंक मान्यता को दूर करे।🌷🙏🌷

वंश परंपरागत से तो स्व, समाज, संस्कृति संपूर्ण होती है - अगर अज्ञानता, अराजकता, अविद्या, असमंजस आदि काल के चक्र में उत्सता जाये तो अवश्य कुल या वंश मूल की अहवेलना करते करते स्व स्वार्थ से मायातीत हो कर अधोगति को महत्ता देते हुए मूल - कुल - वंश का नाश करते है।

जीव के स्वरुप को आधिदैविक में रुपांतर के बदले सधारण जीव में घटित करते हो

देह न्यास की जगह देह ध्वंस करते है

जीवन पुरुषार्थ को अनीति की ओर धकेलते है🌷🙏🌷

काल को निश्चिन्तता के बदले अनिश्चितता की ओर बहाते हो🌷🙏🌷

तनमात्राओं को अति तीव्र विरहता से छुडाने के बदले अति न्यूनता में डूबोते हो🌷🙏🌷

आत्मा को प्रबल तेजोपसना के बदले घोर अंधकार में त्याग देते हो 🌷🙏🌷

वंश, कुल और साथ के अनुयायियों को उजागर केवल ' ब्रह्मसम्बन्धकरणं ' से ही होता है, जो ऐसे आत्मज ही जगा सकते है।🌷🙏🌷

हमारी जिज्ञासा को इतना पुष्ट करे हम की ऐसे वंशज, कुलज्ञ और आत्मज का पार्दुभाव हमारे समय काल में हो।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरा विचार और जिज्ञासा " ब्रह्मसंबंध " पर ही है।

ब्रह्मसंबंध का अर्थ

ब्रह्मसंबंध का तात्पर्य

ब्रह्मसंबंध का मूल हेतु

ब्रह्मसंबंध का प्रमाण

ब्रह्मसंबंध का पुरुषार्थ

ब्रह्मसंबंध की योग्यता

ब्रह्मसंबंध की विशिष्टता

ब्रह्मसंबंध की दिर्घद्रष्टि

ब्रह्मसंबंध की सैद्धांतिकता

ब्रह्मसंबंध की स्वरुपता

ब्रह्मसंबंध की पराकाष्ठा

ब्रह्मसंबंध की पुष्टि

ब्रह्मसंबंध की सृष्टि

ब्रह्मसंबंध की आधिभौतिकता

ब्रह्मसंबंध की आधिदैविकता

ब्रह्मसंबंध की आध्यात्मिकता

ब्रह्मसंबंध का परिणाम

अवश्य अध्ययन, चिंतन, सत्संग, जिज्ञासा विवरण, वैचारिकता और स्वीकार कर अपनाना ही पुष्टिमता है।

दोष, विरोध, अर्धसत्य, कृतघ्नता, असहिष्णुता, अहवेलना, उपेक्षा, परिहास जताना व्यक्तित्व की योग्यता नही है।

वैसे ही मूढता, सिद्धांत विहीन आज्ञाओं, अज्ञानता, मान्यता में डूबे रहना, असैद्धातिंक साथ देना, अन्यायों में मौन धरना, अधर्म क्रियाओं में विश्वास करके सत्यता को टालना। अंधश्रद्धा को श्रद्धा से जोडना पुष्टिभक्ति नही है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्मसंबंध " का अर्थ

" ब्रह्म + संबंध "

" ब्रह्म "

ब्रह्म - वैज्ञानिक द्रष्टि से

ब्रह्म - आध्यात्मिक द्रष्टि से

ब्रह्म अर्थात विस्तार

बृह - विस्तृत होना

मूल सृष्टा ने अपने आपको विस्तृत करके अनेक ब्रह्मांडो की रचना की।

जैसे वृक्ष अपने विस्तार करता है ऐसा।

सूक्ष्म से सूक्ष्म से सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों अनंतता से अनगिनत स्वरुपों में परिवर्तन हुए - जैसे आज - God Particles, Quantum Particles, विगेरे तत्वों अनेकों अनेक प्रकार और पदार्थ में रुपांतर हुए - पंच महाभूत तत्वों जिससे देव, दानव मानव जैसी सृष्टि उदभयी।

यह सृष्टि के हर कण, रज, बिंदु में ब्रह्म का चेतन स्वरुप होना - ब्रह्म🌷🙏🌷

जो सर्वत्र है - सर्वथा है - सर्वज्ञ है वह ब्रह्म

ब्रह्म के अनेक कक्षा

ब्रह्म - सामान्यत

परब्रह्म - परम श्रेष्ठ

परं शुद्ध ब्रह्म - जो अद्वैत

परमानंद ब्रह्म

सर्वानंद ब्रह्म

इसलिए तो " अहं ब्रह्मास्मि "

जो अंश हममें है।

यह व्याकरणार्थ अति गूढ़ और श्रेष्ठ - सर्वोत्तम - सर्वोच्च और सत्य आधारित है।

आगे कल..........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्म " नित्य है

" ब्रह्म " अज है

" ब्रह्म " अनंत है

साकार ब्रह्म

निराकार ब्रह्म

तत्व ब्रह्म

निर्गुण ब्रह्म

सगुण ब्रह्म

अक्षर ब्रह्म

नाद ब्रह्म

मनब्रह्म

अन्नब्रह्म

प्राणब्रह्म

आत्मब्रह्म

ज्ञानब्रह्म

परब्रह्म

आनंदब्रह्म

ब्रह्म ऐश्वर्य है

ब्रह्म माधुर्य है

ब्रह्म गुणसृष्टिप्रवर्तक है

ब्रह्म प्रेमी है

संसार के विषय के अधिष्ठान को ब्रह्म कहते है।

श्री वल्लभाचार्यजी ने यह साधन क्यूँ उजागर किया?

वेद - उपनिषद - श्री मद् भागवत - गीता - से ही ब्रह्म सूत्रों समझ आये - शिक्षित किया - स्वीकार किया और क्षण क्षण अपनाया। श्री वल्लभाचार्य के चरित्र की हर क्षण को - हर विचार को, हर भाव को, हर ज्ञान को, हर वाक् को, हर अक्षर को, हर क्रिया को, हर पुरुषार्थ को, हर लीला को स्व समाधि स्वरुप से समझ पाये तो अवश्य ब्रह्म को समझेंगे।🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्य ने इतना सचोट और प्रमाणित साधन जगत के लिए प्रस्थापित किया है की जो समझ गये वह परमानंद से आनंद में लुट गये। 🌷🙏🌷

" संबंध " के लिए आगे......

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संबंध "

सम + बंध

सम्बन्ध

सम् + बन् + ध

व्याकरणार्थ

सम् - साथ साथ

सम - समांतर

सम - समान

सम - समाना - एकाकार

बंध - बाधना - जोडना - एकत्वता

ध - निश्चित - चोक्कस - विश्वास पूर्वक

बंधन - जो सामान्य या साधारण बांधना नही

संबंध - संयोजाना - एकात्मता

संबंध जब भी हो वह द्रूड होता है

श्रेष्ठ होता है - सदा के लिए होता है

जो मिले - बिछडे - तुटे - भूले - छूटे वह संबंध नही पर एक तृप्ति है - एक वृत्ति है - एक धृति है।

जो सदा साथ - एक संयोजता - एक एकाकार - एक समआघार - एक सूत्रधार हो इसे संबंध समझना है।

जिसमें केवल विशुद्धता, पवित्रता, अखंडता, निर्मलता, निर्मोहीता, नित्यता, नूतनता, निर्गुणता, विपुलता, सत्यता, पुष्टिमता, पुष्टता, पूर्णता हो।

किस किसके साथ कैसा संबंध - क्यूँ संबंध?

जो बंधन में संशय न हो - संदेह न हो - संकोच न हो।

आचार्य - गुरु का चरित्र और पुरुषार्थ अलौकिक, आनंदायक, संस्कार युक्त, शिक्षा प्रदोक्त, धर्म प्रवर्तक है। जो सदा उपासक, उद्बोधक, उर्जावान, विद्यावान, लीलायुक्त और संरक्षक है।

वंश परंपरागत, कुल आत्मज सैद्धांतिक और सार्थक, सात्विक, परमार्थ और सह्याद्रि संस्कार - धर्मिष्ठा संस्थापन करे - निभाये - जगाये - समृद्धे वह गुरु - आचार्य के योग्य है। जो ब्रह्मसंबध की सर्वोच्चता को सर्वोत्तमता को स्व चरितार्थ करे वह ही आत्मज या सेवक या वैष्णव आचार्य - गुरु का स्थान पा सकते है।

आगे कल................

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" संबंध "

हमारे सनातन संस्कृति - परंपरा - संस्कार में " संबंध " का माहत्म्य प्राथमिकता से है।

हमारे आचार्यों ने जो प्राथमिक स्व ज्ञान, प्रज्ञान से स्व को पहचानते मूल रुप को पहचानना। सृष्टि, प्रकृति और ब्रह्मांड का अस्तित्व को अपने जिज्ञासा और पुरुषार्थ से मूल ब्रह्म को समझ कर सत्य को पहचानना।

यही सैद्धांतिक पहचान आधारित सामाजिक उत्थान समर्पित धर्म संस्थापन का मार्ग प्रस्थापित करते करते ऐसे ऐसे साधन - संस्कार नियमित किया जिससे सामान्यतः जीव स्व पहाचनने में सरलता अनुभवे।

जो संबंध न कभी भूल सकते है

जो संबंध न कभी छोड सकते है

जो संबंध न कभी तोड सकते है

जो संबंध न कभी टाल सकते है

जो संबंध न कभी धृष्ट कर सकते है

जो संबंध न कभी भ्रष्ट कर सकते है

जो संबंध न कभी धूर्त कर सकते है

जो संबंध न कभी स्वार्थीष्ट कर सकते है

जिसने यह ब्रह्म संबंध का नियमन किया

उन्हें जन्मजीवतं प्रयान्त निभाना है, संवारना है, सहारना है, जगाना है।

सच कहे जिसने यह " ब्रह्मसंबंध " का विनियोग जिन्होंने किया है - स्व स्व के चरित्र से जानता ही है - मैं क्या हूँ?

हमने अपने आचार्यों के चारित्र्यो से जाना ही है की " ब्रह्मसंबंध " से श्री वल्लभाचार्यजी स्व को ज्योती स्वरुप में परिवर्तन कर के तृतीय लोक पहुंचे - श्रीगोपिनाथजी - ब्रह्मस्वरुप श्री जगन्नाथजी में एकात्म हो गये - श्री विठ्ठलनाथजी ब्रह्म लीला स्थली श्रीगिरिराजजी में लीन हो गये।🌷🙏🌷

यह मूलत्व ही हमारा जन्म जीवन कारण हमें श्रेष्ठ पुष्टिमार्ग आत्मज होने का भाग्य पाया।🌷🙏🌷

हमें यही मानुष देह जन्म जीवन को यथार्थ करने हमें " ब्रह्मसंबंध " की योग्यता स्वीकार कर सृष्टि, प्रकृति और ब्रह्मांडो के हर तत्वों से जुड कर परमानंद उर्जा प्रजवल्लित करनी ही है।🌷🙏🌷

उन्हें नष्ट नही किया जा सकता।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गोकुल धाम कर दिया
ओ सखी तुने कर लिया अपना यशोदा नाम

श्री यमुनाजी पधारे
श्री वल्लभ पधारे
पधारे अष्टसखा चरणण
हे सखी तुने घर में बसा दिया गोकुल गाँव

श्री गोवर्धन पधारे
गोप गोपि पधारे
पधारे सखा माखन चोर
हे कंजरी तुने शृंगार दिया यमुना निकुंज

चंपारण्य पहुंची
जगन्नाथ पहुंची
पहुंची द्वारिका नाथ
हे सखी तुने प्रसार लिया नाथद्वारा धाम

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



पुष्टिमार्ग में " हवेली " इसे कहते है

जहां सदा पवित्रता हो

जहां सदा विशुद्धता हो

जहां सदा सत्संग हो

जहां सदा उत्सव हो

जहा सदा विश्राम हो

जहां सदा श्रद्धा हो

जहां सदा शिस्त हो

जहां सदा मधुर हो

जहां सदा शांति हो

जहां सदा निरपेक्षता हो

जहां सदा आनंद हो

जहां सदा मिलन हो

जहां सदा समर्पण हो

जहां सदा नमन हो

हाँ! कितनी अनोखी स्थली

हाँ! कितने अनोखा समूह

हाँ! कितना अनोखा उत्साह

हाँ! कितनी अनोखी जागृतता

हाँ! कितने अनोखे रंग

हाँ! कितना अनोखा संग

श्री सखाएं बिराजे 🌷

श्री आचार्य बिराजे🌷

श्री गिरिराजजी बिराजे🌷

श्री यमुनाजी बिराजे🌷

श्री श्रीनाथजी बिराजे🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैया! मुझे मिसरी दे

मैया! मुझे माखन दे

मुझे गैया चराने जाना

गैया से पोषण पाना

घर घर में दूध पिलाना

हर कोई गोपि हर कोई गोपा

घर घर में उत्सव करना

हर कोई योगी हर कोई सहयोगी

घर घर गोकुलीयु गांव

मैया! मुझे मिसरी दे

मैया! मुझे माखन दे

मुझे गैया चराने जाना

मैया! मुझे लकुटी दे

मैया! मुझे भोजन दे

मुझे गैया चराने जाना

गोवर्धन हंसे वन वन बसे

साथ साथ भोजन धर्म जगावत

छूपा छूपी खेलत जीवन संवारत

मंडल मंडली लीला नचावत

हर कोई मेरा हर कोई मुझमें

प्रेम रस रास आनंदु

मैया! मुझे लकुटी दे

मैया! मुझे भोजन दे

मुझे गैया चराने जाना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छोटी सी कहानी

छोटे थे छोटे थे

उम्र से बडे होने लगे

करते गये कुछ पढते गये

कुछ बनते गये कमाते गये

खुद का विचार खुद का कारोबार

खुद के निर्णय लेते गये

यह सही यह ही सही

सत्य से सिद्धांत खेलते गए

यह वो वोह यह ऐसे तफावत निभाते गए

मैं कहां पहुंचा कौन कहा पहुंचे

ऐसे पहूँचते पहुंचते बडे हो गए

आझाद ब्रह्मांड के स्वतंत्र व्यक्ति

अपना धर्म अपना कर्म अपना मर्म

खुद की राह पर चलने लगे

अनेकों वृत्ति अनेकों कृति अनेकों प्रवृत्ति

इन्हें ऐसा उसने ऐसा ऐसे ऐसे झेलने लगे

हे प्रभु! हे इश्वर! हे माता!

न आये न जगाये यूंही जीवन ढसने लगे

एक ही कर्म एक ही धर्म खुदको खुदसे संभले

खप्परो के खप्पर में ऐसे सुलगे

जो सोचे कभी जन्म न पाये

ऐसे चारित्र्य नजरने लगे

हे प्रभु! यह कैसी द्रष्टि कैसी सृष्टि कैसी पुष्टि

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितने निकट है हम
कहींओ के निकट है हम
एक याद से
एक स्मरण से
एक संदेश से
एक द्रश्य से
एक अनुभव से
एक अनुमान से
एक घटना से
एक वचन से
एक संवेदना से
एक रंग से
एक सूत्र से
एक रास्ते से
एक अन्न से
एक गीत से
एक संगीत से
एक गूंज से
एक स्वर से
एक महक से
एक स्पर्श से
एक स्वाद से
एक प्यास से
एक प्रकृति से
एक वृत्ति से
एक कृति से
एक अदा से
एक कला से
एक शिक्षा से
एक विद्या से
एक हार से
एक जीत से
एक वस्तु से
एक भाव से
एक विवेचन से
एक ज्ञान से
एक सेवा से
एक यात्रा से
एक व्यवस्था से
एक कार्य से
एक आयोजन से
एक विशेषता से
एक प्रतिष्ठा से
एक चित्र से

एक विचत्र से
एक रचना से
एक आश से
एक कल्पना से
एक व्यवसाय से
एक माध्यम से
एक अंग से
एक पहचान से
एक पहनावे से
एक चहल से
एक नजर से
एक दोस्ती से
एक विरह से
एक विश्वास से
एक स्वार्थ से
एक रिश्ते से
एक घात से
एक व्यथा से
एक रोग से
एक दुआ से
एक सूचन से
एक विवाद से
एक अकस्मात से
एक कटुता से
एक दुश्मनी से
एक परिस्थिति से
एक स्थिति से
एक निधि से
एक विधि से
एक कक्षा से
एक रक्षण से
एक मदद से
एक चिंतन से
एक शास्त्र से
एक झलक से
एक द्रष्टि से
एक शिखामण से
एक सहेल से
एक पहेल से
एक सृजन से
एक वंदन से
एक आशीर्वाद से
एक शाप से
एक युद्ध से

एक भूल से
एक भूख से
एक उपाधि से
एक संज्ञा से
एक मंजर से
एक मंझिल से
एक सिद्धांत से
एक रीत से
एक अर्थ से
एक पदार्थ से
एक सिद्धि से
एक संग से
एक अभिनय से
एक अभिशाप से
एक कर्म से
एक दुष्कर्म से
एक भेंट से
एक याचना से
एक सत्संग से
एक चरित्र से
एक स्वभाव से
एक जन्म से
एक जीवन से
एक मन से
एक तन से
एक आत्मा से
एक स्वरुप से
एक परमात्मा से
एक आनंद से
एक प्रेम से
सच। हे जगत नियंता। हम मनुष्य
हर हर से कितने निकट है
तुने ऐसी रची है सृष्टि की हर हर हर की निकट
चाहे स्वार्थानंद हो
चाहे स्वयंआनंद हो
चाहे परमानंद हो
चाहे निजानंद हो
चाहे सर्वानंद हो
चाहे अखंडानंद हो
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" माँ नर्मदे " 🌷🙏🌷
हे माँ!
तेरे द्वार तेरे पास तेरे आँचल को नमन
माँ क्या है - क्यूँ है - कैसी है?
वह तुम्हें देख कर - तुम्हारे दर्शन कर - तुम्हें छू कर समझ आया - मैं क्या हूं - क्यूं हूं - कैसा हूं?
अपना अमृत लुटाती लुटाती
अपना वात्सल्य लुटाती लुटाती
अपना आँचल छिन्न भिन्न करती
अपनी काया तोड मरोड़ करती
अपनी पतिव्रता त्याग करती
हे तपस्विनी! तु हमारे लिए क्या क्या करती

" राम तेरी गंगा मैली "
" कान्हा तेरी यमुना मैली "
" दत्त तेरी नर्मदा मैली "
" भारत तेरी प्रजा मैली "

केवल एक ही सदी में कितनी मैली!
राजाओं कैसे रजवाडा कैसा रैयत कैसी
ऋषिमुनियों की संस्कृत भूमि
अवतारों की धर्म संस्थापना भूमि
अपने पेट के लिए माँ को लुटे
अपने रोटी के एक टुकड़े के लिए माँ को बांधे
उपयोगो उपभोगो अवश्य नियमोनुसार
जागो जगाओ अवश्य कुशलता व्यवहार
पर
ना मारो ऐसी विद्वता से
ना तोडो ऐसी हरीफाईओं से
जो स्व मिट जाय अस्तित्व तुट जाय
हे भारत के युवानों!
माता बचाओ पिता बचाओ
घर घर ऐसा दीप जलाओ
स्व माता हो स्व पिता हो
क्यूँ अपना अस्तित्व मिटाओ🌷🙏🌷
हे नर्मदा मैया🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा " पाया

" कान्हा " छूआ

" कान्हा " देखा

जित जित पहोंचे नजर तित तित निहाले श्याम

जित जित स्पर्शे रंग तित तित रंगाये श्याम

जित जित भरे सांस तित तित जीये श्याम

जित जित खूले अधर तित तित गूंजे श्याम

जित जित जागे स्पंदन तित तित विरहे प्रेम

यही मेरी डगरी यही मेरी कृति

यही मेरी धूरी यही मेरी तुरि

यही मेरी डोरी यही मेरी ठोरी

यही मेरी भोरी यही मेरी होरी

श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम

राम राम राम राम राम राम राम राम

अवश्य पधारे द्वार प्रिय राम प्रिय श्याम

पुकारे

हे राधा! जित जित न मैं तेरे बिन तित तित

हे सीते! जित जित न मैं तेरे बिन तित तित

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रथ यात्रा "

रथ अर्थात जिसके उपर आरुढ हो कर निर्णायक स्थली पर पहुंचना 🌷🙏🌷

यह शरीर रथ है और शरीर में है आत्मा अर्थात यह आत्मा शरीर पर आरुढ होता है और शरीर रथ को हंकारते है - पुरुषार्थ करके निर्णायक स्थली पर पहुंचाये इसे रथ यात्रा समझते है।

हमारे संस्कार और संस्कृति कितनी अनोखी है कि

हर मन हर धन हर तन हर वन हर जीवन के परिवर्तन को आध्यात्मिक स्वरुप देते है। अदभुत👍🌷🙏🌷

" रथ यात्रा " कि आध्यात्मिक स्वरुपता में जो आत्मा आरुढ होता है अर्थात हम निमंत्रित करते है आत्मा को - वाह!🌷

हम हमारे शरीर को इतना श्रेष्ठ सुसज्जित करते है कि

जिसे आरुढ होना है वह आत्मा यह शरीर के कोई भी स्थान पर आनंद पा सके।🌷

अर्थात शरीर जिसमें प्राण है वह शरीर में आत्मा का प्रार्दुभाव करना - ओहह! सर्वोत्तम 🙏

मेरे प्रभु! आपने अदभुत लीला रची है यह ब्रह्मांड में - अलौकिक कृपा बरसाई है यह संसार में 🌷🙏🌷

ओ तुने! ओ तुने! तुने! नही करनी है देर

अरे ऑ साँवरिया🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"चरित्र चारित्र्य"

स्व मूल्यांकन करते जाये तो अवश्य कभी और कहीं यह समझने मिलेगा की जो मैंने जन्म लिया - जन्म दिया वह कितना योग्य और सार्थक है?🌷🙏🌷

जन्म लिया...........

काल, समय, प्रकृति - जल - मिट्टी - अन्न - वनस्पति - शिक्षा - प्रकाश और सांस, सृष्टि, वंश, कुल, समाज, संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, कुटुंब और स्थली और इससे पर स्व कर्म के भाग्य, प्रारब्ध फल और अपेक्षित इच्छा कृत जो जन्म धरा।🌷🙏🌷

जन्म दिया..............

जैसे हमारा जीना काल, समय, प्रकृति - जल - मिट्टी - अन्न - वनस्पति - शिक्षा - प्रकाश और सास, सृष्टि, वंश, कुल, समाज, संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, कुटुंब और स्थली और इससे पर जो जीव हमारे यहां आनेवाला है उसका स्व कर्म के भाग्य, प्रारब्ध, फल और अपेक्षित इच्छा में हमारा व्यवहार, हमारा संकल्प, हमारी अपेक्षा, हमारा भाग्य प्रारब्ध फल और पुरुषार्थ से जन्म दिया।🌷🙏🌷

वैसा हमारा चरित्र - चारित्र्य का मूल्यांकन करते हुए हम पुनर्जन्म की ओर गति कर सकते है या आखरी जन्म की संभावना उत्कर्ष कर सकते है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह शरीर को हम क्या समझते है?

सामान्यता से सोचे

जो भी पढाई पढे से सोचे

जो भी अस्तित्व है उससे समझे

जो भी उपयोग करते सोचे

जो भी उपभोग करते समझे

जो भी शुद्धि से सोचे

जो भी अशुद्धि से समझे

जो भी अंग से सोचे

जो भी अपंग से समझे

जो भी तंदुरुस्ती से सोचे

जो भी नादुरस्ती से समझे

ओहह! कितने करोडों मनुष्य शरीर

गहराई से सोचे जो योग्य समझ से समझे

हर शरीर से कुछ छेडछाड

हर शरीर से कुछ दूराचारी

हर शरीर से कुछ लापरवाही

हर शरीर से कुछ बेदरकारी

हर शरीर से कुछ व्यभिचारी

हर शरीर से कुछ निराधारी

क्या समझते है हम?

है

बस कुछ करते जाये करते जाये

ऐसे ऐसे दौडते जाये

ऐसे ऐसे निचोडते जाये

कितनी सामान्यता शरीर के लिए!

होता है - रहता है - चलता है!

इतनी उम्र कटी - अब कितनी?

इतना कुछ खेला - खेल लिया?

इतना कुछ झेला - झेल लिया?

जो भी है - है

जो भी होता है - है

अपने आप संभलेगा

अपने आप जैसा होगा - होगा

अरे! क्यूँ?

शरीर है तो होगा ही

शांत और ध्यान से सोचे

यह शरीर से ही सबकुछ है

यह शरीर से ही जीवन है

यह शरीर से ही सबकुछ प्राप्त करते है

और हम

यह शरीर को नासमझी से समझ कर दुष्टाचार करते है।

यह शरीर को गौण करके इससे दुर्व्यवहार करते है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह शरीर को सामान्य न समझो🌷🙏🌷

कल आगे.......

आप अपने आप को तो जानते है
कैसे?
यह वर्ण
यह आकार
यह रंग
यह रुप
यह स्वरुप
यह कक्षा
यह उपाधि
यह प्रतिष्ठा
यह मान सन्मान
🌷🙏🌷
किसको यह मिला
यह वर्ण
यह आकार
यह रंग
यह रुप
यह स्वरुप
यह कक्षा
यह उपाधि
यह प्रतिष्ठा
यह मान सन्मान

यह शरीर को मिला
यह शरीर न होता तो कैसे पाते?
यह शरीर न होता तो कैसे करते?
यह शरीर न होता तो कैसे समझते?
यह शरीर न होता तो कैसे पहचानते?
यह शरीर है तो सर्वस्व है
यह शरीर नही तो जन्म नही - जीवन नही - गति नही - कुछ भी नही

दुर्लभ मनुष्य देह
दुर्लभ मनुष्य शरीर
दुर्लभ मनुष्य जीव
दुर्लभ मनुष्य अंग

और हम

खेलते गये खेलते गये खेलते गये
खेलत खेलत अपने आप को भूल गये
खेलत खेलत अपने आप को खो दिया
खेलत खेलत अपने आप को तोड दिया
खेलत खेलत अपने आप को मिटा दिया
खेलत खेलत अपने आप को मार दिया

यह शरीर से ही खुद को जान सकते है
यह शरीर से ही हर कुछ जान सकते है
यह शरीर से ही अनुभव कर सकते है

यह शरीर से ही हर कुछ अनुभूति पा सकते है
यह शरीर से ही कर्म कर सकते है
यह शरीर से ही पुरुषार्थ कर सकते है
यह शरीर से ही व्यवहार कर सकते है
यह शरीर से ही जन्म जीवन रच सकते है

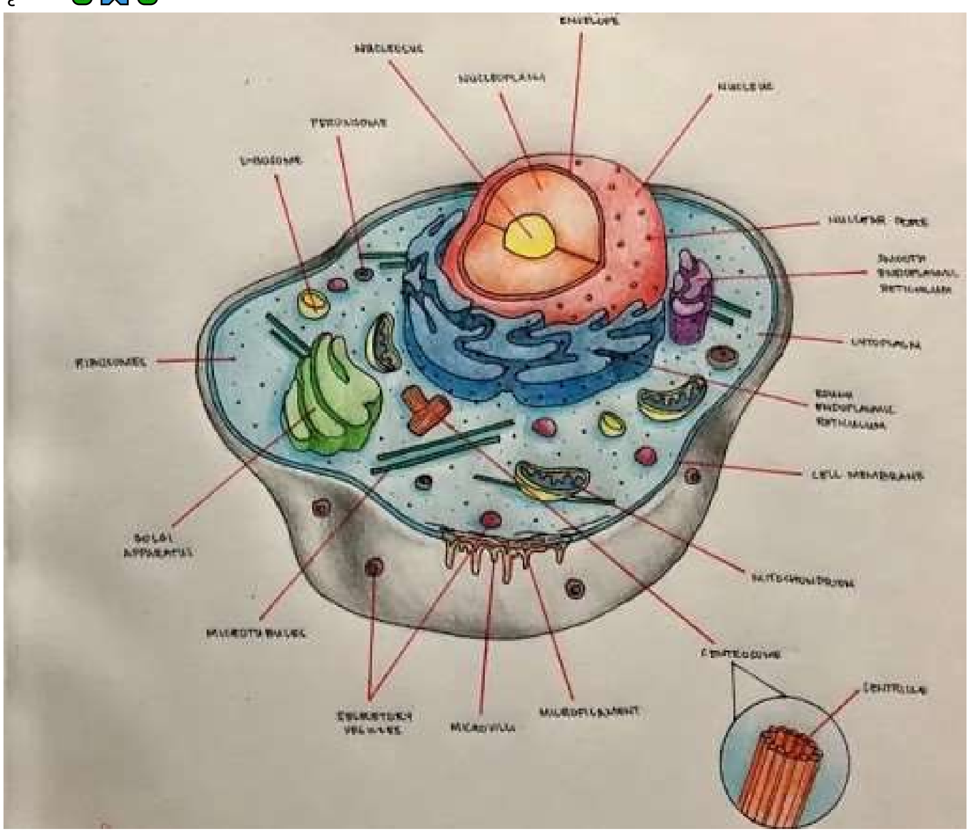
और हम!

नष्ट - दुष्ट - भ्रष्ट - कष्ट - कुष्ठ - तृष्ट - धृष्ट - त्रुष्ट करते करते
रोगी - भोगी - ढोंगी - त्रागी कर देते है
अब आप ही कहो
मुझे धुत्कारोगे ही
मुझे तिरुस्कृतोगे ही
मुझे त्यजोगे ही
मुझे त्यागोगे ही
मुझे नष्टोगे ही

और कहते रहेंगे

लहू मांस का टुकडा न कुत्ता भी न सुंघे
दुर्गंध भरा यह चमडा न उपयोग में न मंगे

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



लाल लाल से प्रिये लाल

लाल लाल से मुकुट लाल

लाल लाल से पाघ लाल

लाल लाल से लोचन लाल

लाल लाल से अधर लाल

लाल लाल से मुखडा लाल

लाल लाल से माला लाल

लाल लाल से बाजूबंध लाल

लाल लाल से केडियु लाल

लाल लाल से उपरणा लाल

लाल लाल से धोती लाल

लाल लाल से पैजनिया लाल

लाल लाल लाल लाल लाल

लाल प्रीत की लाली लाल

लाल वात्सल्य भरा मेरा लाल

लाल फूलों बैठक पर नंदलाल

लाल मलमल पर यशोदालाल

लाल लकुटी लाल फूमता लाल

लाल लाल रंग का तिलक लाल

लाल लाल मझ पर उडाये गुलाल

लाल लाल कसुंबी से पुष्टि लाल

नित नित स्पर्शे प्रिय प्रेम लाल

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे गोपेश्वर!

हे गोपिनाथ!

हे गोपाधिश!

हे गोपिश!

हे गोपि!

हे गोप!

क्षण क्षण का स्मरण

क्षण क्षण का वरण

क्षण क्षण का चरण

क्षण क्षण का रटण

प्रभु कैसे निकट हो मेरे

प्रभु कैसे प्रक्ट हो मेरे

प्रभु कैसे नटखट हो मेरे

प्रभु कैसे विकट हो मेरे

तुम संग मैं खिंचाऊँ

तुम संग मैं रिझाऊँ

तुम संग मैं सजाऊँ

तुम संग मैं तरसाऊँ

सच! तुम हो गोप

सच! तुम हो गोपि

सच! तुम हो गोपिश

सच! तुम हो गोपाधिश

सच! तुम हो गोपिनाथ

सच! तुम हो गोपेश्वर

हे गोवर्धन! सदा मुझमें जगना🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" धर्म पत्नी - अर्थ पत्नी "

पढाई बिलकुल आवश्यक है

पढाई से ज्ञान विज्ञान का आविष्कार आवश्यक है

पढाई से संस्कार और संस्कृति आवश्यक है

पढाई से स्व विकास स्व पुरुषार्थ आवश्यक है

पर

पढाई से अर्थ का विकास अनावश्यक है

पढाई से संस्कार और संस्कृति का लोप अनावश्यक है

पढाई से ज्ञान विकान का तृष्टिकरण अनावश्यक है

पढाई से मान - अपमान - गुमान - अभिमान अनावश्यक है

पुत्री - पत्नी - बहन - माता अवश्य पढना ही चाहिए

स्व उत्थान - स्व जागृतता - स्व स्वाध्याय - स्व धर्म रक्षक - स्व सलामती के लिए आवश्यक ही है।

पर

यह वैचारिकता - व्यवहारता को अर्थ के माध्यम में घटित हो या करे तो

बरबाद बरबाद बरबाद बरबाद बरबाद

गहराई से सोचिए

आज हम कहां है?

आज समाज कहां है?

आज संस्कार कहां है?

आज संस्कृति कहां है?

आज स्व धर्म कहां है?

धर्म पत्नी मिट जाय और अर्थ पत्नी उत्स जाय

केवल एक मानव योनि की तरह जीना 🌷🙏🌷

समझना - समझाना - स्वीकारना - अपनाना

बाकी तो राम बोलो भाई राम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा बैठी अटूली अकेली सोचती गहराई सी

कैसे कान्हा को तडपाये

रुठे तो ऐसे मनाये जैसे मधुप तितली

छूपे तो ऐसे ढूंढे जैसे चंदा चकोरी

खेले तो ऐसे खेले जैसे वो हारे मैं जीती

रंगे तो ऐसे रंगाये जैसे वो राधा मैं श्यामा

पुकारे तो ऐसे पुकारे जैसे बादल बिजली

छूएँ तो ऐसे छूएँ जैसे धडकन की लडी

न वो तडपे न वो तरसे सदा मुझे सताये

कैसा है रे प्रिये कान्हा!

कितनी प्रीत अटखेलियाँ लडाये

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" शयन आरती "

हमारी संस्कृति की ऊंचाई को समझना अति महत्वपूर्ण और जीवन तात्पर्य है।

शयन अर्थात सो जाना - अर्थात नींद - पोढ जाना।

सोता कौन है?

नींद में कौन जाता है?

पोढ कौन जाता है?

सोता वही है जो कार्यरत है

नींद वही करते है जो कर्मवीर है

पोढता वही है जो पुरुषार्थी है

कार्य किया सोना ही है - यह कार्य जो कार्य योग्य फल दे

कर्म किया नींदना ही है - यह कर्म जो कर्म भाग्य फलायें

पुरुषार्थ किया पोढना ही है - यह पुरुषार्थ जो प्रारब्ध जगायें

जो कार्य करे - जो कर्म करे - जो पुरुषार्थ करे उनकी आरती उतारी जाती है।🌷🙏🌷

कार्य जो सदुपयोग हो

कर्म जो परोपकार हो

पुरुषार्थ जो धर्मिष्ठ हो

कृष्ण जो भी कार्य करते थे - हर कार्य का वह सदुपयोग करते थे🌷🙏🌷

कृष्ण जो भी कर्म करते थे - हर कर्म परदु:खभंजन थे🌷🙏🌷

कृष्ण जो भी पुरुषार्थ करते थे - हर पुरुषार्थ धर्म संस्थापना था🌷🙏🌷

उनकी आरती अवश्य होती है जो सदा उत्थापक हो

सूर्य आरती

गंगा आरती

यमुना आरती

आचार्य आरती

गुरु आरती

सदस्य आरती

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" देवशयनी एकादशी "

देव शयने मानव जगने

देव शयने मानव जानने

देव शयने मानव जगाने

देव शयने मानव पुरुषार्थने

अदभुत लीला है प्रभुकी

ज्योत से ज्योत जगाते जगाते मानव देव हो जाय

देव जो जो करे ऐसा मानव मानव से करे

हे दया के सागर! सदा दया दाखवना

हे करुणा सिंधु! सदा करुणा बरसाना

हे प्रेम की धारा! सदा प्रेम वहाना

हे वात्सल्य की धूरा! सदा वात्सल्य धरना

जीवन के क्षण क्षण दया, करुणा, प्रेम और वात्सल्य लुटाना

जिन्हें जो कहना हो

जिन्हें जो समझना हो

जिन्हें जो शिस्तना हो

जिन्हें जो करना हो

यह एक ऐसी तपश्चर्या है

जो कुटुंब में रह कर

जो संसार में संस्कृत कर

जो जगत में जी कर

जो ब्रह्मांड में भ्रमण कर

सार्थक - यथार्थ और परमश्रेष्ठ करनी है

यही देव है - यही ब्रह्म है - यही परब्रह्म है🌷🙏🌷

आप सर्वेको " देवशयनी एकादशी " की मंगल कार्य की शुभसिद्धेय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

पुष्टिमार्ग में " चौरासी वैष्णव " प्राथमिक और मूल संप्रदाय की नींव है।

जन्म - जीवन - संबंध और जन्मोजन्म वैष्णवता आधारित - श्री प्रभु की अलौकिक अनुकंपा, अनुग्रह, अतिकृपा और नित्य लीला जीव का प्रारब्ध - भाग्य और सेवकिय प्रेम है।

हमारा जन्म - जीवन - संबंध श्री वल्लभाचार्य के अनुयायी से बंधा है, यही मूल फल है अपनी चौरासी कोटी जन्म की सिद्धि।

यह अनुकंपा, अनुग्रह, अतिकृपा और नित्य लीला को हम भूल जाये, तिरुस्कृत करे, छोड दे, हट जाये, मिटा दे तो हम कैसे जीव?

हमारा जन्म कैसा?

हमारा जीवन कैसा?

हमारा संबंध कैसा?

हमारा संस्कार कैसा?

वैष्णव कहलावे तो वैष्णव होना है

वैष्णव समझे तो वैष्णवता निभानी है

वैष्णव से पहचान दे तो वैष्णवता जगानी है

नही तो ....

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

हर वैष्णव के द्वादश अंग होते है

वैष्णव सदाय द्वादश अंग से अध्ययन, आराधना, सेवा और परस्पर सेवा करता है।

यह अध्ययन, आराधना, तपश्चर्या, सेवा और परस्परता से उनके गुणों में आमूल परिवर्तन आता है - यही परिवर्तन से वह श्रेष्ठ पुरुषार्थी हो कर स्व में अनन्यता उत्स करता है, यही उत्स से जो उर्जा उत्पन्न होती है, जो उन्हें शांत और शुद्ध करती है।

जिससे उनमें श्री, ज्ञान का धर्म आश्रय होता है, यही श्री, ज्ञान की अखंड धैर्यता से वह अति पुरुषार्थी हो कर ऐश्वर्य, वीर्य, यश जैसे गुणधर्मों को पाता है। ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान को संचित करके अपने आप को तीव्र योग भाव उत्कृष्ट करके अपने आप को स्थीर करता है।

यही स्थीरता से उनमें सेवा - परस्परता का पार्दुभाव होता है, यह पार्दुभाव उन्हें वैराग्य की ओर प्रगति करता है।

यही उपाधि और धर्मों से वह इतना श्रेष्ठ और भगवदीय में रुपांतर होता है। यह रुपांतर ही उनके स्वभाव को स्व विजय संपादन करता है।

यह संपादिका उन्हें निर्गुण और लीलात्मक संस्कृत करता है, यह संस्कृतिका ही उन्हें चौरासी वैष्णव में पदार्पित करता है।🌷🙏🌷

पुष्टिमार्ग की शिक्षात्मक प्रणाली इतनी अलौकिक और अदभुत है जो जीव को पुष्टिजीव, पुष्टिजीव से भगवदीय, भगवदीय से परम भगवदीय और परम भगवदीय से दास में रुपांतर करता है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी - दमला! तेरे लिए मार्ग प्रकट कियो है।🌷🙏🌷

श्री गोकुलनाथजी - यह पुष्टिमार्ग है सो वैष्णव द्वारा फलित होयगो।🌷🙏🌷

श्री दामोदरदास हरसानीजी - यह मारग निश्चिंतता को नही, यह मारग भक्तिप्रदायक है। यह मार्ग निसंगता को नाही।🌷🙏🌷

धर्म - मार्ग को जानना, समझना, स्वीकारना और अपनाना, और अपनाने के साथ यथार्थ करना यही लक्षण आवश्यक है।

शास्त्र के सिद्धांत जाने

कथा के सिद्धांत जाने

चरित्र के सिद्धांत जाने

मार्ग के सिद्धांत जाने

धर्म के सिद्धांत जाने

यह सिद्धांत जान कर, समझे, स्वीकारे, अपनाये और यथार्थ करे। यही ही पुरुषार्थ है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वार्ता "

चौरासी वैष्णव की वार्ता

दोसो बावन वैष्णव की वार्ता

वार्ता शब्द का अर्थ अदभुत है

वार्ता शब्द का अर्थ है सुबोधमय चरित्र

वार्ता शब्द का अर्थ है प्रबोधमय शिक्षा

वार्ता शब्द का अर्थ है सिद्धांतमय संस्कार

प्राथमिक शिक्षा - संस्कार प्रबंधित कोई योग्य हेतु सर सुवचन - सुसंबोधन - सुप्रवचन - सुविवेचन - सुसत्संग - सुउदबोधन करना होता था तब यही रुप में करना पडता था।

अर्थात जब कभी भी वार्ता शब्द का प्रयोग होता था तब एक संकेत - एक संज्ञा - एक चिन्ह अंकित करते थे की " वार्ता " सदुपयोगी - नियमोनुसार - स्वशिक्षा ग्रहणशील - स्वधर्म संबंधित ज्ञान, भाव और चरित्रतार्थ। जो सर्वेको स्वीकार कर अपनाना है।

अदभुत और ज्ञानोपासना - ज्ञानवर्धक - ज्ञानात्मक - ज्ञानानंद प्रणाली थी।🌷🙏🌷

जो हर हर में - घर घर में तेजोमय संस्कार संस्थापन दीपक प्रजवल्लित हो🌷🙏🌷

जो आज भी यह प्रणाली जागृत है।

पुष्टिमार्ग की लीलात्मक - संस्कृतात्मक - धर्मात्मक - प्रेरणात्मक - संकेतात्मक और पुष्टात्मक यह वार्ताएं अलौकिक और अखंड उर्जा प्रकट करी और आज यह उर्जा हर हर में - घर घर में चरितार्थ हो रही है। धन्य है🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

गूढता से और संवेदना से समझना है

श्री दामोदरदास हरसानीजी के चारित्र्य की एक घटना है -

जब श्री वल्लभाचार्य दामोदरदास हरसानीजी की गोदि में मस्तक धरी आप पौढे थे, तब श्री गोवर्धननाथजी श्री आचार्य से मिलने पधारे, जैसे दामोदरदास हरसानीजी ने श्री प्रभु को देखते तुरंत श्री प्रभुको विनंती करके कहा - आप अभी यहां मत पधारे, श्री आचार्य जागि उठेंगे, तब श्री प्रभु वहां ही रुक गये, और श्री आचार्यजी की जागने की प्रतिक्षा करने लगे - जैसे आचार्य जागे और देखत कहने लगे - आप! उहां ठाडे होय रहे हो? पास पधारो। तब श्री गोवर्धननाथजी ने कहां - आपके सेवक ने मोकूं बरज्यो - यहां मती आओ।

तब श्री आचार्यजी दामोदरदास हरसानीजी के उपर खीजने लागें, श्री गोवर्धननाथजी को क्यूँ बरजे? तब श्री गोवर्धननाथजी ने कहो - इन्हें न बरजे, इन्हें तो अपना धर्म रख्यो है।🌷🙏🌷

गहराई से चिंतन करते है

१. श्री वल्लभाचार्यजी दामोदरदास हरसानीजी को खींजते? क्या उनकी ऐसी कक्षा हो सकती है?

२. क्या श्री गोवर्धननाथजी ऐसे ही प्रकट हो सकते है?

३. लीला लीला हो तो अवश्य सिद्धांत हो, बीना लीला सिद्धांत नाही।

यह द्रष्टांत काल्पनिक है - ऐसा सैद्धांतिक रूप से है

१. पुष्टिमार्ग की प्राथमिकता ऐसे द्रष्टांत से सिद्धांत का सत्य नही समझा सकते है।

सिद्धांत का सत्य समझने के लिए - सत्य और सार्थक द्रष्टांत ही यथार्थ समझ और ज्ञान प्रदान कर सकते है।🌷🙏🌷

सही में श्री दामोदरदास हरसानीजी ऐसे अविवेकी असैद्धांतिक और धूर्त व्यक्तित्व , असंस्कारी और निम्नकक्षिय सेवक नहीं है।🌷🙏🌷

आज्ञाकारी और विवेकी ही सेवक श्री वल्लभाचार्यजी के साथ रह सकते है, संस्कृत ही होते है।🌷🙏🌷

श्री गोवर्धननाथजी के मुखारविंद से ही उनके पधारने का तात्पर्य समझ सके इतने योग्य सेवक अवश्य है।🌷🙏🌷

धर्मपरायण और निष्ठावान सेवक है। वह किसीको सूचन या संकेत भी नही कर सकते - ऐसे विशुद्ध और पवित्र सेवक है।

पुष्टि धर्मिष्ठ सूचित और पुष्टि कर्मिष्ठ सचरित्र वैष्णव है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष आगे.......

" चौरासी वैष्णव "

दामोदरदास हरसानीजी

दामोदरदास हरसानीजी की गोदि में पौढे श्री आचार्यजी को श्री गोवर्धननाथजी के पधारने से ऐसे संकेत या ऐसी घटना अवश्य घटते जिससे श्री आचार्यजी जाग जाये

या

श्री आचार्यजी इतने प्रखर और प्रचंड आतुर ही थे की कब श्री गोवर्धननाथजी पधारे और मुझे दर्शन स्पर्श हो और अवश्य मुझमें उठती पुष्टिजीव को योग्य करने की प्रबलता के लिए मार्गदर्शन करे। 🌷🙏🌷

क्यूंकि हर घडी यही चिंता में श्री आचार्यजी व्यथित रहते थे।

कैसे कोई ऐसा कह सकते है की -

श्री गोवर्धननाथजी को बरज्यो और श्री आचार्यजी दामोदरदास हरसानीजी पर खीजयो?

श्री आचार्यजी की आंतरिकता, ताप, विरह, बैचेनी और संताप श्री पुष्टिजीव का उद्धार का ही था - जो दामोदरदास हरसानीजी द्रढता से समझते थे। यही समझ ही आचार्यजी को संकेत के लिए या कोई लीला के प्राकट्य का ही आहवान शक्य हो सकता है - जो आंतरिक विनंती - प्रार्थना या याचना से श्री गोवर्धननाथजी पधार सकते है - जो पधारे🌷🙏🌷

यहां यही सिद्धांत सिद्ध होता है

" स्वे स्वे कर्माणि अभिरथा " जो श्री आचार्यजी से और पुष्टिजीव दामोदरदास हरसानीजी के विरह वेदना और संताप से परीणिमीत होता है। यही श्री आचार्यजी की पुष्टि प्रणेत सिद्धि है जो सिद्धांत सभर और योग्य शिक्षण आधारित है।🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव " ऐसे सिद्धांतों से स्व उजागर करते है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओओओ
कृष्ण चले आओ मेरे गांव रे
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते प्रेम घांव रे

ओओओ
कृष्ण चले आओ मेरे गांव रे
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते प्रेम घांव रे

गोकुल की गली सुनी सुनी रे
वृंदावन की कुंज सहमी सहमी रे
ओओ
गोकुल की गली सुनी सुनी रे
वृंदावन की कुंज सहमी सहमी रे
तुम न आओ तो तरसे धार धार
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते विरह प्रीत रे
ओओओ
कृष्ण चले आओ मेरे गांव रे
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते विरह प्रीत रे

यमुना का नीर सुका छूपा रे
गोवर्धन की शीला तुटी छूटी रे
ओओ
यमुना का नीर सुका छूपा रे
गोवर्धन की शीला तुटी छूटी रे
तुम न आओ तो मिटे हार हार
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते गौएँ बैचेन रे
ओओओ
कृष्ण चले आओ मेरे गांव रे
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते गौएँ बैचेन रे

ओओओ
कृष्ण चले आओ मेरे गांव रे
गोपि पुकारे बार बार
तुझे दिखाते प्रेम घांव
तुझे दिखाते प्रेम घांव
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे गुरुवर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे आचार्यवर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे ब्रह्मवर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे परमेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे योगेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे सिद्धेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे प्राणेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे पुष्टिमार्गेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे प्रेमेश्वर

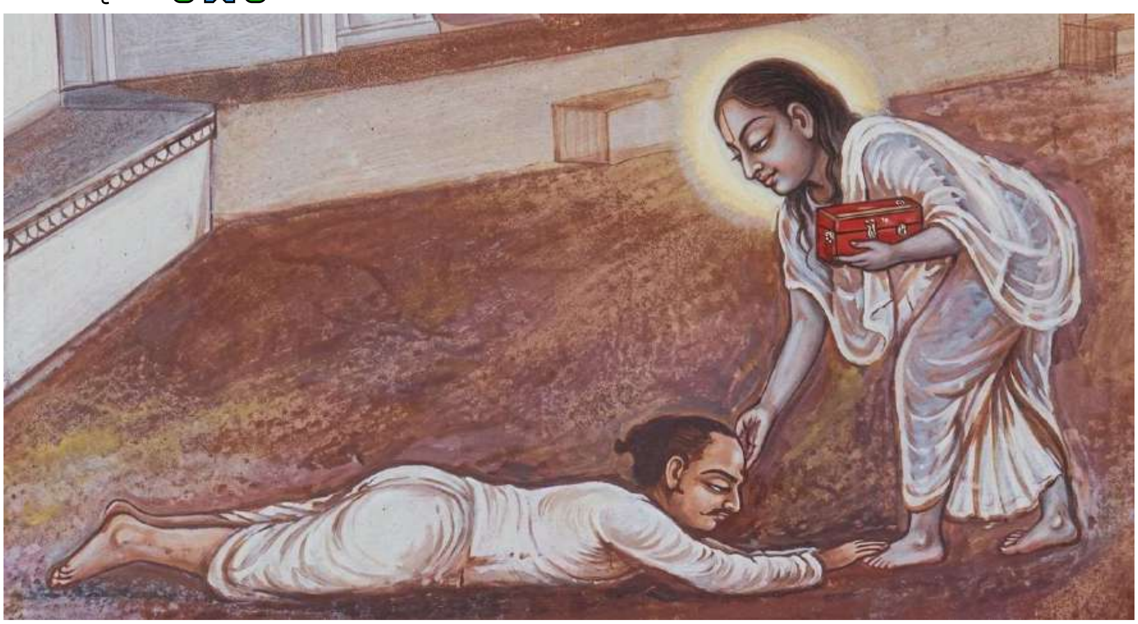
श्री वल्लभाचार्यजी हमारे आनंदेश्वर

श्री वल्लभाचार्यजी हमारे सर्वेश्वर

हे आचार्यश्री! आपको दंडवत प्रणाम🌷🙏🌷

जो मार्ग आपने हमें ब्रह्मसंबंधाया यह मार्ग को सदा जागृत और योग्य रख्खे यही ही हमारी आपके चरणों में हमारी गुरुदक्षिणा🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



सेवा तुम्हारी
भाव तुम्हारा
ज्ञान तुम्हारा
प्रार्थना तुम्हारी
याचना तुम्हारी
मनोरथ तुम्हारा
सत्संग तुम्हारा
गुणगान तुम्हारा
वचन तुम्हारा
स्पर्श तुम्हारा
भोग तुम्हारा
न्योछावर तुम्हारी
भेंट तुम्हारी
आनंद तुम्हारा
सुख तुम्हारा
प्रेम तुम्हारा
दंडवत तुम्हारा
ब्रह्मसंबंध तुम्हारा
हर हर तुम्हारा
पुष्टिमता तुम्हारी
पुष्टियुता तुम्हारी
पुष्टिद्रष्टि तुम्हारी
पुष्टिजीव तुम्हारा
पुष्टिजीवन तुम्हारा
हर हर से पुष्ट तेरा - पुष्टि तेरी
मैं कैसे तेरी पुष्टि सोहावुँ?
पुष्टिसेवा का एक सिद्धांत
जो तेरा वल्लभ तेरी यमुना
तेरा गिरिराज तेरा श्रीनाथजी
केवल झांकी मैं पाऊँ🌷🙏🌷
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
सच कान्हा! तु क्या क्या है?
पि
प्रिये
प्रितम
प्रियतम
मित
चोर
चित्त चोर
मन चोर
माखन चोर
नजर चोर
दिल चोर
और तु क्या नही हो

पर
इतना तो चोक्कस है
न कभी तुने मेरा तन छूआ
न कभी तुने मेरी बैयां पकडी
न कभी तुने मेरा आँचल छूआ
न कभी तुने मेरा अंग छूआ
मैं ही गोपि ऐसी जो तेरा तन छूआ
मैं ही सखी ऐसी जो तेरी बैयां पकडी
मैं ही किंकर ऐसी जो तेरा आँचल छूआ
मैं ही प्रियतम ऐसी जो तेरा अंग छूआ
हे कान्हा! तु क्यूँ करे ऐसा रे
तुझे जगाऊँ
तुझे नहलाऊँ
तुझे पहनाऊँ
तुझे सजाऊँ
तुझे शृंगारूँ
तुझे बांधुँ
तुझे खेलाऊँ
तुझे नचाऊँ
तुझे खिलाऊँ
तुझे सताऊँ
तुझे रिझाऊँ
तुझे भोगाऊँ
तुझे सुलाऊँ
तो भी तु दूर दूर दूर दूर
कैसा है रे तु नटखट!
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷



हे कान्हा!

पुकारा पुकारा इतना पुकारा

बंसी की नाद से

यादों की फूंवार से

सांसों की उर्जा से

सूरों की सरगम से

विरह के अस्मि से

नैनों की ज्वाला से

अश्रु की बरसात से

अधरों की सिस्कि से

धडकन की रफतार से

नजरों की अपलक से

मन की उम्मीद से

तन की उर्मि से

आत्म की स्फूर्लिंग से

प्रेम की साक्षी से

प्रीत की पहेली से

पर तु नही आया

बस तु नही आया

तु नही आया

आज भी यमुना तरसे

आज भी व्रजरज बरसे

आज भी गोवर्धन गरजे

आज भी बरसाना बरजे

आज भी गौएँ झुरसे

आज भी गोपि आशे

रसिया ऑ प्रिये!

तुझे दिल का रंग दिखलाती रे

💧💧💧💧💧💧💧💧

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

अकेले मत जईयो कान्हा मत जईयो
नही जईयो नही जईयो प्रेम सागर पार

यह गोकुल यह गोवर्धन
यह नंदगांव यह वृंदावन
भटक रहेंगे बिखर पडेंगे
तेरे जाने यमुना पार
तु न जाये तु न त्यागे
रहेंगे सजेंगे व्रजवास
नही जईयो कान्हा मत जईयो
अकेले मत जईयो
कान्हा मत जईयो प्रेम सागर पार

यह यशोदा यह नंदबाबा
यह सखी यह सखा
बिछड जायेंगे भटक पडेंगे
तेरे जाने कालिन्दी पार
तु न छोडे तु न तोडे
खेलेंगे नाचेंगे लीलारास
नही जईयो कान्हा मत जईयो
अकेले मत जईयो
कान्हा मत जईयो प्रेम सागर पार
🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलो सखी झुलन झुले
उडे गगन छूए बादल
चलो सखी झुलन झुले

झुलन बांधा मन के दोर
झुलन सजाया तन के जोर
दूर दूर तक मिट मंडाये
चंदा सूरज एक दिखलाये
चलो सखी झुलन झुले
उडे गगन छूए बादल

प्रीत झुलावे मित मिलावे
तन मन नैन एक कराएं
जन्म जन्म दूरी मिटाये
प्रेम प्रेम मधुर लुटाये
चलो सखी झुलन झुले
उडे गगन छूए बादल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" चौरासी वैष्णव "

पुष्टिमार्गीय वैष्णव संप्रदाय और समाज श्री वल्लभाचार्य के सिद्धांत और योग्य पद्धति को ही स्वीकार करते है।

एक प्रसंग है - जो श्री गुंसाईजी और श्री दामोदरदास हरसानीजी के बिचमें घटा था। 🌷🙏🌷

श्री गुंसाईजी दामोदरदास हरसानीजी को पूछते है - जो - श्रीठाकुरजी सों बडे क्यों कहे? तब दामोदरदास हरसानीजी ने कही, जो - दान बडो के दाता बडो?

दाता जहाँ चाहे तहाँ दान चल्यो जाय। जहाँ चाहे तहाँ दाता दान कूँ राखे। 🌷🙏🌷

गंभीरता से अध्ययन करे - योग्यता से विचार करे और श्रेष्ठता से सोचें -

यह प्रसंग " चौरासी वैष्णव " वार्ता में शोभत है? - योग्य है?

नही - बिलकुल असभ्यता भरेल और असंगत द्रष्टिपात साथ निम्नलिखित किया है। क्या हमारी संस्कृति ऐसे आधारित प्रसंग या द्रष्टांत या बोधपाठ सम्मलित है?

नही नही🌷🙏🌷

ऐसा निम्नसन्मानिय अर्थ हीन प्रसंग घटीत करना अयोग्य है। हर प्रसंग - द्रष्टांत - बोधपाठ उच्चस्तरीय - संस्कार सभर और ज्ञानवर्धक होना आवश्यक है।🌷🙏🌷

यह प्रसंग - द्रष्टांत - बोधपाठ क्या सिद्ध करना चाहता है?

पुष्टिमार्ग को संस्कृत - सैद्धांतिक और योग्य प्रमाणित करना, नियमबद्ध - विशुद्ध और पवित्र प्रणाली को अपनाना हमारा परम कर्तव्य है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष कल........

" चौरासी वैष्णव "

पुष्टिमार्गीय वैष्णव संप्रदाय और समाज श्री वल्लभाचार्य के सिद्धांत और योग्य पद्धति को ही स्वीकार करते है।

एक प्रसंग है - जो श्री गुंसाईजी और श्री दामोदरदास हरसानीजी के बिचमें घटा था। 🌷🙏🌷

श्री गुंसाईजी दामोदरदास हरसानीजी को पूछते है - जो - श्रीठाकुरजी सों बडे क्यों कहे? तब दामोदरदास हरसानीजी ने कही, जो - दान बडो के दाता बडो?

दाता जहाँ चाहे तहाँ दान चल्यो जाय। जहाँ चाहे तहाँ दाता दान कूँ राखे। 🌷🙏🌷

श्री प्रभु और श्री आचार्य या श्री गुरु की समतोलनता कभी अंकित न होनी चाहिए या करनी चाहिए🌷🙏🌷

आचार्य - गुरु

जैसे शिक्षा प्रदान है

वैसे

श्री प्रभु प्रेरणा ज्योत है - प्रेरणादायक है - प्रेरणास्रोत है

आचार्य - गुरु

साक्षात दर्शन है - अनुभव है

वैसे

श्री प्रभु अद्रश्य दर्शन है - अनुभूति है

आचार्य - गुरु

स्व समकक्ष अर्थात स्व देह है जो स्व अध्ययन करके स्व को निपूर्ण और स्व चेतन किया है

वैसे

श्री प्रभु स्व विग्रही है स्व सामर्थ्य है स्व अनंत देही है जो स्व को स्थिर कर अनंत निपूर्णत है और अनंत चेतना दायक है

आचार्य - गुरु

श्री प्रभु कृपा और अनुग्रह आधारित स्व कक्षित विद्यामान प्रज्ञावान सिद्धि पुरुषार्थी करके स्व को प्रदिप्त करता है - जो प्रकृति, संस्कृति, सृष्टि, संसार, जगत और ब्रह्मांडो को समांतर करता है

वैसे

श्री प्रभु संकेतात्मक है, लीलात्मक है, जागृतक्त है, सहोदर है, सत्यवाहक है, पुष्टिउदिप्त है, पूर्ण पुरुषोत्तम है, जो सदा निर्मोही, निःशंक, निरंजन है🌷🙏🌷

जो सर्वोत्तम - सर्वोच्च - सर्वश्रेष्ठ है उन्हें ऐसे "दान बडो या दाता" जैसे विचार, अध्ययन, शिक्षा, सत्संग माध्यम से निम्नकक्षिय घटमाल न संबोधित - संयोजित - समलैंगिक - समवैदिक न करो🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

जगत की जो जो संस्कृति है, हर संस्कृति सिद्धांत और नियमन आधारित है - जिसमें विश्वनीयता, योग्यता, शुद्धता, पवित्रता, अद्वैतता, और समानता प्राथमिक गुण, शिक्षा और अनुभूति आधारित है।

जो जीव है, यह जीव को स्व पुरुषार्थ से अपने आपको पहचान कर - सदा आनंद की अनुभूति और जागृतता करनी ही है।

" चौरासी वैष्णव " एक ऐसा आदर्श सिंचन, शिक्षा, अध्ययन और योग्य परिवर्तन चारित्र्य की संस्कारिता है।

हमारा जीवन को श्रेष्ठ मार्गदर्शन प्रदान करता है। जीव सृष्टि, जीव प्रकृति, जीव संस्कृति और जीव वृत्ति को श्रेष्ठता प्रदान करे और करवाये 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव " पुष्टिमार्ग का एक अनोखा मार्गदर्शक साधन है। जो जीव को योग्य गति ही प्रदान करता है। जीव विशुद्ध, पवित्र, आनंदमय, संस्कार मय और पुरुषार्थी हो इसलिये यह चौरासी वैष्णव वार्ता योग्य द्रष्टांत रुप हो कर जीव का बार बार परिवर्तन से अपने आप को योग्यता पूर्वक घड सकता है 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी के सर्वोत्तम - सर्वोच्च प्रयत्न और पुरुषार्थ और स्व सामर्थ्य यथार्थ जीवन जो पुष्टिमार्ग प्रणेता सिद्ध करता है।

जो जो जीव उन्होंने अपने से जोडे हर जीव श्रीप्रभु एकात्म पुष्टि द्रष्टांत और शिक्षा है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष कल

कहां नही हो श्याम

ऑ घनश्याम!

कहां नही हो श्याम

गगन निहालु बादल घने श्याम

धरती निहालु मिट्टी घनी श्याम

नदी नीर निहाले धारा घनी श्याम

पर्वत निहाले चट्टानें घनी श्याम

जहां नजर निहाले हर हर श्याम

कहां नही हो श्याम

ऑ घनश्याम!

कहां नही हो श्याम

मन मानव निहालु तन घने श्याम

जन जीवन निहालु विचरे घने श्याम

घर घर निहाले कर्कश घने श्याम

डग कदम निहाले पगदंडी घने श्याम

कहां नही हो श्याम

ऑ घनश्याम!

कहां नही हो श्याम

अब तुम ही कहो

कहां कहां ढूंढे श्याम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रस "

भक्ति रस

ज्ञान रस

वीर रस

प्रेम रस

विरह रस

करुण रस

शृंगार रस

आनंद रस

मधुर रस

रस से भरे यह जीवन

प्रकृति का आस्वादन

सृष्टि का पूर्णासृजन

जगत का विहंगावलोकन

ब्रह्मांड का प्रचुरिंगन

हमें

सदा सुषुप्त

सदा आकृष्ट

सदा संस्कृत

सदा विभूत

सदा उत्कृष्ट करते है।

यही तो धर्म है

यही तो कर्म है

यही तो मर्म है

यही तो उर्म है

हे मनुष्य जीव! सच तु कितना महान और श्रेष्ठ है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

" दान बडो या दाता? " ऐसे प्रश्न सोच भी नही सकते - विचार व्यक्त भी नही कर सकते और कार्यरत भी नही कर सकते🌷🙏🌷

ऐसी सोच - विचार और कार्य ऐसे मनस्वी को ही आते है - जो स्वार्थ भरे है, जो अज्ञात है - जो नीज वृत्ति को वृथा रुप धरके योग्य - शुद्ध और पवित्र मनोवृत्ति को निम्न और हैरान परेशान करते है। ऐसे वैचारिक धारा से दूर ही रहना समय सूचकता है।

दान - दाता जैसे विशुद्ध शब्दों को निम्नकक्षिय अर्थ में - सार्थक में परिणामीत करता है।

दान का माहत्म्य - बलिराजा से समझे

दाता का माहत्म्य - हमने जिसे जन्म दिया वह मातापिता से समझे

हम सर्वे दान रुप है - हमें सदा सार्थक और यथार्थ दान संस्कार आदरना चाहिए - शिक्षात्मक होना चाहिए - व्यवहारात्मक होना चाहिए।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



जिस देश में गंगा बहती है
उस देश के राम की गंगा मैली न हो
इसलिए
हम वाल्मीकि बने
हम काकभुशुण्डि बने
हम अत्री बने
हम अनसूया बने
हम सीता बने
हम राम बने
हम लक्ष्मण बने
हम भरत बने
हम उर्मिला बने
हम जनक बने
हम हनुमान बने
हम शबरी बने
हम केवट बने
हम अयोध्या बने
हम सर्यू बने
हम जटायु बने
हम तुलसीदास बने
हम तुकाराम बने
हम सेवक बने
हमारी यही धरोहर
हमारे यही संस्कार
इसलिए तो गंगा इस देश में है
कुछ भी हो कैसे भी हो
न होगी गंगा मैली राम
हर स्त्री है गंगा हर स्त्री है सीता
हर स्त्री है उर्मिला हर स्त्री है शबरी
न होगी गंगा मैली राम
हम है सेवक हम है हनुमान
हम है भरत हम है लक्ष्मण
" Vibrant Pushti "
" जय श्री राम " 🌷🙏🌷



राधा🌷

राधे🌷

श्री राधा🌷

श्री राधे🌷

श्री राधा राधे🌷

श्री राधा कृष्ण🌷

श्री राधे कृष्ण🌷

श्री राधा श्याम🌷

श्री राधे श्याम🌷

श्री राधा वल्लभ🌷

ज्ञान की गहराई

भाव की उंडाई

उपासना की गहराई

भक्ति की उंडाई

ज्ञान की तपश्चर्या

भाव की समर्पणता

केवल एक ही अक्षर से प्रकट हो जाता है - " र "

बाकी हर जोडणी - एकात्मता - समाना - जुडना - संयोजना ज्ञान और भाव से उत्स होता है।🌷🙏🌷

तब ही राधा का प्राथमिक प्राकट्य और समयांतर के बाद कृष्ण का प्राकट्य होता है।

अर्थात प्रेम का प्राकट्य होने के बाद प्रिये - प्रितम - प्रियतम - प्रियतमा का उत्स होता है।🌷🙏🌷

र + अ + ध + अ = राधा 🌷🙏🌷

र अर्थात प्रेम

रा अर्थात प्रेम को गति

ध अर्थात शुद्ध और पवित्र पूर्वक योग्य

धा अर्थात सटीक - चोक्कस - विश्वास पूर्वक श्रेष्ठ 🌷🙏🌷

" राधा " - शुद्ध पवित्र विश्वास से सत्याधिपति श्रेष्ठ प्रेम🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कल आगे

" यात्रा "

यात्रा अर्थात अपने आप को शुद्ध, पवित्र और योग्य कर के ऐसे ज्ञानवर्धक, भक्तिप्रदायक, नैन तन मन धन जीवन को अति शुद्ध, अति पवित्र और अधिक योग्य करने की स्थली का गमन।

हवेली दर्शन - यात्रा है

नदी स्नान - यात्रा है

धर्म सत्संग - कथा - प्रवचन स्थली यात्रा है

भजन - कीर्तन - धून करने की स्थली यात्रा है

गुरु द्वार - यात्रा है

मंदिर - यात्रा है

परिक्रमा - यात्रा है

सेवा स्थली - यात्रा है

बैठकजी - यात्रा है

श्री प्रभु धाम - यात्रा है

श्री आचार्य धाम - यात्रा है

श्री गुरु धाम - यात्रा है

श्री भक्त धाम - यात्रा है

श्री तपोभूमि - यात्रा है

श्री तपोवन - यात्रा है

श्री लीला स्थली - यात्रा है

श्री मनोरथ स्थली - यात्रा है

श्री संगम स्थली - यात्रा है

श्री कष्ट नष्ट स्थली - यात्रा है

श्री उदगम स्थली - यात्रा है

यह स्थली - धाम - गृह - द्वार के संकल्प के साथ हमें शुद्ध, पवित्र और निष्कपट, नि:संशय, नि:संदेह रहना है।

तब ही हमारी यात्रा नैन, तन, मन, धन, जीवन से सार्थक रहेगी।🌷🙏🌷

हर डग - कदम - क्षण - सांस - रज - कण - रंग - बूंद - विचार - क्रिया पर शुद्धता, पवित्रता और विश्वासनीयता हो - तो यात्रा है।🌷🙏🌷

बाकी तो - हेराफेरी है - अदला बदली है - घुमना फिरना है - यात्रा नही।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "
चौरासी चौरासी चौरासी
कितनी तरह के
जन्म
जीवन
धर्म
पोषण
वरण
करण
मरण
ज्ञान
भाव
भक्ति
परमार्थ
प्रेम
परमात्मा
परब्रह्म
सच चौरासी चौरासी चौरासी
कुछ भी करे
कुछ भी धरे
कुछ भी हरे
कुछ भी भरे
कुछ भी चरे
यह चौरासी को एक चौरासी काटनी - घटानी हमारे नैन मन तन धन जीवन से है।
सनातन धर्म की नींव जो हमारे ऋषिमुनियों ने जो बंधारण से बांधी है अपने अनुभव अपनी अनुभूति अपनी मति और गति से।
काल का अतूट प्रवाह
काल का अकल्प्य असर
न इन्हें मार सकी - टाल सकी - हटा सकी - हरा सकी - नष्टा सकी🌷🙏🌷
नैन मन तन धन जीवन ही ऐसे संस्कृते - संस्कारे - साक्षरे तो हम भी काल को परिवर्तन कर सकते है।🌷🙏🌷
सोचे - ब्रह्मांड नष्ट होता है?
सोचे - सूर्य नष्ट होता है?
सोचे - सृष्टि नष्ट होती है?
सोचे - प्रकृति नष्ट होती है?
सोचे - जगत नष्ट होता है?
नही🌷🙏🌷
हम भी यही ब्रह्मांड, सूर्य, सृष्टि, प्रकृति और जगत का सिद्धांत सनातन धर्म के आचरण से स्वीकार ले - अपना ले, तो अवश्य हम भी ऐसे चौरासी को मार सकते है, टाल सकते है, हटा सकते है, हरा सकते है, नष्ट कर सकते है।🌷🙏🌷
आज हम कहीं भी ऐसी स्थली की यात्रा से जो स्पर्श पाते है - हम वहीं ही साक्षात अनुभव करते ही है।🌷🙏🌷
यह धरोहर को प्राश्च्यात वातावरण से नष्ट न करो🌷🙏🌷
हमारी धरोहर हमारे हाथ🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

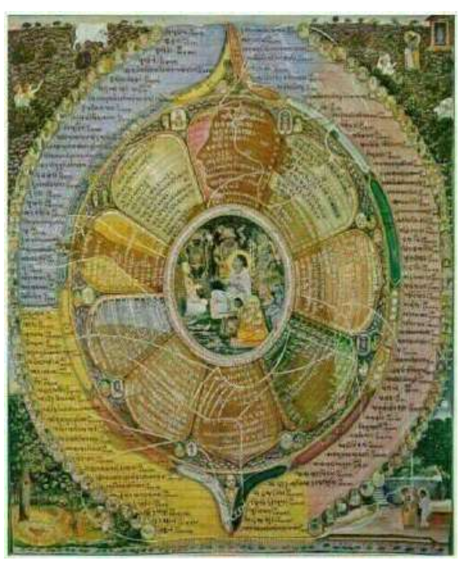
मेरा मन न लगे
ऑ मेरा मन न लगे यमुना राणीजी
जब तक न दर्शन पाऊँ राधा राणीजी

घाट घाट पर परिक्रमा लगाऊँ
राधे राणी की गूंज पुकारूँ
जब तक न आये कोई संकेत
चक्कर चक्कर हर घाट लगाऊँ
ऑ मेरा मन न लागे यमुना राणीजी
जब तक न दर्शन पाऊँ राधा राणीजी

व्रज चौरासी कोष घुमाऊँ
डग डग राधा नाम जगाऊँ
जब तक न आये कोई संदेश
दट कर जग कर कण कण तरासुँ
ऑ मेरा मन न लागे यमुना राणीजी
जब तक न दर्शन पाऊँ राधा राणीजी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कृष्ण

यमुना

गोवर्धन

व्रज

वल्लभ

अष्टसखा

चौरासी वैष्णव

🌷🙏🌷

जन्म जीवन को प्रेममय आनंदमय करने के लिए ही है

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" चौरासी वैष्णव "

चौरासी

यह चौरासी क्या?

चौरासी लाख जन्म नही

चौरासी लाख जीव तत्वों नही

चौरासी लाख भव नही

चौरासी योग्य जीवन

चौरासी यो्ग्य सिद्धांत

चौरासी योग्य गुणों

चौरासी योग्य चारित्र्य

चौरासी योग्य बंधारण

चौरासी योग्य संबंध

चौरासी योग्य नित्यता

चौरासी योग्य सभ्यता

चौरासी योग्य विविधता

चौरासी योग्य धर्मिष्ठा

चौरासी योग्य विद्या

चौरासी योग्य शिष्टता

चौरासी योग्य साक्षरता

चौरासी योग्य निपुणता

चौरासी योग्य निष्ठा

चौरासी योग्य सत्यता

चौरासी योग्य पूर्णता

चौरासी की अदभुत विशिष्टता जो जीव अपनाये वह जीव भगवद् - भागवत🌷

पुष्टिमार्ग की यही अखंडता - अलौकिकता है जो सदा रहे - निपट निकट🌷🙏🌷

कितना अदभुत सौभाग्य

कितना अदभुत वैराग्य

कितना अदभुत साध्य

हाँ! चौरासी से ब्रह्मसंबंध सत्य

हाँ! चौरासी से पुष्टिमता नित्य

हाँ! चौरासी से जन्मोजन्म कृत्य

हे वल्लभ! धन्य है हम, जो हमें नित निकट आचार्य पाये🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चौरासी वैष्णव "

हमारे आचार्य, संत, भक्त ने अदभुत सिद्धांत सिद्ध किया है🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी ने ऐसी रीति - निति को सिद्धांत से सिद्ध किया की जो जीव अपनावे वह जीव " वैष्णव " हो जावे।🌷🙏🌷

" वैष्णव उपरांत और कछु पदारथ नाहीं है "

यह व्यक्तित्व जीव से वैष्णव होने का वैज्ञानिक और जीवन सैद्धांतिक मार्ग।

दामोदरदास हरसानीजी - हम उनके जन्म से श्री वल्लभाचार्य के शरणागत तक और श्री गुंसाईजी के शिक्षात्मक तक से स्व गोलोक धाम तक हमें इतने अनोखे और द्रढता योग्य पुष्टि सिद्धांत प्रमाणित कर गये - जो अपनाये सो जंग निहाल👍

" संदेह - संशय को कैसे मिटाये "

हर जीव अपनी तनमात्राऐ और अंग इन्द्रियों से अपने आपको शिक्षित करता है। जो तनमात्राऐ और इन्द्रियों का जैसा उपयोग करता है वैसा अपने आपको संस्कार संस्कृत करता है। 🌷🙏🌷

बिलकुल हमसा जीवन - हमसी जीवनशैली - हमसी जीवन घटमाल।

पर

जगायो बाल उम्र संस्कार मातापिता से

जो भी करना शुद्ध करना - पवित्र करना

नष्ट किया मल तनमात्राऐ अंग इन्द्रि संसार

मातापिता से पाया - " भक्तिमारग में प्रीत सदा तहाँ तांई अमल सदा "

प्राथमिक यह सिद्धांत

" सदा भक्तिप्रदायक होना "

सो संसार मल नष्ट हो🌷🙏🌷

बचपन में जो जो अपनाया वैसा वैसा स्वने जगाया

स्व जीवन चरित्र ही प्रमाण है। जो है सो है।

यह पल से यह सिद्धांत अमल - " सदा भक्तिप्रदायक होना " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अंतःरंग "

अदभुत! अदभुत! अदभुत!

हम कितने रंग समझते और पहचानते है?

हम जो जो रंग से जुडते है वह वह रंग हम समझते है और पहचानते है।

पर

यह " अंतःरंग "?

हम यह शब्द कही बार धार्मिक प्रवचन, कथा या सत्संग में सुनते है।🌷🙏🌷

" प्रभु में अंतःरंग हो गये "

यह " अंतःरंग " हम कैसे समझे, कैसे पहचाने और कैसे रंगाये?

यह जो लिख रहा हूं - आप पढ रहे हो - हर मन के अंदर एक तीव्रता जागी - मुझे अंतःरंग होना है!🌷🙏🌷

हाँ! अवश्य

जो संसार से अंतःरंग वह प्रभु से अंतःरंग!

जो संसार के न रहे अंतःरंग वह विरक्त हो सकते है अंतःरंग

जो अंतःरंग ही अंतःरंग🌷🙏🌷

अति गहराई और अविराही से हो

जैसे

श्री चैतन्य महाप्रभु

श्री कुंभनदासजी

और कहीं ऐसे है जो रंग रंग रंग रंग दे🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष कल

हे कान्हा!

चल पड़े है ऐसे रास्ते
जहां तेरा दर हमें ठहराता है
जमाना चाहे कितना मुझे रोक ले
कदम उठाया रुकेगा नही

चाहे चार कदम संसार आये
सारे संसार को मन की स्थिरता से
ऐसे चूर चूर करेंगे
कभी न संसार भटकेगा
कभी न माया मटकेगी

समझ लेना तु अब मुझसे दूर नही
विरह की हर लडी दूरी की हर घडी
तुझे पुकार पुकार कर तेरे निकट आयेगी
चाहे तु ब्रह्मांड में कहीं भी छूपा हो
मेरी रुह की विरहाग्नि से
तेरी आत्मा मेरे आत्मा में समायेगी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" अंत: रंग "

अंत: रंग यह ब्रह्मांड में कौन कौन है?

अति गहराई से पाया

सूर्य - अंत: रंग

अदभुत - अदभुत - अदभुत

स्व से उठा हर किरण - तेज तेज तेज

स्व से उठी हर उर्जा - उत्स उद्भव प्रकट

स्व से बही हर धारा - शुद्ध विशुद्ध परम शुद्ध

ओहह! कितना अंत: रंग!

केवल स्व रंग - दूजा न कोई

अपने आप को क्या स्वरुप कर दिया!

सच! अंत: रंग - अंत: रंग - अंत: रंग

जो हर हर अंत: रंग🌷🙏🌷

हे सूर्य! आपको कोटि कोटि प्रणाम🌷🙏🌷

केवल एक ही पुरुषार्थ - तेजोमय करना

अदभुत! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष कल

कहीं न कहीं हम जा रहे है
हर घडी हर पल हर दिन
कहां जा रहे है क्यूँ जा रहे है?
जिन्हें पता है - यहां जा रहे है
उन्हें यह भी पता है कहां जा रहे है

मैं अपना सोचू तो
यह घडी यहां यह पल वहाँ यह दिन कहां
क्यूंकि हर एक के जाने से
मैं भी उन्हों के पीछे उन्हों से आगे निकलने जाता हूं
जाता हूं जाता हूं बस जाता हूं
कुछ पाता हूं कुछ खोता हूं कुछ लुटाता हूं
यूंही जिंदगी बसर गई - बिखर गई - जम गई - ठहर गई - गुजर गई है
ऐसे ही जिंदगी समाप्त करता हूं

जो जाता है उन्हें पूछता हूं
जा रहे हो - वापस आओगे?
आजतक - अभीतक जो गये उनके आखरी दिदार से जाना और समझा
नही आना है दुबारा
है ऐसा- जो नही आने का दिल करता है🌷🙏🌷

Vibrant Pushti
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरियाली

हरि आली

हरि हरि याली याली

हरि हरि आली आली

जीवन में कहीं ऐसे दिन ऐसी शाम ऐसी रात

हरि हरि हरि हरि

याली याली याली याली

पुकारे हरि हरि

पुकारे याली याली

मन पुकारे हरियाली

तन पुकारे हरियाली

दिल हिलोरे हरियाली

प्रेम प्रेम की हरियाली

काले काले मतवाले की हरियाली

गोरी गोरी नखराली की हरियाली

मेरी हरियाली तेरी हरियाली

झुमती हरियाली नाचती हरियाली

🌿🌿🌷🌿🌿🌷🌿🌿🌷🌿🌿

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌿🌷🌿



१३५ करोड़ हिन्दुस्तानी

अदभुत! 🌷🙏🌷

अपने ह्रदय में कितना विश्वास

अपने मन में कितनी विनम्रता

अपने आंतरिक जीवन में कितनी श्रद्धा

सच! इश्वर को मान लिया - मान लिया🙏

सच! अल्लाह को मान लिया - मान लिया🙏

सच! गुरु द्वारा को मान लिया - मान लिया

सच! अग्नि को मान लिया - मान लिया

सच! इसु को मान लिया - मान लिया

सच! गुरु को मान लिया - मान लिया

सच! मूर्त को मान लिया - मान लिया

सच! मंत्र को मान लिया - मान लिया

सच! शास्त्रों को मान लिया - मान लिया

सच! जिसने अपने सत्यानुभूति से कह दिया - मान लिया

कितनी सरलता

कितनी ऐकता

कितनी विश्वनीयता

कितनी संपता

कितनी कौटुंबिकता

हाँ! यही तो जन्म जीवन का मुख्य सिद्धांत है - रुप है - भूमिका है - श्रेष्ठता है - योग्यता है 🌷🙏🌷

आध्यात्मिक पथ - ज्ञान - आत्मीयता - सैद्धान्तिकता से कहे तो हम हिन्दुस्तानी सर्वोच्च है - सदगुणों सभर है - जीवनयोगी है।🌷🙏🌷

आप सर्वे को मेरा दंडवत प्रणाम🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी सर्व श्रेष्ठता है मनुष्य मन की
जो मन से माधवदास बनादे

कितनी सर्व योग्यता है मनुष्य तन की
जो तन से तृतीय लोक पहुंचा दे

कितनी सर्व विनियोगता है मनुष्य धन की
जो धन से दानेश्वरी कर्ण बनादे

कितनी सर्व विशिष्टता है मनुष्य जीवन की
जो जीवन से जगदीश बनादे

कितनी सर्व उपाधि है मनुष्य जगत की
जो जगत से जगाधरी बनादे

संस्कृति शास्त्रों और मूलत्व विज्ञान समझते समझते कितनी अमूल्यता है मनुष्य की🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



तुम्ही पधारे तुम्ही चिंतायें

कैसे सिधाये जगत जीव जंजाल

स्तुतिं करोति सदा विनत वल्लभ

हे यमुना! तु ही सौख्यमामोक्षतः

तु ही पुष्टि स्त्रोत प्रेरणा जगावत

बार बार करुं नमन सकल सिद्धे

तु ही जता कछु मार्ग उद्धारे

खलखल छमछम नाद नूपुरे

भये प्रकट श्री यमुने ठकुराणी घाटे

वल्लभ वल्लभ! कही गूंज पुकारे

ममास्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता

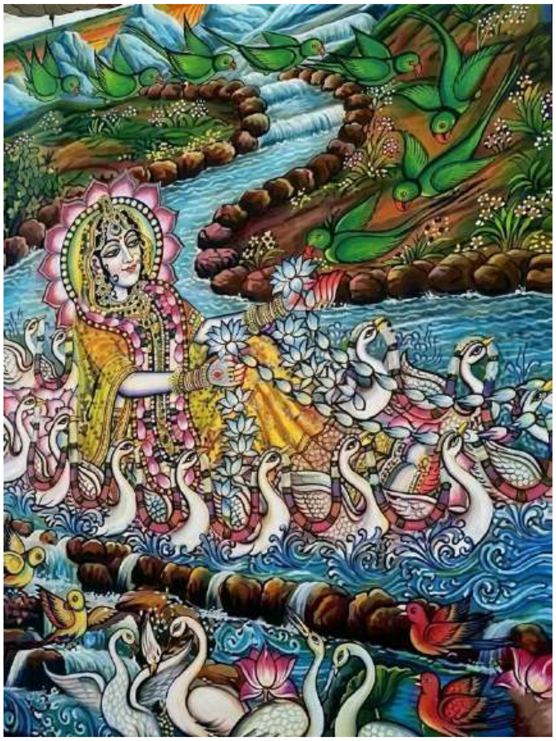
समस्तदूरितक्षयो भवति वै मुकुंद प्रिये

स्वभावविजयो भवेत वदति वल्लभः श्री हरे।

हे यमुना! तुम्हें शत शत नमन🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" पुष्टिमार्गीय सेवा "

अनोखी - अलौकिक और वैज्ञानिक

जो जो व्यक्ति यह रीति निति अपनाये

वह वैष्णव होते होते श्री परब्रह्म से एकात्म हो जाये🌷🙏🌷

प्रारंभिक - संकल्प से सिद्धि तक

मंगला से शयन तक

ब्रह्ममुहूर्त से रात्री की आखरी कालिन तक

श्री परब्रह्म से वात्सल्य - पराकाष्ठा तक

केवल स्व को लुटाना - लुटाना - लुटाना

परब्रह्म भी स्व को लुटते लुटते अपने में एकात्म कर देना

जैसे गोपि

जैसे अष्टसखा

जैसे कृष्ण लीला

अदभुत! अदभुत! अदभुत!🌷🙏🌷

हे वल्लभ! तुने कैसी जगाई ऐसी रीति

गृहे गृहे बसे मेरे नवनीत प्रियाजी🌷🙏🌷

घर घर बसे मेरे लड्डू गोपाल🌷🙏🌷

हवेली हवेली बसे मेरे गोवर्धन नाथ🌷🙏🌷

बैठकजी बैठकजी बसे मेरे श्री वल्लभाचार्य🌷🙏🌷

हे वल्लभ! सदा हमें पुष्टात्मक जागृत रखना🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ठकुराणी त्रीज "

ठकुराणी अर्थात महाराणी

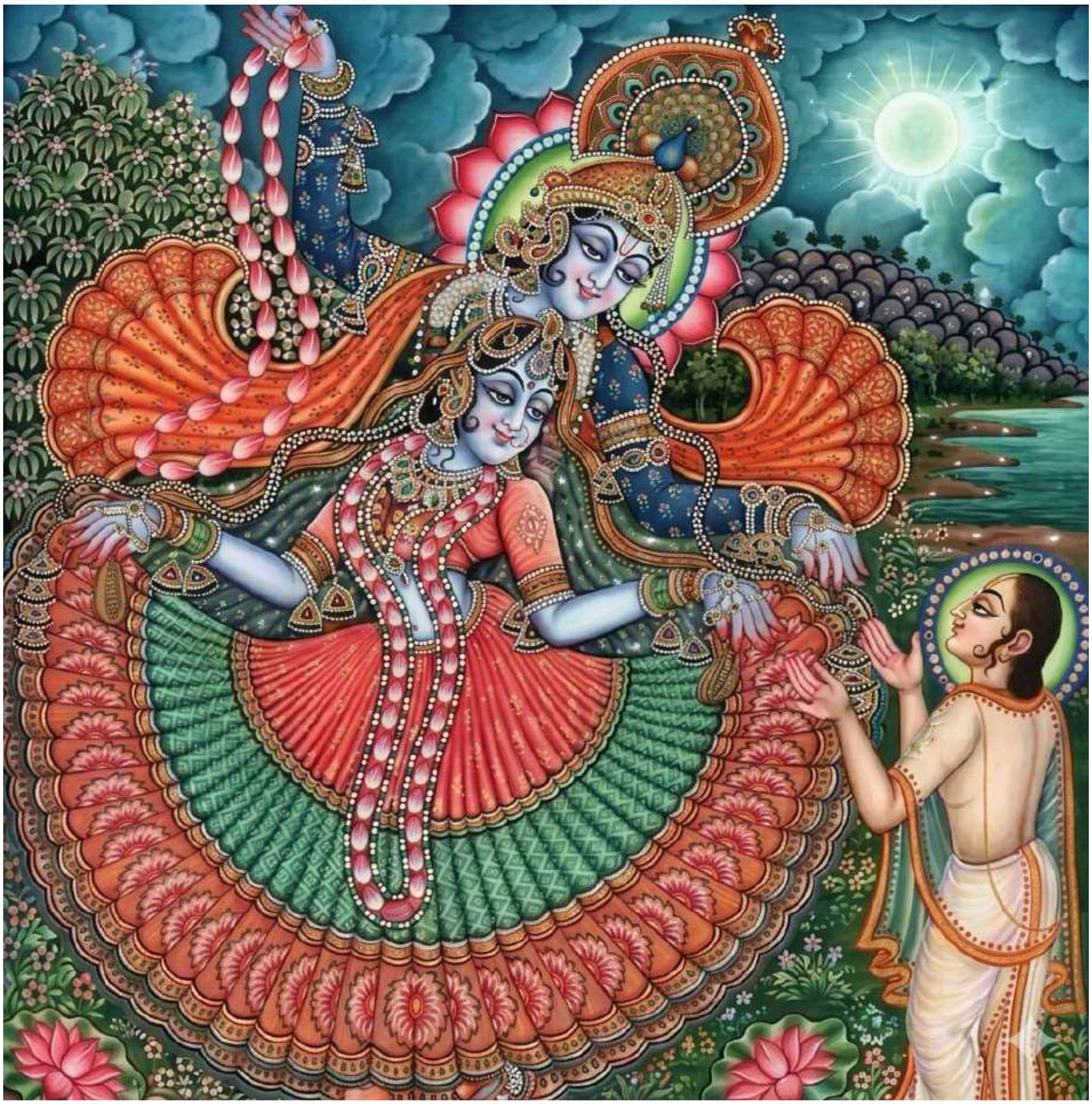
श्री वल्लभाचार्यजी ने श्री यमुना महाराणीजी को " ठकुराणी " से संबोधित क्यूँ किया?

गहराई और भावात्मक सत्संग है।

अचूक अपना सूचन से पुष्टात्मक ज्ञान उर्जित करे🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



राधे श्याम राधे श्याम
राधे श्याम राधे श्याम

श्यामा श्याम श्यामा श्याम
श्यामा श्याम श्यामा श्याम

श्रीयमुना वल्लभ श्रीयमुना वल्लभ
श्रीयमुना वल्लभ श्रीयमुना वल्लभ

वल्लभ श्रीनाथ वल्लभ श्रीनाथ
वल्लभ श्रीनाथ वल्लभ श्रीनाथ

गिरिराज गोपाल गिरिराज गोपाल
गिरिराज गोपाल गिरिराज गोपाल

विठ्ठल नवनीत विठ्ठल नवनीत
विठ्ठल नवनीत विठ्ठल नवनीत

गोवर्धन गोविंद गोवर्धन गोविंद
गोवर्धन गोविंद गोवर्धन गोविंद

सखा गोपि सखा गोपि
सखा गोपि सखा गोपि

राधा माधव राधा माधव
राधा माधव राधा माधव

गीता कृष्ण गीता कृष्ण
गीता कृष्ण गीता कृष्ण

पुष्टि वल्लभ पुष्टि वल्लभ
पुष्टि वल्लभ पुष्टि वल्लभ

मीरा गिरिधर मीरा गिरिधर
मीरा गिरिधर मीरा गिरिधर

दंडवत वल्लभ दंडवत वल्लभ
दंडवत वल्लभ दंडवत वल्लभ

नमन यमुना नमन यमुना
नमन यमुना नमन यमुना

प्रणाम श्रीनाथ प्रणाम श्रीनाथ
प्रणाम श्रीनाथ प्रणाम श्रीनाथ

सेवा पुष्टि सेवा पुष्टि
सेवा पुष्टि सेवा पुष्टि

जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण
जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गिरिराज द्वारे व्रज पधारे
मेरे तन वदन अंग व्रज रज उडाये

वल्लभ स्तुति गोकुलचंद्र पधारे
मेरे मन वचन वरण ब्रह्मसंबंध बंधाये

ठकुराणी घाटे श्रीयमुना पधारे
मेरे धन कार्य पुरुषार्थ मंत्र दिक्षाये

छोकर वृक्षे पुष्टि पधारे
मेरे जीवन मधुकर मधुदेश सिधाये

हे वल्लभ! भक्तिप्रदायक
जन्म अजन्म तनमात्राएँ छुडाये

दंडवत प्रणाम🙏
हे आचार्यवर!
मुझे न कभी अब भटकाये🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



गोरस बेचने

जाती गोपियाँ

कैसा हाल

कैसा जीवन

जैसे आज हम जीते जीवन

पर

एक मन बनाया अपना

गोपियाँ ने मन बसाया कान्हा

दौड दौड के कान्हा पहुंचा

हाथ पकड कर मन चुराया

हमारा

न मन बना एक हरेक का

न मन बसिया कोई खेवैया

कौन दौडे कैसे दौडे

हर कोई आगे हाथ पसारा

तो

न हम किसीके न कोई हमारा

भूला भटका हमारा साया

जो करे हर कोई हर लुटे

कैसे बसे जीवन में सांवरिया

जागो जागो हे मतवाले

बनो उद्धारक हे स्वार्थवाले

कान्हा ने जीवन सिखलाया

अपनालो हे जन्मोवाले

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना जल की प्रेम रस धारा बहाऊँ

गिरिवर पत्ते पत्ते के वस्त्र पहनाऊँ

निधिवन फूलों से शृंगार सजाऊँ

तुलसी पत्तो की माला बंधाऊँ

मयूर पंख का मुकुट लगाऊँ

गौर चंदन का तिलक दोराऊँ

रत्न जडित हस्त कंगन सोहावुँ

नीलांबर सूत का अंगरखा ओढाऊँ

पग पैजनिया छम छम नचाऊँ

प्रेम प्रेम वात्सल्य रस नेहाऊँ

कृष्ण कृष्ण नाम अधर रटाऊँ

हस्त हस्त मधुर सेवा पधराऊँ

निरख निरख प्रियतम नैन बसाऊँ

आत्म परमात्म एकात्म जगाऊँ

हे मेरे कान्हा! तु ही मेरा सांवरियाँ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" ७५ साल स्वतंत्र दिन "

भाग्य भाग्यवान है हम हिन्दुस्थानी
हमारा देश हमारे वासी हमारे धर्मी
साथ साथ एक हाथ कदम मिलाये
समृद्ध करे सुरक्षित करे साक्षर करे
हर कोई हमारा हर कोई हर सहारा
हिन्दु है हम हिन्दी है हम हमसे हमारा
संकल्प करे वचन धरे सौगंध करें
करे बुलंद इतना
कोई भी तुफान आये
कोई भी उलझन आये
नष्ट करेंगे रक्षण करेंगे
समृद्ध करेंगे आबाद करेंगे
विश्वनीय करेंगे न्योछावर होंगे

जय हिंद! जय भारत!
जय श्री राम जय श्री कृष्ण

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



अरि मन कैसा तु अपने को घडे

अरि मन कैसा तु अपने को घडे

स्वजन को दोष दोष दिखाये

स्व का न दिखे दोष

ऐसा बांध के मन जीये जीवन

ऐसा बांध के मन जीये जीवन

हर कोई प्रंपंची नही कोई मुझसा

घट घट जन्म खोय

ऐसे जग में कैसे जीये जाय

ऐसे जग में कैसे जीये जाय

स्वजन से सुसंस्कार जताये

मन मन न अभिमान न दर्षाये

स्व सुशील स्व निरपेक्षी

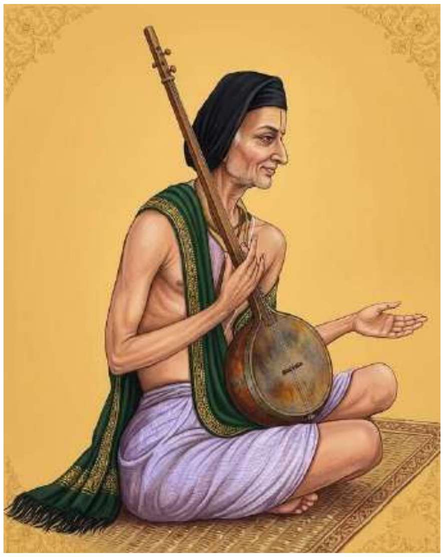
नित नित पुरुषार्थ नित नित सेवा

नित नित शिक्षा नित नित संस्कृति

घट घट सुधरी जाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कदम की डाल पर शोभे रंगबिरंगी फूल
झुलन खेलने तडपाये मन
उंची सी डालीयां पहुंचाये दूर दूर नैन
लहराती चुनरियाँ पुकारे प्यारा प्रितम

ओ मैंने पकडली झुलन डालीयां
मैंने पकडली झुलन डालीयां
मैं तो उडी प्रियतम द्वार

उड उड के नजर बिछाऊँ
दूर दूर प्रिये संदेश पहुंचाऊँ
ओ मैंने सजा सोलह शृंगार
मैं तो उडी प्रियतम डगरिया
ओ मैंने पकडली झुलन डालीयां
मैं तो उडी प्रियतम द्वार

लचक लचक कमरिया मचके
झुला झुलन उंचे उंचे पहुंचे
ओ मेरी चुनरी फररर फरकाऊँ
मैं तो उडी प्रियतम डगरिया
ओ मैंने पकडली झुलन डालीयां
मैं तो उडी प्रियतम द्वार

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्मसंबंध " पुष्टिमार्ग का अलौकिक परमानंदीत परमस्पर्श आज्ञांकित दिव्य परमात्मायुक्त एकात्म संयोजन - संबंध - सूत्रात्मक नियमोनुब्ध शिष्टात्मक बंधन।

जो केवल परमप्रेमी करुणानिधि परमहंसी स्वधर्मी कल्याणकारी परमहितेषी जगद्‌गुरु आचार्य ही परस्परी सम्मलित संयोजन - संबंध कर सकते है।🌷🙏🌷

श्री जगद्‌गुरु अखंडभूमंडलाचार्य परम अंशी श्रीवल्लभाचार्यजी ही संसंबंधित कर सकते है।

दंडवत प्रणाम🌷🙏🌷श्री आचार्यजी!

वो ही प्राकट्य कर सकते है - पुष्टिद्रष्टि - पुष्टिसंस्कार - पुष्टिसृष्टि - पुष्टिजीवन🌷🙏🌷

वो ही कर सकते है

" कृपा जलधि संश्रिते मम मन सुखः भावय् "

"स्वभाव विजयो भवेत "

बाकी तो हर कोई - दिक्षा देते है 🙏

संबंध नही करवा सकते है।🌷🙏🌷

यह परमसत्य है - सैद्धांतिक प्रमाणित है - वैदिक सूत्रधार है।🌷🙏🌷

जो अपेक्षाकृत है वह दिक्षा प्रदान है

जो पुष्टिजीव उद्धारक है वह पुष्टियोक्ता है, पुष्टात्मक है, पुष्टिप्रदायक है।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" पवित्रा "

पवित्रा अर्थात पवित्र - पवित्रता - पवित्रयी - पवित्रमिह - पवित्रीकरण।

जीवन के अनेक योग संजोग और व्यवहार काल चक्र के साथ घुमता रहता है, इनमें मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ गुण " पवित्र " - पतित पावन नही हो सकता है - रह सकता है - रख सकते है🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति की गहराई और वैज्ञानिक द्रष्टिकोण ऐसे बंधारण से सिंचि है जो हमें ऐसे श्रेष्ठ गुणों की ओर खिंचती है - आकर्षती है - अपनाती है - प्रेरती है।

एक सूत का धागा हमें क्या से क्या में परिवर्तित करती है! अदभुत🌷🙏🌷

एक सूत का धागा हमें क्या से क्या का संकेत करती है, जो हम पवित्र तो क्या विशुद्ध, निर्विघ्न, निर्मोही, निरक्षेप हो जाते है।

समस्त दूरित का क्षय करके परम श्रेष्ठ कर देता है -

पवित्रा

जनेऊ

राखी

कंठी

माला

अदभुत🙏 अलौकिक🙏निश्चिंत🙏

कितनी सटीक - विश्वनीय - श्रद्धेय - वैज्ञानिक संस्कृति

जो न आये टोना - जो भागे हर दुष्ट कोना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पवित्रा एकादशी की पुष्टिगुणात्मक प्रार्थना🌷🙏🌷

" पंच महाभूत तत्वों से हमारी रचना और पंच महाभूत तत्वों में विलीन होना "

अर्थात हमें यह तो अवश्य समझना ही है

१. पंच महाभूत तत्वों

२. पंच महाभूत तत्वों की असर

३. पंच महाभूत तत्वों की भूमिका

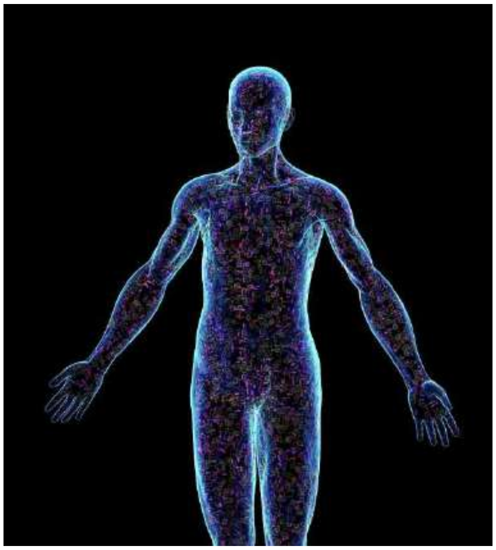
४. पंच महाभूत तत्वों का परिवर्तन

५. हमने जो मनुष्य जीव पाया है उनका उद्देश्य

हमें वैज्ञानिक आधारित नही पर जो हम स्व हयाती है - कैसे? क्यूँ? यह तो हम जाने - समझे - पहचाने।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



प्रेम की एक बात कहे

हे कृष्ण!

तन मेरो मन मेरो

पर

रंग तेरो संग तेरो

बस! यही ही पराकाष्ठा है मुझमें🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" श्याम रस "

श्याम रस

श्याम - श्याम घनघोर उमडे - श्याम निहाले

श्याम - श्याम तमाल हिले - श्याम निहाले

श्याम - श्याम पंख उडे - श्याम श्याम गाये

श्याम - शाम आकाश छाये - श्याम जागे

श्याम - श्याम चुनर पहने - श्याम श्याम दिशे

श्याम - श्याम काजल बसाये - श्याम नैन निहाले

श्याम - श्याम मिट्टी चट्टाने - श्याम श्याम पौढे

जित जित नजर पहुंचे तित तित श्याम नैन बसे

प्रेम प्रीत की एक ही लक्षण - श्याम श्याम श्याम हर कोई

प्रीत लगी श्याम रंग संग नैन, तन, मन, धन, जीवन श्याम रंग होई

श्याम श्याम श्याम श्याम

श्याम श्याम श्याम श्याम

हे राधा!

हे गोपि!

हे यमुना!

हे प्रिये!

श्याम श्याम वरण होय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" आधिदैविक - आधिभौतिक - आध्यात्मिक " तीन रुप के साथ हम जी रहे है।

हमें कौनसा स्वरुप उजागर करना है?

अर्थात इतना प्रमाणित हो गया है की हम उत्तम - सर्वोत्तम - परमोत्तम है।

हमारा जन्म जीवन उत्तमता से प्रारंभ होता ही है - चाहे कैसी भी दशा हो।

हमारा जन्म उत्तमता को अवश्य जानता ही है - चाहे कैसी भी परिस्थिति हो।

हमारा जन्म उत्तमता को अवश्य शिक्षित करता ही है - चाहे जो भी शिक्षा प्राप्त की हो।

हम कोई भी उम्र के हो, हमें पता ही है - हम उत्तम है और हमें उत्तमता से ही जीवन जीना है।

कितना उत्तम हमारा जीवन का पार्दुभाव है।🌷🙏🌷

चाहे कोई भी जाती हो - ज्ञाती हो - विधाती हो - विज्ञान हो - धर्म हो - मान्यता हो।🌷🙏🌷

हम उत्तम तो हमें उत्तमता से गति करके सर्वोत्तम होना है - परमोत्तम होना है।🌷🙏🌷

सामान्यतः सोचो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शेष कल..........

ख्याल खयालों में

मयूर पंख लहरें

तिरछ नजर तीरे

अधर बंसरी गूंजे

चुनरी सरररर उडे

चूडियां खनन गाजे

झनन पैजनिया बाजें

न कहीं तु दूर

न कहीं मैं दूर

डग डग तेरे साथ

स्पर्श स्पर्श तेरे हाथ

रा कान्हा धा कान्हा

का राधा न्हा राधा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



तेरी सूरत है ऐसी जो कोई सूरत नही तुझ जैसी

तु तेरी नजर से देखे तो अलग

हाँ! शायद मेरी नजर से देखे तो हो ऐसी

जो जिगर में बसा है है ही है बस उन जैसी

तु उन्हें कान्हा कहे तु इसे राधा कहे

पर

मैं इन्हें मेरा प्रिये कहूं या प्रियतम कहूं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" भाई बहन "

" बहन भाई "

जीवन की कहीं खूबसूरती - आनंद और सुख यह बंधन से है🌷🙏🌷

छोटी बहन - नन्हा भाई

बडी बहन - बडा भाई

यही शब्दों हमें क्या क्या समझा जाते है!

हमें यही स्त्री तत्व के लिए क्या होना है - क्या करना है?

सोचे - एक सूतर का धागा जो हमारी आत्मीय संस्कार से रक्षण करता है, तो उनकी उपस्थिति हमें क्या कर सकती है?

अति गहराई से समझे तो हमारा आयुष्य - आध्यात्मिक उन्नति, आनंद, सुख ऐसे रिश्तों से - बंधनों से साक्षर होते है।🌷🙏🌷

हमारे जीवन की सुरक्षित धारा इन्हीं संस्कारों से है। जो हम निभाये तो हम उत्कृष्ट - श्रेष्ठ - तवंगर - देव और परमात्मा। 🌷🙏🌷

आप सर्वे को यह संस्कार की शुभसिद्धेय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रकट कियो है "

हे वल्लभ! आप कितने करुणानिधि हो, आप कितने कृपालु हो, आप कितने अनुग्रही हो🌷🙏🌷

साधारण जीव पर कितनी करुणा🌷🙏🌷

सामान्य जीव पर कितनी कृपा🌷🙏🌷

अल्पज्ञानी जीव पर कितनी अनुकंपा - अनुग्रहता🌷🙏🌷

आपने जीवन का कितना सर्वोच्च सिद्धांत सिद्ध किया -

आप परमोत्तम हो - आप परमश्रेष्ठ हो - आप परमानंदीत हो - आप परमज्ञानी हो फिर भी आप अपने भक्तवत्सल को सर्वोच्चता प्रदान की🌷🙏🌷

जो सदा कृतार्थ करते है वही श्रेष्ठता का मार्ग रच सकते है🌷🙏🌷

जो सदा अपने भक्तशरण को अपना सर्वत्र सोंपकर जीवन का एक सिमाचिन्ह योग्य सिद्धांत जगत को सिद्ध कर अपनी परमार्थकृपा का जो चारित्र्य जताया है। आपको धन्य हो🌷🙏🌷

आपको साष्टांग दंडवत प्रणाम🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" कृष्ण "
कृष्ण - कृष्ण - कृष्ण - कृष्ण - कृष्ण - कृष्ण
कौन है कृष्ण?
गंभीरता से और गहराई से - भाव से सोचे और ज्ञान से सोचे
कृष्ण कौन?
जो किसीके जैसा नही
जो कोई उसके जैसा नही
कितनी भी तुलना करले - नही कृष्ण जैसा
एक सूक्ष्मता का भी प्रेम - कृष्ण हमारा
यह सूक्ष्मता भरा प्रेम
सूक्ष्म प्रेम किससे किया?
प्रह्लाद
शबरी
नरसिंह महेता
मीरा
सूरदास
और
" राधा "🌷
कृष्ण प्रेम - सूक्ष्म मरा
सूक्ष्म क्षण याद - सूक्ष्म क्षण स्मरण
सूक्ष्म क्षण समर्पण - सूक्ष्म क्षण वरण
सूक्ष्म क्षण आंतहः सूक्ष्म क्षण करुण
श्वास श्वास प्रेम रस रस प्रेम
रंग रंग प्रेम संग संग प्रेम
विरह विरह प्रेम एकत्व एकत्व प्रेम
जन्म अजन्म प्रेम अर्थ अर्थ प्रेम
निरपेक्ष प्रेम नित्य नित्य प्रेम
अलौकिक अदभुत अनोखा अखंड प्रेम🌷
हम क्षण भर के लिए भी " कृष्ण " ख्याल ले
कृष्ण तुम्हारा प्रिये🌷
रोगी हो - भोगी हो - स्वार्थी हो - अपेक्षित हो
एक बार " कृष्ण " पुकार लिया
" कृष्ण " हमारा🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

यमुना यमुना यमुना यमुना

श्री यमुना यमुना यमुना
श्री कालिन्दी कालिन्दी कालिन्दी

श्री कृष्णा कृष्णा कृष्णा
श्री श्यामा श्यामा श्यामा

श्री गोपिका गोपिका गोपिका
श्री सूरसूते सूरसूते सूरसूते

श्री हरिप्रिया हरिप्रिया हरिप्रिया
श्री पुष्टित्व पुष्टित्व पुष्टित्व

श्री तनुनवत्वता तनुनवत्वता तनुनवत्वता
श्री मुकुंदप्रिये मुकुंदप्रिये मुकुंदप्रिये

श्री कृष्णतुर्य कृष्णतुर्य कृष्णतुर्य
श्री पदपंकज पदपंकज पदपंकज

श्री गुणभूषिते गुणभूषिते गुणभूषिते
श्री प्रियंभावुका प्रियंभावुका प्रियंभावुका

श्री सकलसिद्धिदा सकलसिद्धिदा सकलसिद्धिदा

श्री भगिनीसुता भगिनीसुता भगिनीसुता
श्री कीर्तिता कीर्तिता कीर्तिता

श्री दनुसेवया दनुसेवया दनुसेवया
श्री मुकुन्देरति मुकुन्देरति मुकुन्देरति

श्री दोलोत्तमा दोलोत्तमा दोलोत्तमा
श्री भुवनपावनी भुवनपावनी भुवनपावनी

श्री सुरधुनी सुरधुनी सुरधुनी
श्री सौख्यमा सौख्यमा सौख्यमा

श्री कथाधिका कथाधिका कथाधिका
श्री मुररिपुश्च मुररिपुश्च मुररिपुश्च

श्री भवेद्वदति भवेद्वदति भवेद्वदति
श्री रतिवर्द्धिनी रतिवर्द्धिनी रतिवर्द्धिनी

यमुना यमुना यमुना यमुना
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण
तुम्हारी शरण गिरिराज तुम्हारी शरण

गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण

जब जब निहालु नव नित पाऊँ
जब जब निहालु नव नित पाऊँ
रुप स्वरुप धयाऊँ अंग अंग न्यारुँ
गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण
गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण

डग डग भराऊँ परिक्रमा जगाऊँ
डग डग भराऊँ परिक्रमा जगाऊँ
दरश दरश से तनमात्राएँ सुधाऊँ
गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण
गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारी शरण
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
गिरिराज धरण की जय
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



हे यमुना।

शाम आई

श्याम रंगी

श्याम छाई

श्याम ख्याले

श्याम तरंगे

श्याम हिलोरे

श्याम झुमे

श्याम तराने

श्याम गूंजे

श्याम बसे

श्याम हुए

श्याम श्याम ऑ श्याम

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



कैसे आऊं

ऑ पिया कैसे आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

कैसे आऊं

कैसे आऊं तेरी डगरिया

कैसे आऊं

ऑ पिया कैसे आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

कैसे आऊं

कैसे आऊं तेरी अटरिया

कैसे आऊं अटरिया

कैसे आऊं डगरिया

ऑ पिया कैसे आऊं

कैसे आऊं अकेली

कैसे आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

दूर से बंसी विरह गाये

व्याकुल से पुकारे सखियां

कहां जाऊं कैसे आऊं

ऑ पिया कैसे आऊं

कैसे आऊं अकेली

कैसे आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

तेरी डगरिया तेरी अटरिया

पिया पिया पिया पिया

कैसे आऊं मैं पिया

ऑ पिया

कैसे आऊं

आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

तडप कर हुई बावरिया

छूप कर हो रही दूरियां

कैसे आऊं

ऑ सांवरियाँ कैसे आऊं

मैं कैसे आऊं🌷

सांवरियाँ कैसे आऊं

कैसे आऊं

कैसे आऊं

आऊं

सांवरियाँ

दौड के आजा मेरी गलियां

लपक के आजा मेरे सैया

तु ही आजा

ऑ पिया आजा

पिया तु आजा

आजा

आजा पिया

पीला दे अधरिया

मिटा दे दूरियां

सांवरियाँ! सांवरियाँ पिया

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसे कह दू

कैसे बोल दू

समझा समझा

हाँ समझा समझा

की मुझे छोड दिया है उसने

यहां यहां भटका वहां वहां ढुंढा

कहीं जन्म पाया कहीं जीवन गुजारा

बार बार पुकारा बार बार तडपा

तरस तरस कर इतना बरसा इतना बरसा

मन की यमुना बहाई तन का गिरिराज रचा

वल्लभ वल्लभ सहारे पुष्टि से पहचाना

है कहीं वह है यहीं वह

जिसने मुझे छोड दिया उसने

डूबता डूबता व्रज रज में हमने पाया

कुछ स्पर्श पाया कुछ एहसास जागा

ख्याल हुआ जिसने छोडा

वो ही धीरे धीरे सामने आया

अब तो यही कह दू

अब तो यही बोल दू

की मुझे नही छोडा उसने

मैं बहक गया था

मैं भटक गया था

हे कान्हा! तु कितना निराला है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कुछ तो किया है

कुछ तो किया है

हाँ! हाँ! कुछ तो किया है

तो ही यह हूं

कुछ तो किया है तो यही हूं

न किया होता तो क्या होता

हाँ! हाँ! न किया होता तो क्या होता

अभी बहतर समझो

अभी अपने आप को बहतर समझो

बहतर समझो

बहतर समझो तो सही किया

न बहतर समझो तो नही सही किया

बहतर समझो तो सही

न बहतर समझो तो नही सही

खुद से खुद मानो

या ओरों से खुद मानो

ओरों से खुद मानो

ओरों से मानो बहतर

तो कौन क्या कहें

ओरों से खुद मानो सही तो कौन क्या कहें

ऐसे ऐसे सही

हाँ! ऐसे ऐसे सही

ऐसे ऐसे सही ही हम माने

ऐसे ऐसे सही ही हम माने और जीवन जीये

हम माने और जीवन जीये

हम जीवन जीये

हाँ! हाँ! जीवन जीये

तो करें क्या कोई

तो करें क्या कोई

हमने अपने आप को ऐसा समझा

हमने अपने आप को ऐसा जाना

हर कोई जाने हर कोई समझे

यही जीवन हमारा

हाँ! हाँ यही जीवन हमारा

ऐसा जीवन हमारा

ऐसा जीवन हमारा

कुछ करें कुछ न करें

तो भी यही जीवन हमारा

तो भी यही जीवन हमारा

तो हम भी ऐसे हुए

तो हम भी ऐसे हुए

हाँ! हाँ! हम ऐसे है

हाँ! हाँ! हम ऐसे है

जो जो किया ऐसा पाया

जो जो किया ऐसा पाया

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" जन्म जन्म जन्म जन्म "

जन्म दिन - वर्षगांठ - Birthday

" जन्माष्टमी "

श्री आराध्य का जन्म दिन

परम प्रिय का जन्म दिन

अर्थात - मधुर दिन

हर्षोल्लास - सेवा - भजनानंद के साथ

हम मानते है

हमें आनंद मिलता है

हमें शकुन मिलता है

हमारी श्रद्धा और विश्वास को गति मिलती है

अवश्य मिलता है - कुछ अनुभव होता है

बिलकुल - सत्य

यही तो हमारी संस्कृति और संस्कार है

यही ही हमारी मूल धरोहर है🌷🙏🌷

यह श्रद्धा, विश्वास, आनंद, शकुन हमें हर रोज मिल सकता है - अवश्य और अनुभव भी होता है - 🌷🙏🌷

अपने आप से ही तय करलो।

यह " जन्माष्टमी " यही ही कहती है - समझाती है - हम से और हम में जागती - उठती जो धारा सदा योग्य, शुद्ध, पवित्र बह ही सकती है🌷🙏🌷

हम से और हमारी साथ और पास उठती हर परिस्थिति को हम परिवर्तन - दूर और नष्ट कर ही सकते है🌷🙏🌷

जन्म दिन के दिन मन, तन, धन, समय को जैसा ज्ञान - भाव और संस्कृत से उत्कृष्ट करेंगे ऐसा ही हमारा मधुर वर्ष🌷🙏🌷

मधुर जन्माष्टमी 🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्णाष्टमी "

कृष्ण + अष्टमी

कृष्ण अष्ट से जुडते जुडते

उनका कौटुम्बिक अष्ट बाल जन्म

उनकी अष्ट गोपियाँ

उनकी अष्ट पटराणीओं

उनके अष्टसखाओं

वह अष्ट चक्रधारी

श्री वल्लभाचार्यजी ने रचा - अष्टाक्षर मंत्र

श्री वल्लभाचार्यजी ने रचे - लीलाष्टके

श्री वल्लभाचार्यजी ने पुष्टि सेवा पद्धति रची - अष्टसमा की सेवा

श्री वैष्णव संप्रदाय ने रचे - अष्ट सेवा निधि स्वरुप

सदा संस्कृत श्री कृष्ण चरित्र

आनंद प्रेम जीवन प्रजवल्लित

श्री कृष्ण रट रट कृतार्थो मम्

कष्टहर दुष्टहर हर हर आत्म हरि

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷



माखन चूरा कर वात्सल्य लुटाया

दधि दूध रोक कर स्व रक्षक बनाया

यमुना पान कर तनुनवत्व प्रक्टाया

गोवर्धन पूजा कर प्रकृति समजाया

बंसी सुनाकर मन अपना कर लिया

वृंदावन लीला रमण कर प्रेम जताया

विश्राम घाट बैठ कर योद्धा पढाया

रास रचा कर एकात्मता जगाया

कान्हा! तुझे क्या कहे?

जो कहे वह हमें ही लौटाये

श्याम तेरे कितने काम?

मन स्थिर करे इतने काम

श्याम तेरे कितने धाम?

आंतर आंतर बसे इतने धाम

श्याम तेरे कितने नाम?

लीला रचे इतने नाम

श्याम! मेरे श्याम! मुझ में रहना सुंदर श्याम

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हाथ छोड कर जा रहे हो

पर

यह स्पर्श से बसे यह नैन में

इससे कबहूँ नही जाओगे

सूरदास

संसार विषयों में डूबोकर

विष बंधनो में बांधा

पर

प्रेम अधर पर बिराजकर

मेरा अमृत जीवन बनाया

मीराबाई

खेलन खेलत प्रेम बरसायो

न घर न जीवन संधायो

एक टूकडा रोटी घूटडा छाछ पीयो

तोड तोड ऋण बंधन

घडी घडी दर्शन पमायो

कुंभनदास

हे कृष्ण! तु कहीं कहीं प्रीत निभायो🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कृष्ण कनैया बंसी बजैया
तु आया हमारे द्वारे

मयूर पंख पहनाये
जरकसी जामा बंधाये
फूल शृंगार सजाये

दूध दधी माखन मटकी फोडे
सखा सखीओं को लुटाये
गोविंदा आला गोपाल आला
गूंज गूंज तुझे गले लगाये

घर घर गोविंद आयो
रंग उडायो नाच नचायो
गोविंदा आला गोपाल आला
आला रे आला गोविंदा आला
आला रे आला गोपाल आला

गोविंदा गोविंदा गोविंदा
गोपाला गोपाला गोपाला

नंद घर आनंद भयो
जय कनैया लालकी
हाथी घोडा पालकी
जय हो नंदलाल की

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आजा रे आजा कान्हा
तरस गए तेरे दर्श बिना
आजा रे कान्हा आजा
तरस गए नैनन के द्वार

रास्ता देखें कॉरोना महामारी का
तडपे जबसे जीवन पाया
सुना सुना तुम बिन संसार
आजा रे आजा कान्हा
तरस गए नैनन के द्वार

गोकुल छोड कहां कहां भटके
हमें छोड कर क्यूँ दूर भागे
अकेले कैसे कटे जीवनधार
आजा रे आजा कान्हा
तरस गए नैनन के द्वार

बंसी की धून नही सुने कबसे
गौएं बहाएं अश्रु विरह में
व्रज हो गया निराधार
आजा रे आजा कान्हा
तरस गए नैनन के द्वार

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग रंग श्याम रंग रंग रंग

रंग रंग श्याम रंग रंग रंग

हे श्याम दे दे रंग रंग रंग

तेरा रंग श्याम दे दे रंग

तेरे रंग में तेरा स्पर्श

तेरे रंग में तेरी याद

तेरे रंग में मेरी फरियाद

तेरे रंग में तेरा विरह

रंग रंग श्याम रंग रंग रंग

हे श्याम दे दे रंग रंग रंग

तेरा रंग श्याम दे दे रंग

तेरे रंग में तेरा प्रेम

तेरे रंग में तेरी सांस

तेरे रंग में मेरी पुकार

तेरे रंग में तेरा नाम

रंग रंग श्याम रंग रंग रंग

हे श्याम दे दे रंग रंग रंग

तेरा रंग श्याम दे दे रंग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण "

बधाई हो बधाई

पधारे मेरे आंगन कन्हाई

मेरे आंगन पधारे

मेरे आंगन पधारे

कन्हाई मेरे आंगन पधारे

दधि दूध से स्नान कराऊँ

अंग अंग चंदन लगाऊँ

यमुना जल से छिटक कराऊँ

हे....

यमुना जल से छिटक कराऊँ

व्रजरज से नहलाऊँ

केसरी जामा पहनाऊँ

अंग उपरणा ओढाऊँ

हे श्याम..

अंग उपरणा ओढाऊँ

गले व्यजयंति माला सजाऊँ

कुम कुम केरा तिलक लगाऊँ

मयूर पंख सोहाऊँ

हे कान्हा

मयूर पंख सोहाऊँ

नमन करूँ दंडवत करूँ

करू प्रणाम वंदन

आनंद आनंद उर में जगाऊँ

हे गोपाल...

आनंद आनंद उर में जगाऊँ

कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आता मनुष्य बहोत कुछ कहता है
जाता मनुष्य बहोत कुछ कहता है

ठहरे मनुष्य बहोत कुछ समझना है
जो जीत सकता है जीवन का युद्ध

समान अंग समान भूमि
समान समय समान सृष्टि

जीवन है पुरुषार्थ जीवन है कर्मक्षेत्र
जीवन है युद्धक्षेत्र जीवन है प्रेमक्षेत्र

सत्य निभाय सिद्धांत निभाय
पूर्ण निभाय गुणातीत निभाय

हाँ! ईश्वर 🌷🙏🌷
सब समान तो भी गुमान तो भी गुहार
स्व जाने स्व पहचाने तो भी न करे अपार
कोई में ही जागे विरल करुणज्ञान

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना याद करते तनुनवत्व जाग उठा

गोवर्धन घुमते घुमते गोपाल गूंज उठा

वृंदावन वंदते वंदते व्रजरज बिखर उठी

मथुरा मथते मथते मधुरा महक उठा

गोकुल गुलते गुलते गोपि गोरस उठी

चंपारण्य चंपते चंपते चतुष्टय प्रचूर उठी

नाथद्वारा नादते नादते श्रीनाथ शरण उठा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह कैसी सांस है

जो कृष्ण की ओर आकर्षित करती है!

यह कैसी नैन है

जो कृष्ण के मुखारविंद को निहारती है!

यह कैसा मन है

जो कृष्ण की ओर खिंचाता जाता है!

यह कैसा ख्याल है

जो कृष्ण की ओर खोया रहता है!

यह कैसा तन है

जो कृष्ण के लिए सेवक होता रहता है!

यह कैसा धन है

जो कृष्ण के लिए कृतार्थ होता रहता है!

यह कैसा जीवन है

जो कृष्ण के लिए समर्पण होता है!

यह कैसे साथी है

जो कृष्ण के लिए साथ निभाते है!

हे कृष्ण! तु कैसा है रे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज रज "
हे व्रज रज! कैसे कहूं तुम कौन हो?
मेरी जिज्ञासा - मेरा चिंतन - मेरा विचार - मेरा ज्ञान - मेरा भाव और मेरी आकांक्षा हर कुछ इन्हें समझाने असमर्थ है, अधूरा है।
जो भी प्रयत्न किया है वह केवल एक धारा है जो कहीं भी मिलगुल सकती है।
" व्रज रज "
कहीं बार व्रज स्थली गये - पर
समझ से पहुंचा अभी🌷🙏🌷
व्रज स्थली गया पर अध्ययन से लगता है
मैं अपने नैन से उन्हें छू सकता हूं?
मैं अपने सांसों से उन्हें ....
मैं अपने पैरों से स्पर्श कर सकता हूं?
क्या मैं काबिल हूं?
नही नही मैं काबिल नही हूं🌷🙏🌷
मैं कैसे कह सकता हूं - यह व्रज रज के लिए!
क्षमा मांगते - याचना करके
मैं उन्हें विनंती करता हूं🌷🙏🌷
जो कहता हूं - एक साधारण जागृतता से
अगर सैद्धांतिक हो तो स्वीकार करना 🌷🙏🌷
" व्रज रज "
मन में आते ही मन स्थिर
तन से छूते ही तन अलौकिक
धन से स्पर्शते ही व्यवहार विशुद्ध
समय से छूते ही काल नष्ट
अदभुत - अनोखा - अखंड - अलौकिक
व्रज के अधिपति को नमन - वंदन - प्रणाम करते हुए🌷🙏🌷
कहता हूं -
व्रज रज - प्रेम जगत की अखंड रजो का समूह
व्रज रज - पवित्र, विशुद्ध, विश्वनीय, श्रद्धा और सत्य के अखंड एकत्रता का समूह मिलन उदगमन अंश🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
आगे कल..........

जग में उत्तम है दो काम

खुद को समझना - खुद को जगाना

जग में श्रेष्ठ है दो धाम

खुद का घर - प्रभु स्थली

जग में सार्थक है दो नाम

खुद का नाम - गुरु का नाम

जग में ऋणी है दो दाम

मातापिता का ऋण - मित्रता का ऋण

जग में शांत है दो ठाम

मुक्ति स्थली - आचार्य स्थली

जग में आनंद है दो थाम

प्रियतम चरण - प्रभु शरण

राम राम राम - श्याम श्याम श्याम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" विनियोगः समस्तेषु पुरुषार्थेषु वै मतः

बीजं भक्तप्रियः शक्तिः सत्यवागुच्यते हरिः "

हे वल्लभ! आपने इतनी सरलता से समझाया है मनुष्य जीवन की यथार्थता

स्व का हर विनियोग ऐसा हो जो पुरुषार्थ में परिवर्तित हो - यह विनियोग ही सत्य भक्ति शक्ति बीज श्री हरि का पार्दुभाव करदे।

स्व का हर विचार, स्व का हर ख्याल, स्व की हर द्रष्टि, स्व का हर कार्य - अर्थात विनियोग पुरुषार्थ में परिवर्तित हो जाय।

यह सूक्ष्म विचार - ख्याल - द्रष्टि - कार्य भक्ति शक्ति बीज हो तो अवश्य श्री हरि का प्राकट्य निश्चित है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



🌷🙏🌷प्रणाम🌷🙏🌷

हे मेरे जीवन शिक्षक - आपको ह्रदयस्थ प्रणाम 🌷🙏🌷

विचार - आपसे आये

संकल्प - आपसे जागे

आयोजन - आपसे समझे

रीति रिवाज - आपसे सीखे

मान्यता - आपसे जाने

परिभाषा - आपसे सुने

अर्थ - आपसे ज्ञाने

जीवन - आपसे परिवर्ते

एकांत - आपसे यज्ञे

शास्त्र - आपसे पाये

संस्कार - आपसे अपनाये

संस्कृति - आपसे स्पर्शे

धर्म - आपसे अनुशाशने

ज्ञान - आपसे विद्ये

अर्थोपार्जन - आपका माध्यम

संसार - आपका साथ

जीवन घटमाल - आपकी सुलझन

हे मेरे जीवन साथीओं - आप मेरे शिक्षक

आपको मेरा शत् शत् नमन🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बहाना " कर दिया है एक संस्कार

जो हरायेगा खुशी भरा संसार

न डरो न स्वीकारो ऐसे बहाने

जो अपने नैन अपनी समज से परे

कोई बहाना खुद को हराना

स्व हारा हर कोई से हारा

अपने अस्तित्व को क्यूँ ठुकराना

अपने निति नियम को क्यूँ सताना

बहाने बहाना की झंझाल में

बहा रहे है मूल्य जीवन

इन्हें घुमाया उन्हें घुमाया

स्व घुम गये स्व मर गये

विनंती हे साथी जीवन के

साथ साथ जीये बिन बहाने

" Vibrant Pushti "

' जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

थोडा सोचे - जन्म समय - जन्म दिन - जन्म वर्ष हम निरोगी थे।

जीते जीते हम रोगी हो गये।

ऐसा कैसे?

हम क्या जाने जानते रोगी हुए?

क्या हम अपने आप को रोगी होना चाहते थे?

सोचे! ऐसा क्यूँ?

१. जीवन पद्धति

२. हमने हमारी आसपास को नही समझा

३. हमने अपनी प्रकृति - सृष्टि नही समझी

४. हम अपने आप को नही जानते गये

५. हमारी मानसिकता - कौन रोगी नही!

६. मोज - मझा का अनर्थ अर्थ

७. हम एक सामान्य प्राणी है - यह समझ

८. हमारी मान्यता

हमारा जीवन ऐसा हो गया पर हमारा पुत्र-पुत्री को तो जगाये - समझाये!

वह निरोगी तो जीवन निरोगी

मन निरोगी - तन निरोगी

द्रष्टि निरोगी - धन निरोगी

ज्ञान निरोगी - ध्यान निरोगी

धर्म निरोगी - अध्ययन निरोगी

प्राण निरोगी - विज्ञान निरोगी

मान्यता निरोगी - माध्यम निरोगी

कर्म निरोगी - वर्ण निरोगी

प्रकृति निरोगी - सृष्टि निरोगी

मनुष्य जन्म जीवन की यही उपलब्धि

कौन कौन किसको समझाये!

जो स्व जागे उनका जीवन जागे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नैन को पवित्र जो करे

तन की पवित्रता वो जान

तन को पवित्र जो करे

मन की पवित्रता वो जान

मन को पवित्र जो करे

आत्म की पवित्रता वो जान "

नैन की पवित्रता - नैन को पवित्र करना और रखना मनुष्य जीवन की प्राथमिकता है।

नैन शुद्ध - नैन निर्मल

नैन सरल - नैन दैनिय

नैन कारुणिक - नैन न्यायिक

नैन निरंकारी - नैन क्षमिक

नैन प्रेमी - नैन आनंदीत

नैन पवित्र जो जाने तन पवित्र जान

हाँ! नैन की मर्यादा - नैन की सहिष्णुता

हाँ! नैन की रक्षा - नैन की शिक्षा

हाँ! नैन का संस्कार - नैन की वाणी

हाँ! नैन की साक्षरता - नैन की शुद्धि

मूल है - यही जीवन उजाल

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तन के लिए कल 🙏

" चरन कमल बंदौं हरि राई ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंधै

अंधे को सब कछु दरसाई "

अदभुत! 🌷

अनोखा अदभुत! 🌷

अलौकिक अदभुत! 🌷

धैर्य से - गंभीरता से समझे

हमें जन्म जो पाया इनमें हर तरह से सही

अंग, इन्द्रियां, तनमात्राऐ, मन सब सही

अर्थात अनोखी कृपा🙏

अगर कोई एक अंग - एक इन्द्रिय कम हो - न हो तो!

हमारे जीवन में ऐसे कितने मनुष्य जीव है जो अभागे हम कहते है। 🌷🙏🌷

पर अगर यही जीव के साथ श्री प्रभु लीला करे तो हम क्या?

यही एक अभागे परम आत्मीय भगवदीय मनुष्य जीव हमें समझाते है

चरन कमल बंदौं हरि राई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंधै,

अंधे को सब कछु दरसाई।।

हे प्रभु! आप कितने कृपालु है🙏 आपके पंकज चरणों में मैं वंदन करता हूं🙏

आपकी कृपा प्राप्त कर लेने पर अपंग - बिना पैर - लंगडा पहाड लांधने में, अंधा सब कुछ देखने में, बहरा सुनने में, गूँगा अभिराम - हरि गुण बोलने में और निर्धन अपने सिर पर राजछत्र धारण राजा बनने में समर्थ हो जायेगा।🙏

सूरदास कहे - अंधे को सब कछु दरसाई🙏

हे प्रभु! आप अविरत करुणाकरण हो - आपको क्षण क्षण वंदन करता हूं🙏

सच! मैं क्या हूं - प्रभु! मैं क्या हूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चरन कमल बंदौं हरि राइ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंधै

अंधे कौ सब कछु दरसाई।।

बहिरो सुनै, मूक पुनि बोलै,

रंक चलै सिर छत्र धराइ

'सूरदास' स्वामी करुणामय,

बार-बार बंदौ तिहिं पाइ।। "

कितना सहज और सरल जीवन सिद्धांत और दिशा निर्देश कर दी है सूरदासजी ने - जो मूलतत्व है - जो परब्रह्म है - जो पुरुषोत्तम है उन्हें सदा वंदन करिए - धरिए, जो परमसत्य है, जो परमविशुद्ध है, जो परमश्रेष्ठ है, जो निर्गुण है उनकी अनुकंपा, उनका अनुग्रह, उनका द्रढ आश्रय ही हमें सुरक्षित और आनंदीत करता है। यही हमारे कर्मो को पूर्ण पुरुषार्थ में परिवर्तित करके हमारी आत्मीय चेतना को बृहद तेजोमय गति देता है। चाहे हम अपंगी हो, चाहे अंधे हो, चाहे बहरे हो, चाहे गूंगे हो, चाहे रंक हो।

यह अपंग - अंधा - बहरा - गूंगा - रंक का अर्थ योग्य समझना मूल्यता है🌷🙏🌷

हम सब अंगी हो पर भक्तिमय सेवक न हो तो अपंगी🌷🙏🌷

हम दोनों आंखों से देखते हो पर सहृदयी न्यायी द्रष्टि न हो तो हम अंधे🌷🙏🌷

हम सब सुनते है पर सत्य का न स्वीकार कर अपनाते है तो हम बहरे है🌷🙏🌷

हम सब बोलते है पर मधुर स्वर से नही कहते है तो हम गूंगे है🌷🙏🌷

हमारी वृत्ति और चेष्टा में केवल स्वार्थता ही हो तो हम रंक है🌷🙏🌷

कैसे संजोग - परिस्थिति - दशा और अर्थता हो सदा कृपामयी हो तो अवश्य परिवर्तन होगा ही🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" यमुना रसरानी " व्रज की महाराणी " 🌷🙏🌷

रज रज में कृष्ण कृष्ण बूंद बूंद में राधा राधा🌷

पत्ते पत्ते में वात्सल्य अन्न कण कण में संस्कार सिंचन🌷

रंग रंग में श्याम श्याम कंठ कंठ में राधे राधे🌷

अक्षर अक्षर में कान्हा कान्हा गूंज गूंज में श्रीराधा श्रीराधा🌷

वस्त्र वस्त्र में मर्यादा मर्यादा श्रृंगार श्रृंगार में पुकार पुकार🌷

वृक्ष वृक्ष में वैष्णव वैष्णव फूल फूल में मधुर महक🌷

पंखी पंखी में साथ साथ पशु पशु में राग राग🌷

गौ गाय में अमृत अमृत गृह गृह में गोप गोपि🌷

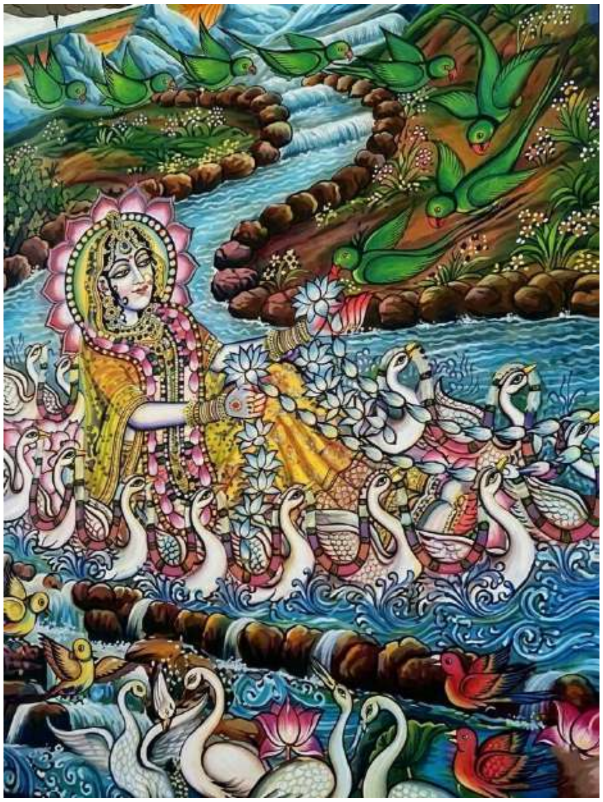
सांस सांस में व्रज उर्जा प्राण प्राण में पुष्टि ध्वजा🌷

निकुंज निकुंज प्रेमोपासना बैठक बैठक प्रेमाचार्य🌷

हे करुणारानी! हे भक्तिवर्धिनी🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



" मन "

हमने बनाया

संजोग - परिस्थिति - समय और स्व ज्ञान शक्ति - स्व भाव शक्ति

कहीं ऐसी घटनाएं

कहीं ऐसे माध्यमों

कहीं ऐसी मान्यताएं

मन आनंद

मन सुखम्

मन मधुर

मन प्रफुल्ल

मन वैचारिक

मन वांछित

मन द्रुडित

मन द्रवित

मन संकुचित

मन विचलित

मन व्यथित

आदि...........

मन को अनेक मन में बांटते है

मन को अनेक मन से जोडते है

मन को अनेक मन से मानते है

मन को अनेक मन से बांधते है

मन स्व मन से अनेकों का मन हो गया

मन - अनेकों के मन से गति देते है

मन - अनेकों के मन से नियंत्रित होते है

मन - अनेकों के मन से मार्गित करते है

मन कहां - मन कैसा?

यही ही हम - हमारा कर्म - हमारा धर्म - हमारा जीवन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नही ऐसा न होना चाहिए🙏

श्री यमुना यमुना स्मरण करो

श्री वल्लभ की स्वभाव विजयी

श्री यमुना यमुना शरण धरो

श्री व्रजवास की पुष्टि महाराणी

श्री यमुना यमुना चरण छूओ

श्री गोपगोपि की हृदय ठकुराणी

श्री यमुना यमुना वरण वरो

श्री गोकुल मथुरा की मधुरवाणी

श्री यमुना यमुना रटण रटो

श्री व्रजरज की प्रेम रसराणी

श्री यमुना यमुना स्मरण करो

श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

श्री राधा श्री राधा श्री राधा श्री राधा श्री राधा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

श्री राधा राधा राधा राधा श्री राधा श्री राधा

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

श्री राधे राधे राधे राधे श्री राधे श्री राधे श्री राधे

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे राधा राधा राधा राधा हे राधा हे राधा

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

हे राधे राधे राधे राधे हे राधे हे राधे हे राधे

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌺🙏🌺



" राधा " प्रेमेश्वरी🌺

" राधा " मधुरेश्वरी🌺

" राधा " ह्रदयेश्वरी🌺

" राधा " प्राणेश्वरी🌺

" राधा " प्रियेश्वरी🌺

" राधा " प्रियतमेश्वरी🌺

" राधा " प्रीतेश्वरी🌺

" राधा " श्यामेश्वरी🌺

" राधा " योगेश्वरी🌺

" राधा " आनंदेश्वरी🌺

" राधा " करुणेश्वरी🌺

राधा! राधा! राधा! राधा! राधा राधा राधा राधा🌺

राधा! राधा! राधा! राधा! राधा राधा राधा राधा🌷

श्यामा! श्यामा! श्यामा! श्यामा! श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा🌺

कृष्णा! कृष्णा! कृष्णा! कृष्णा! कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा🌷

श्री राधा! श्री राधा! श्री राधा! श्री राधा! राधा राधा राधा राधा🌺

श्री श्यामा! श्री श्यामा! श्री श्यामा! श्री श्यामा! श्यामा श्यामा श्यामा श्यामा🌷

श्री कृष्णा! श्री कृष्णा! श्री कृष्णा! श्री कृष्णा! कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा🌺

" परमप्रिये प्रेमेश्वरी राधा प्रियतम के प्राकट्य वधाई " 🌺🙏🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌺🙏🌺

🌺 " राधा " 🌺

सच! अलौकिक

सच! अनोखा

सच! अदभुत

सच! अवर्णनीय

सच! अखंड

सच! अचल

सच! अंतर्गत

सच! आनंद

सच! प्रेममय

सच! निरपेक्ष

🌺🌺🌺🌺

काल - युग बह गये पर " राधा " सदा है

जीवों के जीव जन्मोजन्म गये पर " राधा " है

एकांत में रह कर जहां तक नजर पहुंचे

आंतरिक - बाह्य

" राधा " ही " राधा " 🌺

अर्थात हममें है - राधा 🌺

हे राधा! 🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌺🙏🌺

ऐसी को करि अरु भक्त काजैं

जैसे राक्षस कुल प्रहलाद🌷🙏🌷

ऐसी को करि निष्ठुर भक्त काजैं

जैसे वाल्मीकि ऋषि🌷🙏🌷

ऐसी को करि रोगी पुष्ट काजैं

जैसे कुब्जा गोपि🌷🙏🌷

ऐसे को करि निम्न सेवा काजैं

जैसे शबरी सेवक🌷🙏🌷

ऐसे को करि राणी भक्ति काजैं

जैसे मीराबाई भक्त🌷🙏🌷

ऐसे को करि अबला स्वतंत्रता काजैं

जैसे राणी लक्ष्मीबाई🌷🙏🌷

ऐसे को करि राजा सत्य काजैं

जैसे भगवान बुद्ध🌷🙏🌷

ऐसे को करि ब्रह्मांड दर्शन काजैं

जैसे परब्रह्म श्री कृष्ण🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रंग रंग की एक चूटकी
रंग रंग से रंगीन हो गई
एक रंग श्यामल सा रंग
श्याम से श्यामा हो गई

कितना अनोखा यह रंग
जिन्हें छूए जो जो चाहे
सिर्फ एक ख्याल एक स्पर्श
श्याम श्याम श्याम हो जाये
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



नैन में काजल
मुखडे पर पसीना
स्वर गाये तराने

पांव में पैजनिया
हाथों में चुडिया
मनवा छम छम नाचे

है कोई नखराली
झुमे साथ दीवाना
मौसम बडा मस्ताना

है प्यार की अदा
राधा खिचें जरा जरा
कान्हा तिरछे हरा हरा
🌺🌺🌺🌺🌺🌺
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं अकेली तेरा जमाना हो गया

फिर भी मैं तेरी तु मेरा हो गया

चाहे तु मुझसे दूर दूर दूर रहे

पर मैं तेरी करीब करीब करीब हूं

अनगिनत दीवाने तेरे हो साथ साथ

मुझे तो मेरा एक ही दीवाना

जिसका दिल मेरी धडकन से धडके

कितने ही नाम से तुझे कृष्ण पुकारे

राधा जुडे बिना कान्हा अधूरा अधूरा

मैं अकेली हाँ मैं अकेली हूं अकेली

ऐसी अलबेली तु कदी न रहे अकेला

राधाकृष्ण राधाकान्हा राधामाधव

राधावल्लभ राधाश्याम राधामोहन

राधागोविंद राधाकिशोर राधागोपाल

हूं अकेली फिर भी नही अकेली

कहो मेरे प्रियतम प्रेम सुंदरश्याम

ऐसी मेरी प्रीत निराली हे घनश्याम

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुने कहां लगाई इति देर अरे ओ नजरिया
जित जित देखुं साँवरिया साँवरिया

नन्हें नन्हें डग भर मेरी ओर आते हो
मधुर मधुर मुस्कान से मुझे बुलाते हो

मैं बावरा। दौड दौड तेरी ओर दौडता
न तु पकड आता न तेरी परछाई छूता

कैसा हे रे तु
तु नही यह नैन से ओझल होता
तुने कहां लगाई इति देर अरे ओ नजरिया
जित जित देखुं साँवरिया साँवरिया
🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दान "

निर्वाह के लिए

जीवन जीने के लिए

योग्यता प्रदान करने के लिए

विश्वास जगाने के लिए

पवित्रता प्रसार करने के लिए

विद्या उदबोधित करने के लिए

संस्कार संस्थापन के लिए

सिद्धांत विद्युत करने लिए

जो किये गए कोई भी प्रकार की सेवा - न्योछावर - समर्पण क्रिया, कर्म और पुरुषार्थ उसे " दान " कहते है। 🌷🙏🌷

सज्ञान से सब समझते है - गरीब कोई नही या हर कोई गरीब है 🌷🙏🌷

" दान " सर्वश्रेष्ठता है - स्वकक्षा है - स्वजागृतता है 🌷🙏🌷

जो जागा हुआ है वही " दान " करता है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो कोई पुष्टिमार्गीय सेवक

१. श्री प्रभु के वागा, पहनावा, बनाते हो

२. श्री प्रभु के शृंगार बनाते हो

३. उत्सव और मनोरथ के साज बनाते हो

४. लकडे के रमकडा बनाते हो

५. लकडे की हवेली बनाते हो

६. कीर्तन के साधन बनाते हो

७. रंग बनाते हो

८. सामग्रियां बनाते हो

९. चित्रजी बनाते हो

तो अवश्य मेरा संपर्क करे

आपकी हर सेवा न्योछावर से ही खरीदनी है

Vibrant Pushti - Mobile 9327297507

बडौदा - गुजरात 🌷🙏🌷

हे प्रभु! तुम कैसे हो?

हे प्रभु! तुम हमसे मिलते क्यूँ नही हो?

प्रभु कहते है - जैसे तुम चाहते हो वैसा मैं हूं

प्रभु कहते है - मैं मिलने व्याकुल हूं पर तुम मुझे रोकते हो

मैं जैसा चाहता हूं ऐसे आप हो - तो मैं तो ऐसा ऐसा और ऐसा चाहता हूं तो भी आप नही समझ में आते हो

मैं आपको रोक रहा हूं? क्यूँ भला? मैं न स्व को रोक सकता हूं तो आपको कैसे रोक सकता हूं?

प्रभु कहते है - मेरा रुप एक है - स्वभाव एक है - क्रिया एक है पर तु भिन्न भिन्नता से मुझे देखना और समझना चाहते है तो मैं कैसे समझ आऊं?

प्रभु कहते है - मुझे रोक रहा है तेरे बार बार बदलते संकल्प, विचार, क्रिया और निर्णय से - बाकी मैं तो तेरे सामने ही हूं।

समझ नही आता प्रभु क्या कह रहे है? अरे मेरे श्री प्रभु सरलता से कहो🌷🙏🌷

प्रभु मौन रह कर हंसते रहे है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ब्रह्मसंबंध " करणात जो गद्य मंत्र कहते है - यह मंत्र का अर्थ, योग्यता और सार्थकता हर बैठकजी पर श्रीवल्लभाचार्य और श्री दामोदरदास हरसानीजी का चित्रजी के साथ लगवाये तो जो जो व्यक्ति ने ब्रह्मसंबंध किये है उन्हें सदा स्मरण में स्व पुष्टि महत्ता जागे और जिन्होंने " ब्रह्मसंबंध नही किये हो उन्हें संकेत और प्रेरणा मिले🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti " पुष्टि वैष्णव सृष्टि की आज्ञा चाहता है🌷🙏🌷

आपका कोई भी यह सेवा के लिए सूचन हो तो अवश्य 9327297507 पर सुनिश्चित करे🌷🙏🌷

" गिरिराज परिक्रमा " गोवर्धन परिक्रमा "

श्री अंग - मूल स्थली

नेत्र - मानसी गंगा

नासिका - चंद्र सरोवर

हडपची - कृष्ण कुंड

अधर - गोविंद कुंड

जिव्हा - राधा कुंड

कपोल - ललिता कुंड

कर्ण - गोप कुंड

मुख - मुखारविंद

कूख - कंदूक स्थली

कमर - चीर घाट

पीठ - द्रोण तीर्थ

उदर - कोकिला वन

ह्रदय - कदंब खंडी

मन - ऐरावत कुंड

जीवात्मा - शृंगार शीला

दो पक्ष - सुरभि गाय चरण

चरण - ऐरावत चरण

पुच्छ - पूछरी का लोटा

हम यही संस्मरण से परिक्रमा करते रहे करते रहे - अवश्य हम पायेंगे श्री हरिदासवर्य के स्पर्श और दर्शन 🌷🙏🌷

दंडवत करे श्री गोवर्धननाथजी - श्री गिरिराजधरण - श्री पुष्टिप्रणेता वल्लभाचार्यजी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दुष्यंत एक ऐसी उम्र पर पहुंचा की उन्हें कुछ कुछ समझ आने लगा की मेरी माता सुबह उठ कर स्नान कर के प्रभु का स्मरण दर्शन करती है - और कहीं बार काम करते कुछ गुनगुनाती है - " श्री कृष्णः शरणं मम " " श्री कृष्णः शरणं मम "।

उनके चहरे पर न तो कोई उदासी या न कोई तकलीफों भरा - सदा हंसते हंसते कुछ न कुछ करती रहती।

एक दिन मैं भी माँ के साथ उठ गया, स्नान किया और बैठ गया स्मरण दर्शन में।

देखता रहा माँ ने श्री प्रभु को जैसे मैं नन्हा सा था तो जैसे मुझे जगाती, नहलाती, सुनाती, पुचकारती, अच्छे कपडों से शृंगारती, सर - हाथ - पर कुछ रंगबिरंगी दोरी बांधती, ओवरणा लेती, खेलती और लाड लडाती, भोजन करवाती, हंसती - कुदती फिर सुला देती थी - बस ऐसा ही कुछ करती थी।

मैं सोचने लगा - मेरी माता हररोज ऐसा करती रहती है और फिर अपने घर काम और अपनी जवाबदारी में।

ऐसा हररोज क्यूं करना?

मैंने सोचा यह कोई काम ही होगा या किसीने कहा होगा - ऐसा करो - ऐसा करना, इसलिए करती होगी।

कहीं साल बित गये पर यह प्रक्रिया हर रोज करती ही - मैंने तय किया - माँ को पूछते है की - माँ! यह क्या कार्य है? रीत है? रिवाज है? जो तु अविरत करती रहती है?

सुबह उठते ही मैं भी स्नान करके तैयार हो कर माँ के पास बैठ गया और तुरंत ही पूछा - माँ! यह तुम हररोज क्या करती रहती हो?

माँ ने प्रसन्न हो कर हंसते हंसते कहा - " सेवा "!

मैं अचंभित रह गया - यह कैसा शब्द - सेवा! और यह क्यूँ?

आगे कल.........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सच में यह कितना प्रारंभिक है - हर मनुष्य छोटा होता है तब ऐसी जिज्ञासा उठती ही है - यही और ऐसी ही जिज्ञासाओं से वह अपना मार्ग तय करता है।

आजके नवयुवकों को तो वंदन करना है 🙏

क्यूंकि हर विचार, क्रिया का सही अर्थ समझना उन्हीं की तीव्र आतुरता है🌷🙏🌷

यही जिज्ञासा और आतुरता उन्हें सही दिशा का निर्देश करती है - इसलिए तो जैसे जैसे बडे होते जाते है वैसे वैसे समयानुसार वह पारदर्शक, निखालस और सत्यार्थी होते जाते है🌷🙏🌷

दुष्यंत भी ऐसे ही जिज्ञासा वृत्ति से अपना हर प्रश्न को समझते समझते स्व मार्गदर्शक बनता जा रहा है।

वह अपनी माताजी को विनम्रता से पूछता है🙏

मातोश्री! यह क्या क्रिया और कार्य है?

मातोश्री! रीत है? रीवाज है?

मातोश्री! सेवा क्या है? क्यूँ है?

माँ ने व्हाल से उनको चूमा और अति उत्साह और आनंद से कहने लगी

बेटा! यह क्रिया जो हम जीते जीते जो जो भी क्रिया करते है उनसे अधिक उत्तम और श्रेष्ठ क्रिया है जो हमें संस्कार और सत्य समृद्धि प्रदान करती है।

जीवन की ऐसी क्रिया हमें आत्म वांछित आत्मीयता से जोडता है और तुम जो चाहो वह हो सकते हो, जो चाहो वह पा सकते हो, जो चाहो वह सिद्ध कर सकते हो।🌷🙏🌷

अरि माँ! क्या कह रही हो!

हाँ! बेटा

तुमने आजतक तेरे मातापिता को सुखी और आनंदीत देखा🌺

तुमने आजतक हमारे कुटुंब को उत्साहित देखा🌺

तुमने आजतक हमारे यहां जो भी पधारे उन्हें खुश खुश देखा🌺

तुमने अपने कुटुंब को सदा प्रगतिशील देखा🌺

तुमने आजतक शुभ शुभ पवित्र पवित्र और हंसते हसाते देखा

बेटा जगत की हर सुख हम पाते है इतना संतोष हममें धर्मिष्ठता कर रहे है।

यही सत्य का दीपक यही क्रियाओं से प्रजवल्लित होता है🌷🙏🌷

तु मेरा भगवान है बेटा🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आगे कल....

तेने कहां लगाई इती देर अरे ऑ साँवरिया

ऑ तुने कहां लगाई इती देर अरे ऑ साँवरिया

ऑ तेने
ऑ तुने
तुमने कहां लगाई इतनी देर अरे ऑ साँवरिया
साँवरिया साँवरिया साँवरिया साँवरिया

नीत नीत तु मन में आये
यादों से लहर लहर बरसाये
ऑ तु हर हर यादों में जगाय
अरे ऑ साँवरिया
ऑ तुने कहां लगाई इती देर अरे ऑ साँवरिया

तीर तीर तु नैन में बसे
द्रष्टि से नजर नजर तरसाये
ऑ तु डगर डगर नजर में छाय
अरे ऑ साँवरिया
ऑ तुने कहां लगाई इती देर अरे ऑ साँवरिया

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दुष्यंत आज जल्दी उठ गया, तैयार हो कर सेवा स्थली पर जा पहुंचा। उनके मनमें एक ही विचार चल रहा था -

यह क्या क्रिया और कार्य है?

यह क्या रीत है? रिवाज है?

यह सेवा क्या है? क्यूँ है?

दुष्यंत ने देखा की माँ कुछ सामग्री और कुछ साधन, बर्तन में जल, फूल, फल और आदि बस्तुएं रख कर कार्य की तैयारी कर रही है। आसपास प्रफुल्लित महक दुष्यंत को आनंदीत कर रही है। चारों ओर दौडती नजर ने देखा की वातावरण मधुर हो रहा है, आसपास अनेकों प्रकार के उठते स्पंदन मुझे और माँ को वधु उत्साहित और एक रंग कर रही है। दुष्यंत कुछ अनोखी अनुभूति कर रहा है - आज उनके रोम रोम में ऐसे ऐसे स्पंदन उठते है जो उन्हें उत्तेजित कर केवल एक ही द्रष्टि और एक ही स्थली पर आकर्षित करती है - जहां है श्री प्रभु की स्थली। मन शांत - तन प्रफुल्लित - नैन स्थिर और सांस महकी। वह समाधिस्थ हो गया। उनमें नयी उर्जा का पार्दुभाव होने लगा और वह माँ की क्रिया में डूब गया।🌷🙏🌷

थोडी देर के बाद माँ ने कहा - बेटा! श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम करो🌷🙏🌷

तब वह अपनी समाधिस्थ से जागा, देखा तो श्री प्रभु थाडे बिराजे है और उनकी ओर द्रष्टि करते हंसते है - माँ भी दुष्यंत के मुखडा को देखकर हंसती है - दुष्यंत भी हंस पडा🌷🙏🌷

दंडवत प्रणाम किये दुष्यंत खडा हो गया और माँ को प्रणाम कर के वह स्थली से - वह क्रिया से - वह विचार धारा से बाहर आ गया।

थोडी देर चारों ओर नजर कर वह अपनी रुम में आ गया - रुम का द्वार बंध करते ही वह ध्रुसक ध्रुसक रोने लगा - वह व्याकुल हो उठा - आज उन्हें जो अनुभव हुआ वह अकल्पित थी। उन्हें कुछ अलग सा महसूस हो रहा था। यही ही अनुभव ने दुष्यंत के रोम रोम में एक प्रचंड धारा का उदगमन कर दिया था।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी मुरलीया गाये गीत मधुर मधुर

दूर दूर से तेरी पुकार सुनाये

आजा ऑ आजा

हे राधा तु आजा

मन में तेरी विरहता जागे सरुर सरुर

प्रीत मिलन का दिल बेकरारे

आजा ऑ आजा

हे श्याम तु आजा

सूर सूर लहर लहर अनिल तरंगे

नैन छूए नजर पसारे

थरथरे अधर श्याम गूंज

कदम कदम हिरन दौडे

बाजे पैजनिया छननन

हे श्याम तु आजा

आजा ऑ आजा

श्याम श्याम तु आजा

महक महक प्रेम अंग लहराये

जीत देखुं तु नजर आये

बाहें हिलोरे प्रीत थामने

तान गाये तुझ नाम तराने

थै थै नाचे पैर थननन

हे राधा तु आजा

आजा ऑ आजा

राधा राधा आजा तु आजा

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दुष्यंत अकेला बिलकुल अकेला और इतनी गहराई में डूबने लगा था उनके जिज्ञासा भरे प्रश्न से - आज वह सोचने लगा जीवन में कुछ ऐसा तो है ही जो आनंद पा सके, खुशी बांट सके, तकलीफें दूर कर सके। सोचता रहा सोचता रहा वहां उनके मनमें संकेत जागा।

कुछ तो है यह मनुष्य मन में - मनुष्य तन में और मनुष्य जीवन में। मैं विज्ञान पढता हूं तो मुझे हर प्रयोग या अनुभव वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित ही क्यूँ प्रमाणित होते है?

विज्ञान अर्थात विशेष ज्ञान

गहराई से ढूंढता डूबता गया

जन्म से लेकर आजतक मैं पहचानने लगा हूं की हर क्षण विज्ञान ही है - जो विज्ञान को जान गया - समझ गया - पहचान गया हो उन्हें धर्म - ज्ञान और भाव तीनो से ही सही जीवन जी सकते है।

अंग से मन तक और संकल्प से फल तक हम जो भी कुछ करते है इनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अवश्य है ही।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण - माँ🌷🙏🌷

मूलत्व - माँ

माँ का गर्भ - वैज्ञानिक

माँ का संस्कार - वैज्ञानिक

माँ का शिक्षण - वैज्ञानिक

माँ का मूलत्व - परब्रह्म

दुष्यंत समझ रहा था - माँ - स्व उत्पादिता - स्व कर्माणि🌷🙏🌷

मन - तनमनस्का - तनमात्राऐं - तत्व और जगत

माँ - मूलत्व, माँ - विज्ञान, माँ - ब्रह्म, माँ - परब्रह्म

माँ की क्रियाओं का ज्ञान और वात्सल्य की समझ उन्हें आने लगी।

जीवन की प्राथमिक और प्रारंभिक संस्कार क्रिया - " सेवा "🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बरस बरस कर बादल यादें क्यूँ नही मिटाते
तरस तरस कर धरती बिखर क्यूँ नही जाती
है कोई खामोशी का बंधन
जो तडप तडपते खुल नही पाते
प्रिये प्रिये पुकारता अधर
श्याम श्याम से सिसकती सांस
है उलझन जो सुलझ नही पाती
यही ही प्रेम की जलती आग है
🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺
सांझ धायी दिन रात खोये अपने में
दिल पंछी टटोले है प्रिये छूपे कहां?
नैन दौडाये नजर धरती आसमां तक
है कहीं श्याम जो झलक से नजराएं

टपक टपक बूंदे काजल विहल भरे
तरस तरस अधर थरथराते पुकारे
श्याम! हे श्याम!
तुझ बिन अब रहा नही जाय
हे प्रिये! तुझ बिन जीया नही जाय
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दुष्यंत को " माँ " से ऐसा बंधन जगने लगा जो बंधन सर्वोत्तम बंधन हो - जो साक्षर बंधन हो - जो आत्मीय बंधन हो - जो प्रेम बंधन हो - जो करुणा बंधन हो🌷🙏🌷

वह हर सुबह माँ से पहले उठने लगा - माँ को हर क्रिया में साथ देने लगा। सच! उन्हें यह क्रियाओं में इतना सुख और आनंद मिलता रहा है की पूरा दिन उनका हर एक के साथ मधुर होने लगा। उनके कहने - सुनने - करने और विचारों में विनम्रता - पारदर्शकता - विश्वास और सिद्धांत उभरने लगा। 🌷🙏🌷

शिस्त, समय सूचकता, भरोसो, योग्यता और निष्ठा से दुष्यंत उत्कृष्ट होने लगा और जिससे वह जुडा है वह भी उनसे आकर्षित होने लगे और उनकी विचारधारा और सैद्धांतिक क्रियाओं को अपनाने लगे।🌷🙏🌷

शायद मुझे लगता है आप सब दुष्यंत हो और मैं आपसे आकर्षित होने लगा हूं।🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मन मंदिर में बसो घनश्याम
मुझे तोरी प्यास लगी

मेरे नैन मंदिर में बसो राधेश्याम
मुझे तोरी तडप लगी

मेरे हृदय मंदिर में बसो श्यामाश्याम
मुझे तोरी विरहग्नि लगी

मेरे तन मंदिर में बसो मधुश्याम
मुझे तोरी लगन लगी

मेरे जीवन मंदिर में बसो सखाश्याम
मुझे तोरी मित्रता लगी

मन मंदिर में घनश्याम श्याम
नैन मंदिर में राधेश्याम श्याम
हृदय मंदिर में श्यामाश्याम श्याम
तन मंदिर में मधुश्याम श्याम
जीवन मंदिर में सखाश्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम
श्याम श्याम श्याम

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज दुष्यंत के घर कहीं महमानों इकठ्ठे हुए, दुष्यंत खुद उनकी व्यवस्था और प्रसंग अनुरूप सबको आवकार और आनंद उत्साहित कर रहा था।

इतनेमें आचार्यचरण श्री वल्लभाचार्यजी की पधरामणी का संकेत सब ने पाया और सब अपने आपको सुव्यवस्थित पा कर श्री आचार्यजी के दर्शन से कृत कृत होने शिस्त बद्ध खडे रह गये और एक जयघोष लगाई - श्री वल्लभाचार्यजी की जय!🌷

सब अपने स्थान पर बैठ गये, दुष्यंत भी अपने स्थान पर से श्रीआचार्य चरण को प्रणाम करके बैठ गया।

श्री आचार्य के मुख से प्रथम स्वर गूंजा - " जय श्री कृष्ण " हर एक की ओर नजर से नमन किया🙏

हे जिज्ञासु संस्कार सिद्धांत पिपासुओं!

हे जीवन रक्षक धर्म आचरणों!

आपको मेरा प्रणाम🙏

मैं धन्य हूं आप सब मुझे सही दिशा - सही शिक्षा और सही धर्म संस्थापना में मेरा साथ निभाते हो और जीवन मधुर करने योग्य पुरुषार्थ में चेतना रुप हो🌷🙏🌷

दुष्यंत हर अक्षर - हर शब्द - हर व्याक्य - हर स्वर धैर्य से सुनता था और चहरे पर उत्तमता के पाठ और संस्कार शिक्षा ग्रहण करता था। अपने आप से इतना डूब गया की उन्हें अनोखी अनुभूति होने लगी, वह कृत कृत हो गया।

श्रीआचार्य चरण हर व्यक्ति के पास आ कर सबको आशीर्वाद दिया और निकल गये।

दुष्यंत के कहीं जिज्ञासु प्रश्न धारा को विश्वास धारा में परिवर्तित कर के पुष्टि दीपक प्रकटाये गये🌷🌺🌷

दुष्यंत ने देखा आये हुए हर व्यक्ति के मुख पर तेज था - आनंद था - आशीर्वाद था - कृपा थी। दुष्यंत ने मन ही मन हर व्यक्तियों को प्रणाम करके अपने आपको स्थिर किया🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धैर्य से समझे

आये हुए हर एक व्यक्ति शरणागत थे

आये हुए हर एक व्यक्ति शिस्त और नम्र थे

श्रीआचार्य चरण निहंकारी थे

स्व हर व्यक्ति के पास पहुंच कर आशीर्वाद प्रदान किया

श्रीआचार्य निरपेक्ष थे - अपने हर स्वर में उत्कृष्टता - शिक्षा और संस्कार थे

यही ही श्रीआचार्य प्रवर्तक पुष्टिमार्ग की सही संस्कार सिंचता है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷



आप सभी का आभार 🙏

हर कोई स्व रास्ता दिखाये🙏

हर कोई श्री प्रभु का दर्शन करवाये🙏

हर कोई श्री गुरु प्रवचन सुनाये🙏

हर कोई श्री धाम की यात्रा करवाये🙏

हर कोई श्री संस्कार संपादने🙏

हर कोई श्री भक्तिज्ञान बहावे🙏

हर कोई श्री धर्मभाव जगाये🙏

हर कोई स्व आत्म चिंतन स्पर्शाये🙏

हर कोई स्व कला पिरोसाये🙏

हर कोई स्व पवित्रता सहाये🙏

हर कोई स्व शुद्धता दर्शाये🙏

हर कोई स्व निपूर्णता प्रकटाये🙏

हर कोई स्व भावना लुटाये🙏

हर कोई स्व श्रेष्ठता प्रदर्शनाये🙏

हर कोई पर दोष निवारणाये🙏

हर कोई पर कष्ट भंजनाये🙏

सच! आप सर्वे मेरे लिए जीवन प्रवर्तक शिक्षा प्रदान गुरु हो🌷🙏🌷

आप सर्वे को सत सत प्रणाम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दिन दिन सो जाना

दूपेर शाम सो जाना

बात बात पर थक जाना

बिन रात सो जाना

नहीं सही यह सो जाना

सो गये उनका नही मानना

मान लिया उसका खोजाना

हर कोई ने ओरों से जाना

रोगों से पडे को पालना

अयोग्यता को पास बुलाना

बहाने को घडी घडी सुनना

जीवन को यूंही मिटाना

क्या यही है हमारा जमाना?

हमें हमारा ही संभालना

सत्य यही कभी नही सोना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या नही है हमारी पास

हर विज्ञान है

हर सिद्धांत है

हर अनुभव है

हर विद्या है

हर पद्धति है

हर क्षमता है

हर विश्वास है

हर श्रद्धा है

हर संबंध है

हर पुरुषार्थ है

ओहह! तो तो मैं क्या नही कर सकता?

एक दूजे को साथ दे

एक दूजे पर विश्वास रख्खे

एक दूजे से निखालस बर्ते

एक दूजे का सहारा बने

एक दूजे से संबंध जुडे

है हिन्दुस्तान ऐसा हमारा

जो जगाये सारे रिश्ते

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आचार्य के आशीर्वचन और सैद्धांतिक शिक्षा दुष्यंत को भा गया। उन्होंने तय किया नित्य एक सूत्र पढना उसका स्व मानसिकता से अध्ययन करना, मानसीक तैयार होना और जीवन में उसे उतकृष्ट करना।

उन्होंने प्रथम सूत्र लिया - योग्य बोलना🌷

यह सूत्र का सही पठन किया और मन को स्थिर करके निश्चित किया चाहे कैसी परिस्थिति हो, चाहे काल का अनिवार्य चक्र चलता हो, कितना भी उस्केरे -

न कटु वचन बोलना - न बोलना - न बोलना🙏

अध्ययन किया -

जूठ कहेंगे
अधूरा कहेंगे
घुमा घुमा कर कहेंगे
असत्य कहेंगे
नफरत भरे कहेंगे
क्रोध में कहेंगे
अपशब्द कहेंगे
आक्रोश से कहेंगे
द्वैष से कहेंगे
वैर से कहेंगे
अविश्वास से कहेंगे
विश्वासपूर्वक जूठ कहेंगे
अपना हो कर धृष्टता करेंगे
अभद्रता करेंगे
निष्ठुरता से कहेंगे
कटु वचन कहेंगे
निःसहनिय कहेंगे
स्वार्थ से कहेंगे
रमत से कहेंगे
अज्ञानता से कहेंगे
असहिष्णुता से कहेंगे
अभाव से कहेंगे
कुभाव से कहेंगे
कपटपूर्ण कहेंगे
दंभ से कहेंगे
आडंबर से कहेंगे
सत्य को भ्रमित कर कहेंगे
सत्य उद्बबोधक - उर्जित - सैद्धांतिक शुद्धता से - विश्वास से - शांत चित्त हो कर ही बोलेंगे🙏

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

अदभुत🌷

दुष्यंत ने अपनाया और काल चक्र में स्व की तपश्चर्या में स्व अहंकार को यज्ञोआहूत करना प्रारंभ किया🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रारंभिक सूत्र - न कटु वचन बोलना

दुष्यंत ने अपनाया 🙏

दुष्यंत अपना मुस्कुराता चहरा के साथ अपने संसार में जीने लगा, वह हर किसीसे योग्यता से - निकटता से - निखालस से रहने लगा।

कहीं अनुभव, कहीं सहिष्णुता, कहीं संघर्षता, कहीं संवेदना, कहीं कृतज्ञता, कहीं करुणा, कहीं विवेकता, कहीं सजागता, कहीं उत्कृष्टता, कहीं निस्संदेहता, कहीं निस्वार्थता, कहीं मानवता, कहीं विवशता, कहीं रुक्षता, कहीं विशालता दुष्यंत ने पायी।🌷🙏🌷

दुष्यंत जब जब एकांत में बैठता था तब ऐसी कहीं अनुभवों का अभ्यास करता था और नये नये क्रियामाण का प्रयोग करता था।

जीवन का घडतर ऐसे अनुभवों से चरितार्थ करने की कोशिश कर रहा था की " जिसके लिए मनुष्य जन्म है - मनुष्य योनि है उसे सार्थक करता ही रहूं और संसार को सुसार - शुभ सार - सुयोज्य सार, समकक्ष सार करता रहूं।🌷🙏🌷

दुष्यंत हर परिस्थिति में आनंद निचोड ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

खल खल नदी नीर बह रहे थे

सररर सररर रज उड रही थी

फररर फररर वायु लहराता था

घुमड घुमड बादल गरजते थे

सिसकती शीतल बरसती बूंदें

दुष्यंत को आनंद विभोर करती प्रकृती रस उनके तनमन में उर्जा और मधुरता भरती थी। दुष्यंत का मुखडा पुलकित स्पर्श से खिल उठ रहा था।

इतने में कॉयल की कहुंक उन्हें नचाने लगी, हसता कुदता दुष्यंत आज संसार का ऐसा आनंद लुटता था जो उनके नैनों में एक ऐसी द्रष्टि जगा दि -

संसार आनंदमय है

जगत मधुर है

जीवन सुखमय है

जन्म अलौकिक है

ओहहह! अदभुत🌷

माँ का वात्सल्य🌷🙏🌷

आचार्यजी का आशीर्वाद🌷🙏🌷

प्रकृति का संरक्षण 🌷🙏🌷

उत्कृष्ट उत्कृष्ट और उत्कृष्ट

आनंद आनंद और आनंद

सच! जन्म - जीवन - जगत - संसार - ब्रह्मांड अनोखा है🌷🙏🌷

लुटते लुटते आनंद में एक जिज्ञासु विचार का उदभव हुआ🌷

इतनी मधुरता में अपेक्षा कैसे?

ओहहह! 🌷🙏🌷 अब कल........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अबिगत गति कछु कहत न आवै

ज्यौं गूँगै मीठे फल कौ रस, अंतरगत हीं भावै

परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै

मन-बानी कौं अगम अगोचर, सो जाने जो पावै

रुप रेख गुन जाति जुगति बिनु, निरालंब कित घावै

सब विधि अगम विचारहिं तातैं, सूर सगुन पद गावै

हम क्या समझते है - जीना तो हमें ही आवे

हम क्या समझते है - काम करना हमें ही आवे

हम क्या समझते है - कहना हमें ही आवे

हम क्या समझते है - समझाना हमें ही आवे

हम क्या समझते है - ज्ञान हमें ही आवे

हम क्या समझते है - हम ही करें वह सही

हम क्या समझते है - हम से ही है - हम ही है

नही नही नही और नही

तुच्छ एक मैं - तुच्छ एक तु

मन मन मनुष्य लिपटाये

कोई कछु न पाये

कोई कछु न ध्याये

मन तो ऐसा - मन तो तेसा अस्थिर कर के लपटाये

एक अकेला स्थिर मन धरे - अगम अगम रचाये

जीवन मधुर नचाये

🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन - पुष्टि – जीवन



"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" Vibrant Pushti "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com



" जय श्री कृष्ण "